तर्कशील पथ

TARKSHEEL

फरवरी 2019

अंदर पढ़े ...

20/-

अंधेरे बादलों को बिखेरने के लिए मनुष्य के दिमाग को ज्ञान से शक्तिशाली बनाने की जरूरत है...थॉमस जैफरसन

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है

कात्यायनी

हम पढ़ते हैं
अपने सामाजिक प्राणी होने के बारे में
हम होते हैं
एक
सामाजिक प्राणी।

बचा रह जाता है
बस जानना
एक सामाजिक प्राणी होने के बारे में

जैसे ही हम जान जाते हैं
एक सामाजिक प्राणी की ज़रूरतों,
कर्तव्यों और अधिकारों को
कि
असामाजिक घोषित कर दिए जाते हैं

तर्कशील पथ पत्रिका हेतु शुल्क स्टेट बैंक ऑफ इडिया, शाखा मॉडल टाऊन, अम्बाला शहर (हरियाणा) में रैशनलिस्ट सोसायटी हरियाणा के नाम से खाता सं. 30191855465 IFSC: SBIN 0002420 में जमा करा सकते है। शुल्क Paytm के माध्यम से मोबाईल नम्बर 9416036203 पर या कोड को स्कैन करके भी भेजा जा सकता है। शुल्क भेजने के बाद इसी मोबाइल नम्बर पर अपना पता SMS या WhatsApp करें।

टाईप सैटिंग और डिज़ाइनिंग:

दोआबा कम्यूनिकेशंस

मोबाईल : 92530 64969
Email: baldevmehrok@gmail.com

Reg.No.HARHIN/2014/60580

संपादक :

आर.पी. गांधी - 93154-46140

संपादक सहयोग :-

बलवन्त सिंह - 94163-24802
गुरमीत अम्बाला - 94160-36203
अनुपम राजपुरा - 94683-89373
बलबीर चन्द लौंगोवाल - 98153-17028
हेम राज स्टेनो - 98769-53561

पत्रिका शुल्क :-

द्विवार्षिक : 200/- रू.
विदेश : वार्षिक : 25 यू.एस.डॉलर

पत्रिका वितरण :

गुरमीत अम्बाला
Email: tarksheeleditor@gmail.com

रचनाएं, पत्र व्यवहार व शुल्क भेजने के लिए पताः

बलवन्त सिंह (प्रा.)
म.नं. 1062, आदर्श नगर,
नजदीक पूजा सीनियर सैकण्डरी स्कूल, पिपली।
जिला कुरूक्षेत्र - 136131 (हरियाणा)
Email: tarksheeleditor@gmail.com

तर्कशील सोसायटी की गतिविधियों से जुड़ने के लिए

www.facebook.com/tarksheelindia
पेज को लाईक करें।

पत्रिका के प्रमुख लेखों को निम्न ब्लॉग पर भी पढ़ा जा सकता है-

http://tarksheelblog.wordpress.com
पत्रिका को पढ़ने के लिए लॉग ऑन करें:
www.tarksheel.org
Tarksheel on Whatsapp : 9416036203
Tarksheel Mobile App :
Readwhere.com
Tarksheel on Twitter:
@gurmeeteditor

संकेतिका

मीटिंग की सूचना

तर्कशील सोसायटी हरियाणा की आगामी द्विवार्षिक अधिवेशन, दिनांक **17-03-2019**, दिन रविवार, करनाल में प्रातः 10.00 से 3.00 बजे तक होगी।

नोटः तिथि, स्थान व समय के बारे में सभी साथी फोन संपर्क करके सुनिश्चित कर लें।

सम्पर्क सूत्रः

*डा० परमानंद : **98137 89363***

*डा० करनैल चंद : **94161 21293***

नोट : किसी भी तरह की कानूनी कारवाई सिर्फ जगाधरी यमुनानगर (हरियाणा) की अदालत में ही हो सकेगी।

सम्पादकीय

2018 का द्वार लांघ कर हम 2019 के दरवाजे पर दस्तक दे रहे हैं। नई उम्मीदों...नये और मजबूत कदमों के साथ इसकी शुरूआत करें। बीता साल, इस में घटित अच्छी/बुरी घटनाएं, खोया/पाया चाहे इतिहास का हिस्सा बन गया है, पर चलेगा हमारे साथ ही। इतिहास हमारी अगुआई करता है.....हमें सबक सिखाता है...भविष्य की तैयारी के लिए आधार बनता है। इसका किवाड़ बंद नहीं किया जा सकता। यह हमारा शानदार इतिहास ही है..जो हमें जन विरोधी ताकतों के खिलाफ लड़ने, वैज्ञानिक सोच का प्रचार-प्रसार करने के लिए प्रेरित करता है। जहां साहित्य के क्षेत्र के अंदर उत्तर-आधुनिकतावादी इस इतिहास को एक सिरे से खारिज करने, इतिहास की मौत होने का ऐलान करते हैं, वहां मौजूदा सत्ता इस को भगवा रंग दे कर इतिहास का पहिया पीछे की ओर मोड़ना चाहती है। रूसी विद्वान रसूल हमजातोव कहता हैः 'अगर तुम इतिहास पर गोली चलाओगे, तो भविष्य तुम्हें तोप लेकर ढूंढेगा।'। बीते समय के इतिहास का मूल्यांकन करके हम आगे की ओर बढ़ना चाहते हैं। निज के ऊपर उठ कर समाज के लिए जी गई ज़िंदगी ही इतिहास के सुनहरी पन्नों का शाह-स्वार बनती है। बीते समय की गलतियां नई राहें, नई दिशाएं तय करती हैं। समय के हर दौर के अंदर अच्छे/बुरे, सही/गलत, सच/झूठ के बीच युद्ध चलता रहता है। इतिहास का निर्णय हमेशा सही और सत्य के पक्ष में ही गया है। हमारे समक्ष बड़ी चुनौतियां हैं। झूठ को सत्ता के गलियारों में प्रोत्साहन प्राप्त है। जन-विरोधी शक्तियां अफरी हुई घूम रही हैं। सच को रोज़ नये दिन धमकाया जा रहा है। यूनिवर्सिटियों के स्वतंत्र अनुसंधान कार्यो में बाधाएं लगाई जा रहीं हैं। इतिहासकारों, विज्ञानकों, चिंतकों को गोलियों से चुप कराया जा रहा हैं। इतिहास की पाठ्य-पुस्तकों से हमारे वास्तविक नायक एक-एक करके गायब किये जा रहे हैं। ये ताकतें सत्य को निगलना चाहता है। सत्य हमेशा छत पर चढ़ कर बोलता है। ब्रूनो को धरम-पोपों ने ख़त्म कर दिया, परंतु ब्रूनो जिस सत्य के लिए शहीद हुआ, वह जिंदा है...जिंदा रहेगा। शहीद भगत सिंह ने कहा था :'तुम मनुष्य को कत्ल कर सकते हो, पर उसके विचारों को नहीं'। दाभोलकर, पंसारे, कुलबुर्गी, लंकेश मरे नहीं, जिंदा हैं इतिहास के पन्नों पर...और जिंदा रहेंगे; क्योंकि उनके विचार जीवित हैं। गंभीर चुनौतियों के साथ टकराने के लिए गंभीर चिंतन हमारी अहम ज़रूरत बनता है, लोगों को सचेत करने का कार्य ही हमारी ढाल बनता है। आईए, समय की छाती पर शान से सराबोर इतिहास का सृजन करने के लिए अध्ययन, चेतना, जन-शक्ति के साथ लैस हो कर सुरख सूर्य की आगमन के लिए संघर्ष करते हुए आगे बढ़ें।

विज्ञान-धर्म
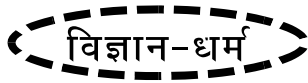
आस्था मूलक दर्शनों से विज्ञान की मुठभेड़ सतत् जारी है

-सनी

विज्ञान क्या है? आज जो इसका स्वरूप है वह इसने कैसे अख़्तियार किया? मानव अपने भौतिक उत्पादन के लिए किये गये सामाजिक व्यवहार से इन्द्रियानुगत ज्ञान प्राप्त करता है। इस इन्द्रियानुगत ज्ञान की अगणित पुनरावृत्तियों के बाद वह उसे सामान्यीकृत करता है और बुद्धिसंगत ज्ञान की मंज़िल तक पहुँचता है। यह विज्ञान की ओर उसका पहला कदम होता है। बाद में बुद्धिसंगत ज्ञान के विराट निकाय को वह विशेषीकृत करता है और ज्ञान को अलग-अलग शाखाओं में विभाजित करता है। यह विज्ञान की ओर उसका दूसरा कदम होता है। इसके बाद अलग-अलग शाखाओं में ज्ञान अपनी विषय-वस्तु के अध्ययन को व्यवहार और सिद्धान्त के अन्तहीन सिलसिले से आगे विकसित करता जाता है। और इसी प्रक्रिया में विज्ञान विकसित, विशेषीकृत और उन्नत होता जाता है। इस पूरी प्रक्रिया में मनुष्य का सामाजिक व्यवहार बेहद अहम भूमिका निभाता है। सभ्यता के उन्नत होने के साथ सामाजिक व्यवहार अनगिनत जटिल और वैविध्यपूर्ण रूप अख़्तियार करता गया है। अपने उन्नत शिखरों पर वह अपने मूल, यानी उत्पादक व्यवहार से कटा हुआ नज़र आता है। लेकिन करीबी से विश्लेषण करने पर हम पाते हैं कि आज भी ज्ञान की समस्त शाखाओं का, जिन्हें हम वाक विज्ञान कह सकते हैं, मूल उत्पादक और सामाजिक व्यवहार ही है। यह सामाजिक व्यवहार सतत् चलता रहता है तथा विज्ञान के अग्रतर विकास की ज़मीन इसके आधार पर तैयार होती रहती है। वैज्ञानिक सिद्धान्त और व्यवहार के सम्मिलन के ज़रिये नयी और बेहतर तकनीकें पैदा होती हैं जो कि वापस आकर व्यवस्थित सामाजिक व्यवहार के ज़रिये और उन्नत ज्ञान पैदा करती हैं, जो शुरुआती मंज़िल पर आँकड़ों और डेटा के रूप में होता है। विज्ञान लगातार विकासमान रहता है। विज्ञान का लगातार संचय होता है। विज्ञान धरती से लेकर ब्रह्माण्ड तक की उत्पत्ति, पत्तों के पीले होने से लेकर बिजली कौंधने तक, और भी तमाम अनुभूत, प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष, प्राकृतिक घटनाओं के कारणों की तलाश करता है और इनका बखूबी जवाब भी देता है। यह सूक्ष्म से सूक्ष्म गति से लेकर विराटतम ब्रह्माण्ड के नियमों का सूत्रीकरण करता है। विज्ञान आज जिस रूप में है, यह तार्किक रूप इसने इतिहास के लम्बे संघर्षों के बाद ही हासिल किया है।

जब से विज्ञान ने पालने से बाहर निकलकर पैरों पर चलना सीखा है, उसने भौतिकवाद को एक सही, सम्पूर्ण और तार्किक विश्वदर्शन के रूप में स्थापित किया है। प्राकृतिक विज्ञान की हर नयी खोज, हर नये सिद्धान्त ने विश्व की भौतिकवादी व्याख्या को और अधिक पुष्ट किया। जैसे-जैसे विज्ञान की दृष्टि अधिक से अधिक सूक्ष्मतम धरातलों पर उतरती गयी, वैसे-वैसे इहलोक का क्षेत्रफल बढ़ता गया और परलोक का क्षेत्रफल घटता गया। यही कारण था कि विज्ञान की हर अग्रवर्ती छलाँग ने धार्मिक और रहस्यवादी दर्शनों में असुविधा की लहर का संचार किया। यही कारण था कि हर जगह धार्मिक संस्थाओं और दार्शनिकों ने विज्ञान और वैज्ञानिकों के दमन का प्रयास किया। ख़ासतौर पर, यह प्रक्रिया पुनर्जागरण काल के बाद शुरू हुआ, जब विज्ञान ने अपना आज का आधुनिक रूप ग्रहण

करना शुरू किया था। यूरोप में, जहाँ विज्ञान ने अपनी आधुनिक संरचना पायी, इसका पुनर्जागरण काल से ही ख़ासा विरोध हुआ। चलिये एक नज़र इस पर भी दौड़ा लेते हैं कि आख़िर ये दार्शनिक किस तरह विज्ञान का विरोध करते थे, जो कि आज भी जारी है। उसके लिए पहले हमें यह जानना होगा कि ये आस्थावादी विचारक कैसे इस विश्व तथा उसमें रहने वाले लोगों के जीवन की परिस्थितियों की व्याख्या करते हैं। इसके बाद ही हम यह समझ सकते हैं कि आख़िर क्यों यह विज्ञान का विरोध करते हैं।

हिन्दू धर्म के अनुसार इस सृष्टि का रचयिता ईश्वर है, ब्रह्मा है। उसने ही इस जगत की रचना की है। उसी की इच्छा के चलते स्वर्ग-नरक, ग्रह-नक्षत्र और तमाम जीव-जन्तु, पेड़-पौधे अस्तित्व में आये। इनकी भाषा में कहें तो 'सब प्रभु की माया है'। चाँद को राहू और केतू निगल लेते हैं। नाना प्रकार के देवी-देवताओं की आराधना से सुख-समृद्धि का विस्तार होता है। आजकल आम घरों में धार्मिक अनुष्ठानों में अधिकांशतः लक्ष्मी और गणेश की पूजा की जाती है। इस धरती पर हमारे कर्म ही हमारे भाग्य को सुनिश्चित करते हैं। किसी को अच्छे कर्मों के लिए स्वर्ग मिलता है, तो किसी को बुरे कर्मों के लिए नर्क, तो कोई 84 लाख योनियों के फेर में फँस जाता है। दूसरी तरफ एकेश्वरवादी ईसाई,यहूदी और मुस्लिम, तीनों धर्म सृष्टि &jpuk&fl ¼kn (creationism) को मानते हैं। इसके अनुसार ईश्वर ने ही मनुष्य को बनाया। पहले उसने आदम को बनाया फिर हव्वा को आदम की हड्डी से बनाया। तमाम जीव-जन्तुओं की रचना उस ईश्वर ने मनुष्य के लिए की। यहाँ दी गयी ये व्याख्याएँ अधूरी हो सकती हैं या किसी व्यक्ति को ग़लत भी लग सकती हैं। दरअसल ये व्याख्याएँ समाज की प्रगति के साथ बदलती रही हैं और जब भी इन पर सवाल खड़े होते हैं तो इनका रूप बदल जाता है। यूरोप में तो ख़ासकर हर बड़ी वैज्ञानिक खोज के साथ इनकी साख दाँव पर लगी रहती है और ये अपने को बचाये रखने के लिए या तो नया रूप हासिल करती हैं या उस खोज को अपने में समाहित करने का प्रयास करती है। पर जब यह नामुमकिन हो जाता है, तो ये सारी खोजें इनके लिए बचकानी हो जाती हैं और फिर सवाल तर्क का नहीं पवित्रता और आस्था का बन जाता है और आस्था के सामने विज्ञान की क्या बिसात!!

आस्था की जड़ें मुख्यतया अज्ञानता में समायी होती हैं। गहराई से विश्लेषण करें तो हम पायेंगे कि अज्ञानता की जड़ें शोषण में होती हैं, और शोषण के कारण सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था से जुड़े होते हैं। यही कारण है कि व्यवस्था पोषित करती है तमाम उन दर्शनों को जो मौजूदा निज़ाम को पवित्र बनाते हैं। हर प्रगतिशील विचार को पुराने पड़ चुके दर्शन या तो अपने अनुसार समायोजित कर लेते हैं या नकार देते हैं। यह संघर्ष हमारे पूरे मानव इतिहास में प्रवाहमान रहा है। विज्ञान के क्षेत्र में भी यही इतिहास रहा है। जब कोपरनिकस ने मौजूदा खगोलीय आँकड़ों के तार्किक अध्ययन से ब्रह्माण्ड का केन्द्र धरती से हटाकर सूर्य को बताया और चर्च के सिद्धान्त पर प्रहार किया तो उन्हें इस गुस्ताख़ी के लिए सज़ा-ए-मौत दी गयी। पर विज्ञान की अग्रवर्ती इससे रुकी नहीं। जब ब्रूनो ने कोपरनिकस के अनन्त ब्रह्माण्ड के केन्द्र को सूर्य से हटाकर यह बताया की सूर्य ब्रह्माण्ड के अनेक सितारों में से एक है तथा चर्च की ख़िलाफत की तो उन्हें इसके लिए ज़िन्दा जला दिया गया। गैलिलियो, सेर्वियूतस और इनके जैसे तमाम लोगों ने अपनी जान गँवा कर या यातनाएँ झेलकर विज्ञान को ज़िन्दा रखा और ईश्वरपरक सिद्धान्त को विज्ञान से अलग किया। विज्ञान के क्षेत्र में दर्शनों का यह संघर्ष वास्तव में समाज में मौजूद संघर्ष का ही प्रतिबिम्ब था। विज्ञान के क्षेत्र में हो रहे दर्शनों के टकराव का पूरा इतिहास तो विराट है और उसकी यहाँ विवेचना सम्भव नहीं है। हमारा मकसद यहाँ उन महत्त्वपूर्ण अग्रवर्ती छलाँगों को देखना है जिसने विज्ञान की अतार्किक आस्था पर वरीयता को स्थापित करने का काम किया और विश्व की भौतिकवादी व्याख्या की प्रमाण-सिद्धि को सशक्त और सुदृढ़ बनाया।

न्यूटन का 'पहला आवेग'

पुनर्जागरण के उथल-पुथल भरे दौर, सन् 1543 में मौजूदा खगोली आँकड़ों का तार्किक विश्लेषण करके कोपरनिकस ने यह बतलाया कि दरअसल धरती सूर्य का चक्कर काटती है न कि धरती का सूरज। यही समय था आधुनिक विज्ञान की उत्पत्ति का। भौतिकवादी दर्शन के उद्भव का। विज्ञान को यहाँ से आगे तथा उच्चस्तर पर ले जाने का काम न्यूटन ने किया। न्यूटन विज्ञान के महान शिक्षकों में से एक हैं। उन्होंने ही सार्वत्रिक गुरुत्व का सिद्धान्त दिया तथा गति के तीन नियम दियेः उस समय के मौजूदा भौतिक आँकड़ों का विश्लेषण कर उन्हें नियमबद्ध किया। उन्होंने संसार में भौतिक तत्वों की गति के नियम दिये। न्यूटन ब्रह्माण्ड को एक ऐसी घड़ी के मानिन्द मानते थे जो एक बार शुरू करने पर हमेशा अपनी गति से चलती रहती है और इस गति के नियमों का ही प्रतिपादन न्यूटन ने किया। न्यूटन के अनुसार यह सृष्टि एक ऐसी मशीन थी जिसे शुरू करने के लिए भगवान के लौकिक आवेग की ज़रूरत थी। न्यूटन ने इस सिद्धान्त से धरती की परिधि को नियमबद्ध किया। न्यूटन के सिद्धान्त यह समझाते थे कि धरती सूर्य के चारों ओर चक्कर किस प्रकार काटती है तथा उसकी गति की परिधि का विश्लेषण कैसे किया जाये, लेकिन न्यूटन के पहले नियम के अनुसार धरती को उस गति को हासिल करने के लिए पहले आवेग की ज़रूरत थी, जिसके बाद वह उस गति से सूर्य के गुरुत्व में उसके चारों ओर घूमने लगती। इस आवेग को न्यूटन ने भगवान द्वारा दिये गये "पहले आवेग" में ढूँढ़ा। इस समय भौतिकवादी दर्शन यान्त्रिक था। न्यूटन का भौतिकवाद भी एक यान्त्रिक भौतिकवाद था। न्यूटन द्वारा रखी गयी ईश्वरपरक व्याख्या का खण्डन उस समय नहीं किया जा सका। इसका खण्डन काण्ट ने किया। काण्ट ने बताया कि पूरा सौरमण्डल एक नेब्यूला से बना था, जो कि अपने आन्तरिक विकर्षण के चलते ग्रहों में विभाजित हुआ। इस प्रकार धरती, सूर्य और अन्य ग्रहों की उत्पत्ति हुई। भगवान के आवेग की कोई ज़रूरत नहीं थी। काण्ट की इस व्याख्या को लाप्लास ने 1796 में सिद्ध किया। काण्ट ने यह भी बताया कि प्रकृति कोई 'क्लोज़्ड सिस्टम' नहीं है जैसा कि न्यूटन ने सोचा था। यह सतत् अस्तित्व में आने और नष्ट होने की प्रक्रिया है।

लेकिन अभी भी विज्ञान के क्षेत्र में चल रहे संघर्ष में भौतिकवाद एक सुसंगत रूप में प्रकट नहीं हो पाया था। यह प्रक्रिया उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में जाकर एक मुकाम पर पहुँची, जब मार्क्स और एंगेल्स ने हेगेल के भाववादी द्वन्द्ववाद और फ़ायरबाख़ के यान्त्रिक भौतिकवाद के वैज्ञानिक संश्लेषण से द्वन्द्वात्मक और ऐतिहासिक द्वन्द्ववाद के सिद्धान्तों का निरूपण किया। इसके बाद हुई वैज्ञानिक खोजों ने हर बार इन सिद्धान्तों की पुष्टि की। बीसवीं सदी में हुए वैज्ञानिक विकास ने, विशेष रूप से सापेक्षिकता सिद्धान्त और क्वाण्टम यान्त्रिकी ने, द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद के सिद्धान्तों को न सिर्फ पुष्ट किया, बल्कि उनके अग्रवर्ती विकास की सम्भावनाओं की ओर भी इशारा किया है। लेकिन इन पर चर्चा कर पाना यहाँ सम्भव नहीं है और आगे के अंकों में हम इन पर भी लिखेंगे। फ़िलहाल, विज्ञान और आस्था के संघर्ष में हम अगले मील के पत्थर पर आते हैं।

हेल्महोल्ट्ज़ का "उष्मीय-अन्त"

सन् 1852 में एक लेक्चर में हेल्महोल्ट्ज़ नामक वैज्ञानिक ने ऊर्जा के संरक्षण के नियम तथा कारनोट के इंजन की व्याख्या द्वारा बढ़ती एण्ट्रोपी के नियम को समावेशित करके यह निष्कर्ष निकाला कि यह ब्रह्माण्ड धीरे-धीरे 'उष्मीय-अन्त' (थर्मल डेथ) की तरफ बढ़ रहा है। (ये दोनों नियम बाद में ऊष्मागतिकी के पहले और दूसरे नियम के नाम से जाने गये)। एण्ट्रोपी एक परिमाणात्मक मात्रक है जो रैण्डमनेस (randomness) या अस्त-व्यस्तता को मापती है। यह ब्रह्माण्ड में ऊर्जा के रूपान्तरों से हमेशा बढ़ती रहती है। ऊष्मागतिकी में यह ताप और ऊष्मा पर निर्भर करती है। ब्रह्माण्ड के किसी भी पृथक हिस्से में बढ़ती एण्ट्रोपी का मतलब यह कि वह ऊर्जा के बराबर वितरण की तरफ बढ़ता है। जब ऊर्जा का वितरण बराबर हो जायेगा, वह

उष्मीय सन्तुलन पर आ जायेगा। ऐसे हिस्से में अब कोई ऊर्जा का रूपान्तरण नहीं होगा। वह गतिहीन हो जायेगा। यही अनुरूपता जब हम पूरे ब्रह्माण्ड को पृथक मानकर लागू करते हैं तो ब्रह्माण्ड के गतिहीन होने के परिणाम तक पहुँचते हैं यानी उसका उष्मीय-अन्त हो जायेगा। इस सिद्धान्त को धार्मिक संस्थाओं ने तुरन्त यह कहकर प्रचारित किया कि चूँकि इस दुनिया का अन्त होगा तो इसकी उत्पत्ति भी की गयी है। तथैव उस महान रचयिता के द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को पूरा करने के लिए यह सब हो रहा है। इस ग़ैर-भौतिकवादी सोच के बीज भी ग़ैर-भौतिकवादी दर्शन की ज़मीन से पोषित होकर अभिव्यक्ति पाते हैं। आज विज्ञान के ज़रिये हमें पता है कि हर सन्तुलन अस्थायी तथा सापेक्षिक होता है। पूरा ब्रह्माण्ड गतिमान है और सतत् विकास कर रहा है। हर गति में सन्तुलन होता है और हर सन्तुलन में सापेक्षिक गति। एंगेल्स के शब्दों में कहें तो 'किसी वस्तु में सापेक्षिक गतिहीनता की सम्भावना, और अस्थायी सन्तुलन की सम्भावना ही पदार्थ और जीवन के अस्तित्व की अनिवार्य स्थिति है।' (प्रकृति का द्वन्दवाद' हमारा सम्पूर्ण जीवन भी ख़ुद रुकाव और गति के अन्तर्विरोधों में गुँथा होता है। किसी भी प्रक्रिया को उसके दिक् और काल से अलग काटकर देखना अधिभौतिकवादी दर्शन है। हेल्महोल्ट्ज़ की इस व्याख्या को आज नकारा जा चुका है। प्रीगोझीन के असन्तुलन के सिद्धान्त ने उपरोक्त व्याख्या को वैज्ञानिक धरातल पर नकार दिया है। जैसे ही हम हेल्महोल्ट्ज़ के यान्त्रिक संसार के अलग-अलग हिस्सों में गुरुत्व और अन्य बलों को लाते हैं तथा इन पृथक हिस्सों को जोड़ते हैं तो "उष्मीय-अन्त" का अन्त हो जाता है। आज यह साबित हो चुका है कि एण्ट्रोपी एक सांख्यिकी मात्रक है जो इस तरह परिभाषित ही होती है कि वह ब्रह्माण्ड के आन्तरिक बदलावों के साथ बढ़ती रहती है। यह किसी प्रक्रिया में बदलाव के सारे मापदण्डों पर विमर्श नहीं करती। ब्रह्माण्ड में कभी भी पूरी तरह सन्तुलन नहीं आ सकता। यह ख़ुद लगातार बदल रहा है और इसमें सन्तुलन व असन्तुलन की शक्तियों में सतत् द्वन्द्व जारी है।

कितना इण्टेलिजेण्ट है इण्टेलिजेण्ट डिज़ाइन ?

1859 में डार्विन द्वारा दिये गये विकास के सिद्धान्त ने यह साबित कर दिया कि मानव की उत्पत्ति हज़ारों सालों के उद्भव और विकास से हुई है। जीवन की शुरुआत जटिल प्रोटीन द्वारा संचालित उन जटिल संरचनाओं से हुआ, जिन्हें हम जीवाणु कहते हैं। ये लाखों सालों पहले धरती पर पड़ने वाली सूर्य की पराबैंगनी किरणों की ऊर्जा का भण्डारण कर सकते थे। इन जीवाणुओं के उद्भव और विकास की लम्बी प्रक्रिया ने सम्पूर्ण जैविक जगत, ख़ुद मनुष्य का भी सृजन किया। उद्भव और विकास की प्रक्रिया प्राकृतिक चयन द्वारा वातावरण के अनियमित और सशर्त विकास के अनुरूप ही जीन का चुनाव करती है। डार्विन के इस सिद्धान्त के कारण ही विज्ञान की एक अलग शाखा "जेनेटिक्स" का उद्भव हुआ, जिसने मानवीय उद्भव और विकास का पूर्ण निरूपण किया। इस सिद्धान्त ने चर्च और दूसरे धर्मों के "सृष्टि-रचना-सिद्धान्त" का पूर्ण रूप से खण्डन कर दिया। ईश्वर ने न तो इंसान को बनाया है, न जानवरों और पेड़ पौधों को। वे तो लम्बी उद्भव और विकास की प्रक्रिया से अस्तित्व में आये। मानव ने अपने विकासक्रम के बारे में अपूर्ण तथ्यों के चलते परिकल्पना के संयोजन से भगवान की रचना की। इस सिद्धान्त का उल्लेख मार्क्स-एंगेल्स ने अपने लेखों में अक्सर किया है। ख़ुद 2009 में इंग्लैण्ड के चर्च ने अपने पूर्वजों द्वारा किये गये व्यवहार के लिए डार्विन से माफ़ी माँगी थी। पर इस सबके बावजूद एक नयी ईश्वरपरक धारणा ''इण्टेलिजेण्ट डिज़ाइन" डार्विन के सिद्धान्त को नकारती है। इसके प्रचारक, जिसमें वैज्ञानिक भी शामिल हैं, तर्क देते हैं कि कुछ प्राकृतिक संरचनाएँ इतनी जटिल हैं कि उन्हें कोई उच्चतम प्राणी ही बना सकता है। यह तर्क डार्विन के समकालीन प्रतिद्वन्द्वी विलियम पाली का ही है, जो कहते थे कि इतना जटिल डिजाइन सिर्फ भगवान के द्वारा ही बनाया जा सकता है। ऐसे लोगों की जगह वापस

प्राथमिक पाठशाला है जहाँ उन्हें यह समझाया जाये कि नर्सरी क्लास के बच्चे उच्चतर गणित के समाकलन को नहीं समझ सकते। इण्टेलिजेण्ट डिज़ाइन के समर्थकों द्वारा दिये गये "तर्क" पूरी तरह से खोखले साबित हुए हैं और ख़ारिज़ हो चुके हैं। ऐसे तमाम विचार आज भी पनप रहे हैं जिन्हें पालने-पोसने का काम तमाम संस्थाएँ कर रही हैं। बताने की ज़रूरत नहीं कि ये सारी संस्थाएँ धार्मिक हैं, व्यवस्था-पोषित हैं। ऐसे में एक ज़रूरी सवाल दिमाग़ में उठना लाज़िमी है। जब विज्ञान ने भौतिकवादी दर्शन को इतना पुष्ट किया है, गहरा किया है, विस्तार किया है तो फिर तमाम तर्कहीन व्याख्याएँ विज्ञान से लेकर हर ज्ञान-क्षेत्र में आज भी मौजूद क्यों हैं? आख़िर इसके पीछे कारण क्या है? कैसे तमाम दर्शन मानव मस्तिष्क पर अपना असर छोड़ते हैं? क्या तमाम सोच और इच्छाएँ सिर्फ व्यक्तिगत होती हैं? इस सवाल को अगर अपने समाज से जोड़कर देखा जाये तो यह सवाल और भी साफ हो जाता है। क्यों तमाम इंसानों द्वारा आज़ादी, बराबरी और न्याय की इच्छा प्रकट करने के बावजूद समाज में ध्रुवीकरण मौजूद है? अन्याय, झूठ और अँधेरगर्दी हर तरफ फैली हुआ है?

इसका कारण सामाजिक और ऐतिहासिक है। हम एक वर्ग समाज में जी रहे हैं। वर्ग समाज की आर्थिक व्यवस्था की बुनियाद असमानता होती है। इस समाज में एक वर्ग जनसंख्या का एक छोटा-सा हिस्सा होने और किसी भी प्रकार की उत्पादक गतिविधि का अंग न होने के बावजूद अधिकांश संसाधनों पर नियन्त्रण रखता है और शासन-सूत्र भी उसके प्रतिनिधियों के हाथ में होता है, जबकि दूसरा वर्ग जनसंख्या का बहुसंख्यक होने और जीवन के लिए ज़रूरी सभी शर्तों को पैदा करने के बावजूद अपनी ही नियति के नियन्त्रण से वंचित होता है और पूरी तरह सम्पत्तिधारी वर्गों के वर्चस्व के अधीन होता है। शासक वर्ग इस स्थिति को बनाये रखने के लिए अगर महज़ अपनी राज्यसत्ता द्वारा बल-प्रयोग का रास्ता अपनायेंगे तो निश्चित रूप से यह बहुत लम्बे समय तक नहीं चल सकेगा। यही कारण है कि शासक वर्ग अपनी शिक्षा, संस्कृति, मीडिया और संस्थाओं द्वारा शासित वर्ग के मस्तिष्क में यथास्थितिवाद, भाग्यवाद, अतार्किकता, कूपमण्डूकता, निराशा और निर्भरता पैदा करता है। धर्म ऐसी ही एक संस्था के रूप में शोषित-उत्पीड़ित आबादी को नियतिवादी बनाता है, उसके दुखों-तकलीफ़ों के लिए उसे ज़िम्मेदार ठहराता है, समाधान के लिए आसमान की ओर देखना सिखाता है और इहलोक में ही उसके समक्ष मौजूद शत्रु से उसका ध्यान हटाता है। पूरे समाज में शासक वर्गों का वर्चस्व कायम रहे इसलिए विज्ञान, संस्कृति, कला, इतिहास आदि ज्ञान के सभी क्षेत्रों में अतार्किक, अनैतिहासिक और शासक वर्ग की सेवा करने वाले विचारों को घुसाया और स्थापित किया जाता है। यही कारण है कि विज्ञान की अपनी स्वायत्त गति और उसके द्वारा होने वाली खोजें हर-हमेशा द्वन्द्वात्मक भौतिकवादी जीवन दृष्टि को पुष्ट करती हैं, लेकिन शासक वर्ग के दर्शन इसे हमेशा विकृत करने, इसे तोड़ने-मरोड़ने और अपने हितों और सिद्धान्तों के अनुरूप व्याख्यायित करने का प्रयास करते रहते हैं। यही कारण है कि आज विज्ञान का विकास कदम-कदम पर शासक वर्गों की साज़िशों और षड्यन्त्रों के कारण अवरुद्ध हो रहा है। आज विज्ञान एक संकट का शिकार है। इस संकट से उसे मुक्ति तभी मिल सकती है जब उसके विकास के पैरों में पड़ी बेड़ियों को तोड़ फेंका जाये। विज्ञान और आस्था के बीच के टकराव में विज्ञान आज तक विजयी रहा है और उसने आस्था के प्रभाव-क्षेत्र को संकुचित करने का काम किया है। मौजूदा अवैज्ञानिक पूँजीवादी व्यवस्था कूपमण्डूकता और अतार्किकता फैलाने के अपने प्रयासों के ज़रिये नये सिरे से मूर्खतापूर्ण आस्थाओं को जन्म दे रही है। विज्ञान को इन नयी कूपमण्डूकताओं पर विजय पानी होगी और इसके लिए सिर्फ कुछ वैज्ञानिक प्रतिभाओं की आवश्यकता नहीं है, बल्कि सामाजिक-आर्थिक बदलाव की भी आवश्यकता है।

✶ ✶ ✶

स्यूडोसाईस अर्थात छद्मविज्ञान

डा.नरेंद्र दाभोलकर

'स्यूडोसाईस' के लिए छद्मविज्ञान शब्द का प्रयोग किया जाता है। लेकिन इस शब्द में 'स्यूडो' षब्द में प्रतिबिंबित भ्रामकता का पता नहीं चलता। स्यूडोसाईस के लिए 'फरेबी विज्ञान अथवा 'भ्रामक विज्ञान' शब्द का प्रयोग हो कसता है। 'स्यूडो' शब्द मूलत' ग्रीक भाषा का है जिसका अर्थ असत्य अथवा ढौंग। अंग्रेजी में इसका अर्थ है-जो मूलभूत सत्य नहीं है वह अथवा सच्चाई की नकल उतारने वाला अथवा 'सत्यका अभ्यास' मात्र करने वाला। वर्तमान पीढ़ी इसे 'बकवास' समझती है।

विज्ञान मनुष्य की यथार्थ और व्यावहारिक दृष्टिकोण प्रदान करता है। उसे कार्य-कारण भाव सिखाता है। मंत्र, तंत्र, यज्ञ, अंधविश्वास जैसी करतूतों की दादागीरी विज्ञान की रोशनी में भीगी बिल्ली बन जाती है। विज्ञान नामक बला को टालने के लिए उसके विरोधियों ने एक षडयंत्र रचा-उल्लेखित और अन्य ऐसी ही करतूतों को विज्ञान की शब्दावली में साबित करने का षड्यंत्र ! इस धोखाधड़ी से बचने के लिए विज्ञान को समझना जरूरी है। इसके कुछ महत्त्वपूर्ण मुद्दे निम्नलिखित हैंः

1. जिसका निरीक्षण प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से किया जा सकता है। जिसका मूल्यांकन किया जा सकता है, जिसकी जांच-पड़ताल प्रयोग द्वारा की जा सकती है, ऐसी बातों पर विज्ञान गौर करता है और इस संदर्भ में इसे असाधारण महत्त्व भी प्राप्त है। यही कारण है कि सभी स्यूडोसाईस वाले 'यह भी हमारा विज्ञान है' जैसी रट लगाए हुए हैं।

2. वैज्ञानिक अनुसंधान में यह बात मानी जाती है कि 'विश्व अनुशासन है।' विश्व का निर्माण अनुशासन से हुआ है और उसके अंत तक यह लागू रहेगा। गुरुत्वीय बल का नियम हर युग में वही रहेगा। आज अलग और कल अलग, ऐसा परिवर्तन उसमें नहीं होता। ऐसा परिवर्तन 'स्यूडोसाईस' में जरूर रहता है।

3. विज्ञान में निर्धारित तत्त्व निश्चित शब्दों में बयान किए जाते हैं। विज्ञान अस्पष्ट भाषा में नहीं बोलता।

4. विज्ञान के तत्त्व अल्पकाल के लिए तात्कालिक होते हैं। अपने पूर्वघोषित तत्त्व से अधिक पूरक, स्पष्ट और प्रामाणिक तथ्य मिलने पर विज्ञान व्यर्थ उन्हें खारिज कर देता है। अपनी गलती वह तत्काल मान लेता है।

5. वैज्ञानिक दृष्टिकोण के आधार पर जो पूर्वानुसार साबित होता है, विज्ञान की प्रत्येक कसौटी पर जब वह खरा उतरता है, तभी वह विज्ञान माना जाता है वरना स्यूडोसाईस कहलाता है।

इंटरनेट के संकेत स्थल पर 100 से भी अधिक स्यूडोसाईस के नामों की सूची दी गई है। ॲक्यूपंक्चर, फलित ज्योतिष, मैग्नेटोथेरैपी, वस्तुशास्त्र आदि नामों को हम जानते हैं तथा कुछ अनजाने नाम भी मिलते हैं, जो अधिक चर्चित नहीं हैं। लोगों को उल्लू बनाने वाले ऐसे काम विज्ञान के नाम पर बिना दिक्कत केवल हमारे देश में ही नहीं हैं बल्कि पाश्चात्य देशों में भी जारी हैं। जापान जैसा देश भी इससे अछूता नहीं है। अमेरिकन नेशनल साईस फाउंडेशन का 2002 का प्रतिवेदन यह बताता है कि अंतरिक्ष में देखी गई उड़न-तश्तरियों की खबर को 30 प्रतिशत अमेरिकी सच मानते हैं। भविष्यवाणी को 40 प्रतिशत लोग शास्त्र मानते हैं, 60 प्रतिशत लोगों को परामानसशास्त्र में तथ्य नज़र आता है और 70 प्रतिशत अमेरिकी चुंबकी अनुसंधान को वैज्ञानिक मानते हैं।

स्यूडोसाईस की पहचान जानने के कुछ लक्षण होते हैं, कुछ संकेत होते हैं, जिन पर ध्यान देना होगा। तभी 'यह सूर्य और यह जयद्रथ' की परख आप कर सकते हैं। इस संदर्भ में निम्नलिखित महत्त्वपूर्ण मुद्दों पर विचार किया जा सकता है।

1. स्यूडोसाईंस के अधार पर अपने अनुसंधान को साबित करने वाले व्यक्ति अपना निष्कर्ष किसी मानक पत्रिका में प्रकाशित करने के बजाय अन्य जनसंचार माध्यमों से पहले संपर्क करते हैं।
2. इन तथाकथित वैज्ञानिकों का यह भी दावा होता है कि वर्तमान व्यवस्था उनके अनुसंधान को दबा रही है।
3. अनुसंसधान के साक्ष्य, फोटों, नमूने और प्रयोगों के निष्कर्ष सब कुछ अस्पष्ट भाषा में दिए जाते हैं।
4. अनुसंधान की जानकारी सांख्यिकी भाषा में नहीं बल्कि कहानी के समान, काव्यमय भाषा में दी जाती है। महाराष्ट्र का एक मशहूर उदाहरण देना यहां प्रासंगिक है जहा एक डॉक्टर महोदय सूक्ष्म शरीर धारण कर मंगल ग्रह पर सैर कर वापस लौटने का दावा करते हैं। यह एक कहानी-सी लगती है।
5. स्यूडोसाईंस अधिकतर पौराणिक संदर्भों पर आधारित होता है। इसीलिए विगत कई सदियों से लोग इस शास्त्र काउपयोग करते आ रहे हैं। युगों से सुनी-सुनाई कथाओं को जांचने की आवश्यकता जिन अनुसंधानकर्ताओं को नहीं लगती, उनसे होशियार रहना जरूरी है।
6. ऐसे लोग जीवन में अकेलेपन को अपनाते हैं।
7. ये लोग स्वयं के अनुसंधान को जांचने के लिए नए नियम एवं नए परिमाणों की मांग करते हैं। सच्चा वैज्ञानिक ऐसी कोई जिद नहीं करता।

स्यूडोसाईंस अपनी सिफारिश तीन पद्धतियों से करता है। -एक, धार्मिक ढकोसलों को विज्ञान का मुलम्मादेने का प्रयास किया जाता है। दो, छद्म वैज्ञानिक चीजों और तरीकों को सफल व्यासवसायिक रूपांतरण करने का प्रयास किया जाता है और तीन, परामानसशास्त्र जैसे मामलों को आदर-सम्मान देकर उनकी मान्यता प्राप्त करने का प्रयास किया जाता है। कुछ उदाहरण और विवेचन द्वारा इस बात को स्पष्ट किया जा सकता है। यज्ञ का कर्मकांड एक ऐसा ढकोसला है, जो जीवन के लिए उपयोगी वस्तुओं को व्यर्थ ही नष्ट कर देता हैं उसमें बहुमूल्य समय भी बरबाद होता हैं इस कर्मकांड को 'अग्निहोत्र' जैसा सुंदर नाम दिया गया है। 'इससे वातावरण प्रदूषणमुक्त होता है', ऐसा निराधार दावा भी किया जाता है। अग्निहोत्र छोटे रूप में एक ज्वलनक्रिया ही है। किसी भी ज्वलनक्रिया आस-पास के वातावरण की प्राणवायु का उपयोग किया जाता है, जिससे हवा दूषित होती है। यह एक वैज्ञानिक सत्य है। अग्निहोत्र के समर्थक इससे इनकार करते हैं। अग्निहोत्र के धुएं से हानिकारक जंतुओं को मारने की कौन सी दवा है? ऐसा प्रश्न पूछने को वे अपने पवित्र कार्य का अपमान मानते हैं। आजकल बाजार में धार्मिक किताबों की बाढ़-सी आई है। अधिकांश किताबों में परंपरागत विचारधारा को टाल दिया गया है क्योंकि लेखकों ने बदलते जमाने की बदलती हवा को सूंघ लिया है। यही कारण है कि गायत्रीमंत्र, मूर्ति अथवा मंदिर की परिक्रमा, रुद्राक्ष, गंगाजल आदि को विज्ञान का आवरण चढ़ाने का प्रयास होता है। श्रद्धा के रूप में अगर कोई गायत्रीमंत्र का जाप करता है, तो वह उसका वयक्तिगत मामला है। लेकिन दावा तो ऐसा भी किया जाता है कि गायत्रीमंत्र का उच्चारण के साथ ही मनुष्य के शरीर में कुछ विशेष सूक्ष्मतरंगें निर्मित होती हैं जिनसे शरीर में रुधिर-परिसंचार 'सक्रिय' हो जाता है। इससे मनुष्य को 'एकस्ट्रा-एनर्जी' मिलती है। शरीर का पूरा तंत्र सुपर इलेक्ट्रिक मूर्ति की परिक्रमा के समय उसका महत्त्व वैज्ञानिक पद्धति से बताया जाता है कि मूर्ति में देवता होता है। वह तेजोमय होता है। उस तेज की परिधि में ही मूर्ति होती है। उसके भ्रमण का मार्ग उसकी दाहिनी से बाईं ओर चक्राकार होता है। भक्त अगर इस मार्ग से परिक्रमा करें तो उस तेजोमय परिधि के दिव्यकण उसक शरीर से चिपक जाते हैं और उनका शरीर तथ मन भी शुद्ध हो जाता है। किसी भस्म, रुद्राक्ष की माला तथा अभिषिक्त जल आदि से भी ऐसी ही सत्वगुणी तरंगें निकलने का दावा किया जाता है। ऐसा बताकर इन चीजों को कथित पवित्रता को लोगों के पल्ले बांध दिया जाता है। इस स्पष्टीकरण के वैज्ञानिक होने का दावा भी किया जाता है। अपने व्यवसाय को मजबूत करने के लिए स्यूडोसाइंस को ही दांव पर लगाया जाता है। इसका एक उदाहरण 'मैग्नेटोथेरॉपी' हैं इसका दावा यह है कि हमारे खून में हिमोग्लोबिन होता है। यह सच है) जिसमें लौह का अंश होता है। (यह भी एक

सत्य है)। चुंबक लौह को आकर्षित करता है। (बिल्कुल ठीक) इसीलिए चुंबक के उपयोग से व्यक्ति का रुधिर-परिसंचार सुधर जाता है। मैग्नेटोथेरैपी की यह संकल्पना झूठी इसलिए है क्योंकि खून में मौजूद हिमोग्लोबिन में जो धनभारित लौह होता है, उसे चुंबक आकर्षित नहीं करता । इस प्रकार विज्ञान की भाषा में अवैज्ञानिक मामलों को लोगों के पल्ले बांधने की यह कोशिश स्यूडोसाइंस में ही देखी जाती है।

परमानसशास्त्र को भी छद्म विज्ञान ही कहना चाहिए। इस विषय से संबंधित विद्वानों का कहना है कि कुछ असामान्य मानसिक शक्तियों की सहायता से ज्ञात विज्ञान के नियमों से परे उनको तोड़ने वाली कुछ घटनाएं घटित हो सकती हैं। प्रत्येक संस्कृति में इन मामलों को धर्म अथवा रहस्यात्मक विद्याओं से जोड़ा गया है। उन्नीसवीं सदी में सर्वप्रथम इस बात पर गौर किया गया। सन् 1862 में इंग्लैंड में ऐसी घटनाओं का अध्ययन करने के लिए 'सोसायटी फॉर सायकिल रिसर्च' नामक संस्था की स्थापना की गई। अन्य देशों में भी ऐसी संस्थाएं स्थपित हुईं। सन् 1887 में 'अमेरिकन सोसायटी फॉर साईंटिफिकल रिसर्च' की स्थापना की गई। कुछ जाने-माने वैज्ञानिक इसमें अनुसंधान के लिए सक्रिय हो गए। कुछ संस्थाओं के आग्रह पर कुछ विश्वविद्यालयों ने इन घटनाओं को प्रायोगिक जांच-पड़ताल की। इस सशक्ति के चार प्रकार माने गए हैं- 1. टेलिपैथी (Telelpathy) 2. क्लेअरवांस (Clairvoyance) 3. प्रीकॉग्निशन (Pricognition) 4. सायकोकायनेसिस (Psychkinesis)। इन शक्तियों के समर्थक इनका स्वरूप इस प्रकार बताते हैं:

टेलीपैथी का अर्थ हे, बिना किसी दूरसंचार व्यवस्था के दूसरों के मन के विचार जानने की शक्ति।

क्लेअरवायंस घट चुकी किसी घटना का इंद्रियजनित ज्ञान नहीं होने के बावजूद विशेष मनःशक्ति से उसको जान लेना है। जैसे कोई चोरी हो जाती है जिसका पता क्लेअरवायंस के ज्ञाता को नहीं होता । लेकिन वह अपनी विशेष शक्ति की सहायता से चोर का हुलिया पुलिस को बता सकता है। प्रीकॉग्निशन में भविष्य में होने वाली घटनाओं का पूर्वाज्ञान हो जाता है।

सायकोकायनेसिस से शक्तिमान मनुष्य बिना किसी बाह्य शक्ति के केवल अपनी मानसिक शक्ति के आधार पर वस्तुओं को उठाकर कहीं रख देता है।

उपर्युक्त संदर्भो में अनुसंधान जारी रहा। शुरू-शुरू में यह व्यक्तिगत अनुभवों पर आधारित था। इसमें कुछ ऐसे तथ्य पाए गए जो संबंधित मुनष्य के दावों कमजोर करते थे। क्योंकि उस घटना की जानकारी पहले ही उस व्यक्ति को दे दी गई थीं कुछ प्रसंग संयोग पर आधारित थे, तो कुछ एकदम धोखाधड़ी साबित हुए।

'शास्त्र' के रूप में जांच-पड़ताल के लिए एक उचित पद्धति को अपनाना जरूरी था। जे.बी; रीन्हें नामक एक मानसोपचार विशेषज्ञ ने वह पद्धति ढूंढनिकाली। वह कार्ड के आधार पर परीक्षा की पद्धति थी। इसमें ताश के पत्तों के समान ही कार्ड होते हैं। पच्चीस कार्ड्स का एक समूह होता है। कार्ड परचौरस, वर्तुलाकार रेखाएं चांदनी अथवा गुणा(X) का निशान होता है। वह काली स्याही में बिल्कुल स्पष्ट होता है।

टेलिपैथी की परीक्षा देने वाला व्यक्ति 'अ' नामक कमरे में बैठता है। जिस व्यक्ति की ओर से उसे संदेश मिलता है, वह 'ब' नामक कमरे में होता है। अन्य किसी मार्ग से संदेश पहुंचे, इस बात का ध्यान रखा जाता है। 'ब' नामक कमरे में बैठे व्यक्ति को कार्ड दिखाए जाते हैं। उनमें से कितने कार्ड के निशान वह 'अ' नामक कमरे में बैठके व्यक्ति तक पहुंचाता है, उस संख्या को दर्ज किया जाता है। क्लेअरवायंस की परीक्षा के लिए कार्ड्स उलटे रखे जाते हैं और उनका सही क्रम संबंधित व्यक्ति से पूछा जाता हैं कॉग्निशन के प्रयोग में पत्तों को पीसने से पहले ही व्यक्ति से कार्ड्स का क्रम पूछा जाता है तथा बाद में उनकी जांच भी की जाती है। आंतरिक शक्ति पर आधारित अनेक पुस्तकें लिखी गई है।। उसमें परमानसशास्त्र का समर्थन होता है। लेकिन विद्वानों ने अनेक उचित आशंकाएं प्रकट की हैं और

उनका उत्तर मांगा है। ऐसी शक्तियों के प्रयोगों में भी उनेक विश्वास नहीं हैं, उनके सामने ऐसी परीक्षाएं नहीं ली जातीं। 'मेरे अंदर ऐसी शक्ति निरंतर मौजूद है और उसे मैं संयमित कर सकता हूं- ऐसा आज तक किसी ने नहीं किया है। इसके बहुत-से कारण भी दिए जाते है, जैसे-यह शक्ति मानसिक स्थित पर निर्भर होती हैं मन अगर प्रसन्न और उल्लसित हो तब भी यह प्रकट होता है। ज़ाहिर है परीक्षा के समय इसकी उत्पत्ति की संभावना कम ही होगी।)

स्यूडोसाइंस के कुछ उपप्रकार माने गए हैं-प्रोसाइंस, सिकसाइंस, जंकसाइंस, आल्टरनेट साइंस, फ्रिंज साइंस, बैडसाइंस, एंटीसाइंस आदि। नाम चाहे जो भी हो, ये सभी उन नकली गहनों के समान हैं जो ऊपरी तौर पर सच्चे हीरे की तरह चमकते हैं।

प्रोसाइंस विज्ञान के बहुत नजदीक होता है। विज्ञान की सभी कसौटी पर तो नहीं लेकिन अधिकांश पर यह खरा उतरता है। सिकसाइंस (अथवा पैथालॉजिकल साइंस) गलत कल्पनाओं पर आधारित होता है। अल्पकाल के लिए वह साइंस के रूप में जाना जाता है। लेकिन विज्ञान के नियमों से उसमें छुपा झूठ सामने आ जाता है। ऐसे अनेक उदाहरण दिए जा सकते हैं। सन् 1970 के दौर में पॉलीवाटर नामक पानी का क्या रूप सामने आया। अनुसंधानकर्ताओं का यह दावा था कि यह बर्फ या भाप की तरह ही पानी का एकरूप है जो अधिक तापमान में उबलता है और कम-से-कम तापमान में जम जाता है। सूक्ष्मता से जांचने पर इस दावे की निरर्थकता सामने आई और पॉली वाटर विज्ञान में हमेशा के लिए अपना स्थान नहीं बना पाया।

विज्ञान का उदात्त उद्देश्य यह होता है कि अपने इर्द-गिर्द में फैले पूरे विश्व का जायजा लेकर उसक अधिक से अधिक अर्थपूर्ण स्वरूप सामने लाया जाए। इस दृष्टि से ही उसमें निरंतर प्रयोग, अनुसंधान होते रहते हैं। स्यूडोसाइंस में ऐसे अनुसंधान का अभाव होता है। उसकी बुनियाद हजार वर्ष पूर्व जानकारी के संकलन पर खड़ी होती है। तत्काल में भी उस विषय का अनुसंधान वैज्ञानिक पद्धति से ही हुआ होगा, इसका कोई भरोसा नहीं होता।

महत्त्वपूर्ण बात यह है कि रिफ्युटॅबिलिटी की परीक्षा के बाद स्यूडोसाइंस का राज खुल जाता हैं 'कौन सा गवाह प्रस्तुत करने पर आपकी थ्योरी गिर पड़ेगी?' इस प्रश्न का उत्तर स्यूडोसाइंस के सप्रत्येक समर्थक को देना चाहिए। इसे 'रिफ्यूटॅबिलिटी ' कहा जाता है। विज्ञान का यह बहुत महत्त्वपूर्ण प्रयोग है। स्यूडोसाइंस को 'साईंस' साबित करने के लिए इस प्रायोगिक परीक्षा से गुजरना पड़ेगा।

कोई वैज्ञानिक नया सिद्धांत प्रस्तुत करता है तो उसके अन्य सहयोगी उस सिद्धांत के निष्कर्षो से अलग उदाहरण जान-बूझकर सामने रखते हैं। उनका स्पष्टीकरण वैज्ञानिक को देना पड़ता है। इससे प्रस्तुत किया गया नया सिद्धांत या तो मजबूत बन जाता है, अथवा कमजोर बन जाता है या पीछे छूट जाता है। यह कोई दुश्मनी निकालने वाली शरारत नहीं होती है। आशंकाओं का स्पष्टीकरण मांगना विज्ञान का एक अनुशासन है। स्यूडोसाइंस में आशंकाओं को जगह नहीं दी जाती। किसी के पूछने पर 'आपको यह पूछने का अधिकार नहीं है' जैसे उत्तर दिया जाता है। स्वाभाविक रूप से किसी गलत बात को स्यूडोसाइंस में बेदखल नहीं किया जाता।

प्रस्तुत विवेचन का यह अर्थ कतई नहीं कि स्यूडोसाइंस का संकलन कचरे के डिब्बे में फैंक दिया जाए। इसमें हर संदर्भ फालतू अथवा निरर्थक नहीं होता। प्रोसाइंस में जो बातें अवैज्ञानिक हैं, उनको टालकर अन्य संदर्भो पर अनुसंधान किया जाए तो अर्थपूर्ण तथ्य निकल सकते हैं। वैज्ञानिक दृष्टिकोण विनयशील होता हैं लेकिन सत्य की जांच-पड़ताल में जरूरत के मुताबिक कठोर भी होता हैं इसके विपरीत अवैज्ञानिक धारणा का शास्त्र के रूप में प्रचार करने वाले लोग सिर्फ अपनी बात कहने में भरोसा रखते हैं, उसकी जांच-पड़ताल में नहीं। किसी बात को वैज्ञानिक माना जाए अथवा स्यूडोसाइंस, इसे निश्चित कराने के लिए निम्नलिखित कसौटियां उपयुक्त सिद्ध होती हैंः

1. इस विषय में कुछ विकास नज़र आता है या नहीं? अगर होता है तो इसके 'इसके विज्ञान होने की संभावना अधिक होती है। स्यूडोसाइंस में उन्नति नहीं होती है।
2. स्यूडोसाइंस में लेखक उलझाऊ और असपष्ट

शेष पृष्ठ 19 पर...

उड़ीसा के तर्कशील नेता श्रीराजा सुरेश के साथ मुलाकात

हमें प्रत्येक ज्वलंत मामले बारे तर्कशील सोच के अनुसार प्रतिक्रम देना चाहिए

10 दिसंबर, 2018 को तर्कशील संस्था 'मानवतावादी हेतुवादी संस्था, उड़ीसा (Humanist Rationalist Organization of Odisha) के महासचिव श्रीराजा सुरेश एक विवाह समारोह में शामिल होने के लिए बठिण्डा में आए। इस अवसर पर उनके साथ बठिंडा इकाई के सदस्य राजपाल सिंह, भूरा सिंह, मा. ज्ञानसिंह एवं केवल कृष्ण ने उन की संस्था क्रियाकलाप के बारे, उड़ीसा में तर्कशील लहर की स्थिति के बारे एवं कुछ अन्य संबंधित मुद्दों के बारे में बातचीत की।

श्री राजा सुरेश पेशे के तौर पर मैकेनिकल इंजीनियर रहे हैं। उन्होंने इंजीनियरिंग की शिक्षा चेकोस्लोवाकिया में प्राप्त की थी, जहां पर बहुत से अन्य भारतीय विद्यार्थी भी शिक्षा ग्रहणकर रहे थे जिनमें से अधिकतर भारतीय कम्युनिस्ट नेताओं के बेटियां बेटे थे। परंतु राजा सुरेश के पिता जी गांधी वादी कांग्रेसी थे। उस समय वहां पर विश्व शांति सम्मेलन हुआ था, जिस में फेडल कास्त्रो एवं यासिर अराफात जैसे नेताओं ने संबोधित किया तथा राजा सुरेश ने विदेशी विद्यार्थियों के प्रतिनिधि के तौर पर वहां अपने विचार रखे थे। उनके पिता जी यद्यपि नास्तिक विचारधारा वाले नहीं थे परंतु राजा सुरेश ने अपने विद्यार्थी काल में ही नास्तिक विचारधारा को धारण कर लिया था। वे कालेज में शिक्षा ग्रहण करने के समय से ही तर्कशील मामलें के बारे में मासिक गोष्ठियां आयोजित करते रहे थे, जो वर्तमान में भी जारी हैं। वे वापिस आ कर विभिन्न चीनी मिलों में इंजीनियर की नौकरी करते रहे तथा उन्होंने जनरल मैनेजर के पद पर भी कार्य किया। उन्होंने शादी नहीं करवाई तथा नौकरी से सेवामुक्ति लेकर अपना सारा समय तर्कशीलता के प्रचार-प्रसार हेतु लगा रहे हैं।वे अपनी संस्था के महासचिव होने के अतिरिक्त 'फीरा' (Federation of Indian Rationalist Associations) के भी सचिव हैं।

प्रश्नः सर्वप्रथम अपनी संस्था के बारे में जानकारी देवें कि यह कब बनी? इसका सांगठनिक ढांचा किस प्रकारका है? यह किस प्रकार के कार्य करती है?

राजा सुरेशः यह संस्था 1978 में बनी थी । इस का दायरा विशाल करने के लिए 2012में इस के नाम के साथ मानववादी शब्द को जोड़ा गया। उड़ीसा के 30 जिले हैं तथा सभी जिलों में इस की जिला कमेटियां हैं। प्रांत स्तर पर इस की 21 सदस्यीय प्रांतीय समिति है।

उड़ीसा वैज्ञानिक चिंतन के तौर पर काफी पिछड़ा हुआ है। वहां पर डायन घोषित करके मारने से लेकर मानव बलि तक के मामले होते रहते हैं। हम गांवों में जाकर लोगों को इसके बारे में जागरुक करते हैं। कई बार हमें सूचना मिलती है कि अमुक गांव में किसी व्यक्ति को काला जादू करने वाला कह कर गांव वालों ने घेर लिया है और वे उस को शारीरिक हानि पहुंचा सकते हैं, तो हम तुरंत वहां पर पहुंच कर लोगों को समझाते हैं । जैसे कि कुछ समय पूर्व एक गांव में एक आदमी को गांव वालों ने यह कह कर पकड़ा हुआ था कि वह गांव वासियों को हानि पहुंचाने के लिए आधी रात को मंदिर में पूजा पाठ कर रहा था। हम ने मौके पर पहुंच कर उनलोगों को समझाया कि जादू-टोने के साथ कभी भी किसी को हानि नहीं पहुंचाई जा सकती। यदि कोई काले जादू के द्वारा हमारी संस्था के किसी सदस्य को हानि पहुंचा कर दिखाए तो वह 5000 रुपये ईनाम के तौर पर प्राप्त कर सकता है। तब वेकहने लगे कि तुम लोगों पर कोई असर नहीं होगा। हमारा द्वारा पूछने पर कि हमारे ऊपर कोई असर क्यों नहीं होगा तो वे कहने लगे कि तुम तो

इन चीजों में विश्वास ही नहीं करते। इसलिए तुम लोगों पर कोई असर नहीं होता। हमने समझाया कि फिर तो यह बात ही बहुत आसान है । तुम लोग भी इस बात पर विश्वास न रखों इस प्रकार हम लोगों ने उन गांव वासियों को तर्क के साथ समझा कर उस आदमी को उनके जुल्म से बचाया। इसी प्रकार से अन्य भी मामलों में ऐसा ही हुआ। यदि इस प्रकार की कोई घटना घट भी जाए तो हम दोषियों के खिलाफ पुलिस की कारवाई के लिए दबाव बनाते हैं।

प्रश्नः क्या आप केवल इस प्रकार के भूत-प्रेतों से जुड़े हुए मामले ही देखते हैं ?

राजा सुरेशः नहीं, यह तो हमारे कार्यों का केवल एकपक्ष है। हम बहुत से कार्य करते हें। स्कूलो एवं कालेजों में प्रोग्राम देते हैं। हमारे तर्कशील साथी कई पत्रिकाएं निकालतेहैं जैसे कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण (ScientificOutlook), हेतुवादी चिंतक (Rationalist Thinker), वैज्ञानिक चर्चा, समदृष्टि आदि। बड़े शहरों में हम हर महीने में एक सेमिनार करते हैं, जिस का विषय हर बार भिन्न होता है। इस में प्रोफेसर, डाक्टर एवं भिन्न-भिन्न क्षेत्रों के बुद्धिजीवी भाग लेते हैं।

प्रश्नः इन सेमिनारों में किस प्रकार के विषय लिए जाते हैं ?

राजा सुरेशः जैसे कि 'मीडिया एवं अंधविश्वास' , 'सेक्युलर भारत कितना सेक्युलर'। हमने यह विषय भी रखा कि 'गोमांस पर प्रतिबंध कितना जायज;' हमारे कुछ लोग कहते हैं कि गोमांस वाला विषय रखने से कोई विरोध न खड़ा हो जाए। परंतु ऐसा कुछ भी नहीं हुआ। केवल कुछ लोग यह अपील लेकरआए कि आप हिंदू धर्म की मान्यताओं पर सवाल न करें, परंतु हमने अपना सेमिनार किया।

प्रश्नः इस प्रसंग में हम जानना चाहेंगे कि उड़ीसा में हिंदुत्ववादी शक्तियों की क्या स्थिति है ?

राजा सुरेशः उड़ीसा में भाजपा अथवा आर.एस.एस. का कोई विशेष प्रभाव नहीं है। यद्यपि अब भाजपा वहां पर पैर जमाने के लिए अपनी पूरी शक्ति लगा रही है, बहुत साधन लगा रही है, परंतु कोई विशेष प्रभाव नहीं है। वे इतने ताकतवर नहीं हैं कि हमें डरा सकें। जिस प्रकार से हिंदी भाषी क्षेत्रों में वे धमकाने वाली कारवाईयां करते हैं अभी तक उड़ीसा में तो ऐसी स्थिति नहीं है।

धार्मिक परम्पराओं को चुनौती देना काफी कठिन कार्य होता है, परंतु हम खुले आम ऐसा करते हें। जैसे कि चंद्रग्रहण वाले दिन मंदिरों के पुजारियों के द्वारा घोषणा की जाती है कि ग्रहण के समय कोई खाना नहीं खाएगा। कितने बजे से लेकर कितने बजे तक नहीं खाना, यह समय वह पुजारी ही निर्धारित करते हें। हम इस अंधविश्वास को तोड़ने के लिए उस दिन सड़कों पर खुलेआम भोजन वितरित करते हें, बहुत सेलोग वह भोजन खाते हैं तथाइस बात की मीडिया में बहुत चर्चा होती हैं

प्रश्नः वैज्ञानिक विचारों के प्रसार के लिए आप कोई पुस्तक मेले अथवा पुस्तकालय आदि भी स्थापित करते हो ?

राजा सुरेश : नहीं, उड़ीसा में पुस्तकें पढ़ने की संस्कृति उस तरह से विकसित नहीं है जिस प्रकार बंगाल आदि प्रांतों में है। इसके अनेकों ऐतिहासिक कारण हैं। उड़ीसा तीन भागों में बंटा रहा, जिस कारण उड़िया भाषा साहित्यिक तौर पर उतनी विकसित न हो सकती। अतः हम अपना अधिकतर प्रचार लोगों को संबोधन करके तथा अन्य कायक्रम ओयाजित करके ही करते हैं।

प्रश्न : क्या आप जादू के ट्रिक अथवा चमत्कारों की व्याख्या इत्यादि के कार्यक्रम भी देते हो ?

राजा सुरेशः हां, यदि हम जनता में सीधे ही जाकर नास्तिकता अथवा वैज्ञानिक चिंतन के बारे में बोलना शुरू करदें तो लोग हमारी बात सुनने के लिए तैयार नहीं होंगे अथवा शीघ्र ही उक्ता जाएंगे। अतः हम चमत्कारों की व्याख्या के प्रोग्राम भी प्रस्तुत करते हैं। उदाहरण के तौर पर कुछ झाड़-फूंक करने वाले ओझा गांव में फूल ले आते हैं और कहते हैं कि यदि यह फूल पांच मिनट में ही मुरझा गया तो गांव पर कोई प्रकोप आने वाला है। हम लोगों को इस की वास्तविकता बताते हैं कि यह फूल केमिकल लगाने के कारण मुरझा जाता है, इसका गांव के किसी कोप-भाजन के साथ कोई संबंध नहीं है। इसी प्रकार हमारे प्रांत में 'खटिया विद्या' प्रचलित है कि जब

गांव में कोई चोरी होती है तब वे लोग कथित खटिया विद्या के ज्ञाता किसी बाबा को बुला लेते हैं जो एक चारपाई मंगवा लेता है। वह चारपाई को चार आदमियों से उठवा कर कह देता है कि यह चारपाई जिस घर में तम्हें ले जाएगी वह ही चोर होगा। चारपाई को उठाने वाले आदमी उसके प्रभाव वाले होते हैं।अतः वे उस बाबा के इशारे पर चारपाई को किसी विशेष घर में ले जाते हैं। ऐसे अवसर पर यदि हम पहुंच जाएं तो हम अपने आदमियों को चारपाई उठाने के लिए लगा देते हैं तथा चारपाई वहां पर ही रह जाती है, क्योंकि चारपाई में तो कोई शक्ति होती ही नहीं कि वह आपको खींच कर किसी तरफ ले जासके। इस प्रकार हम लोगों में इस पाखण्ड का पर्दाफाश करते हैं कि ये लोग चारपाई के नहीं बल्कि उस बाबा के कहने के अनुसार चलते हैं तथा किसी निर्दोश व्यक्ति को फंसा देते हैं।

प्रश्नः बहम-भ्रम एवं धार्मिक मुद्दों के अलावा अन्य कौन-कौन से कार्य आप करते हैं?

राजा सुरेशः हम सामाजिक महत्व वाले अनेक प्रकार के कार्य करते हें, जैसे कि रक्तदान करना, पर्यावरण प्रदूषण के मुद्दों को उठाना, बच्चों के टीकाकरण के बारे में लोगों को जागृत करना और सरकार पर दबाव बनाना कि वह सभी को टीकाकरण की सुविधा प्रदान करे। मैंने स्वयं 174 बार रक्तदान किया है..।

174 बार रक्तदान सुनकर हैरानी हुई कि एक व्यक्ति इतनी बार रक्तदान कैसे कर सकता है तो उन्होंने बताया कि वे 18 वर्ष की आयु से प्रत्येक तीन महीने के पश्चात् रक्तदान करते चले आ रहे हैं। जब तीन महीने हो जाएं तब वे जिस भी जगह परहों तो वहीं पर ही रक्तदान कर देते हैं। आयु पूछने पर उन्होंने बताया कि इस समय उनकी आयु 63 वर्ष है। हमने हिसाब लगाया कि वे 45 वर्षो से लगातादाररक्तदान करते चले आ रहे हैं।

विचारों के मतभेद के बारे में

प्रश्नः आप की संस्था में क्या सभी सदस्य एक ही तरह के विचार रखते हें? यदि विचारों में मतभेद होता है तो वह किस प्रकार के मुद्दों पर होता है? उन मतभेदों को कैसे हल किया जाता है?

राजा सुरेशः बहुत से मुद्दों पर हमारे भिन्न विचार आते हैं। जैसे कि सब से पहले तो कुछ लोग यही कहते हैं कि संस्था को केवल अंधविश्वासों को दूर करने तक ही मतलब रखना चाहिए, अन्य मुद्दों को नहीं उठाना चाहिए। जब कि हमारी राय के अनुसार तर्कशील चिंतन वाले व्यक्तियों को सामाजिक, सांस्कृतिक अथवा राजनतिक क्षेत्र के सभी ज्वलंत मामलों को तर्कशील दृष्टिकोण के मापदण्ड के अनुसार विचार करना एवं इनके बारे में प्रतिक्रिया देनी चाहिए। अंधविश्वास को जीवन के बाकी सभी पहलुओं से अलग कर के समाप्त नही किया जा सकता।

पिछले समय के दौरान खड़ा हुआ एक महत्वपूर्ण मामला 10 से 50 वर्ष तक की महिलाओं को सबरीमाला मंदिर में प्रवेश निषेध का है। सुप्रीम कोर्ट ने फैसला दिया कि महिलाओं को वहां जाने से नहीं रोका जाना चाहिए परंतु कट्टरपंथी लोग परम्परा के नाम पर सुप्रीम कोर्ट के फैसले का विरोध करते हुए महिलाओं को जबरदस्ती रोक रहे हैं। हमारे कुछ लोगों का विचार था कि यह धार्मिक लोगों का मामला है, हम इस के बारे में चिंता क्यों करें? परंतु हमारी राय के अनुसार यह सभी को पूजा पाठ के एक जैसे जनतांत्रिक अधिकार का मामला है। दूसरे यह महिलाओं के साथ लिंग आधारित भेदभाव हैं इस लिए हम इस मुद्दे को उठाने वाली महिलाओं के हक में खड़े हो गए। धार्मिक लोग कहते हैं कि इस मंदिर का भागवान अय्यपा ब्रह्मचारी था। इसलिए महिला अंदर नहीं जा सकती। हमने कहा कि तुम्हारे भगवान का ब्रह्मचर्य इतना ही कमजोर है कि वह 10 से 50 वर्ष आयु वर्ग की किसी भी महिला को देख कर टूट जाएगा।

इसी तरह मी टू (Me too) लहर के बारे में भी दो तरह के विचार सामने आये। कुछ सदस्यों का कथन था कि यह भी कोई बात हुई कि कोई महिला 20 वर्षो के पश्चात् यह बताए कि उसके

साथा धक्का हुआ था। परंतु हमने कहा कि उस समय की हालातों के तहत यदि कोई महिला उस समय नहीं बोल सकी तो यह उचित नहीं कि उसके साथ हुई ज्यादती को ज्यादती ही न गिना जाए। यह महिला चेतना के विकास का चिह्न है जिस के चलते माहौल बदल रहा है तथा महिलाएं अपने खिलाफ हुई ज्यादतियों के बारे में बोलने के काबिल हुई हैं। अतः हम इसके समर्थन में खड़े हुए।

तर्कशील लहर में अंबेदकरवादी भी सम्मिलित हैं जो तर्कशीलों को डा.अंबेडकर से मार्गदर्शन लेने के लिए कहते। हम उनको कहते हैं कि डा. अंबेडकर हमारे सम्मान के पात्र हैं, उन्होंने शोषित लोगों के अधिकर दिलवाने में बहुत योगदान डाला। वे जाति आधारित शोषण के विरुद्ध बहुत जागरुकता लाये। परंतु वे नास्तिक नहीं थे। उन्होंने सभी धर्मों को रद्द करने की बजाए पहले सिख धर्म अपनाने की बात चलाई। जब सिख धर्म में भी जाति-पांति होने का पता चला तो उन्होंने बुद्ध धर्म अपना लिया। बुद्ध धर्म में भी अन्य धर्मों की भांति बुद्ध की मूर्तियां बनाई जाती हैं, उस की पूजा की जाती है, पुनर्जन्म में विश्वास किया जाता है तथा मोक्ष वगैरह के संकल्प हें। जबकि एक तर्कशील को इन बातों के बारे में बहुत स्पष्ट होना चाहिए।

प्रश्नः इस प्रसंग में आप मार्क्सवादियों के बारे में क्या कहना चाहोगे?

राजा सुरेशः एक तर्कशील के लिए जरूरी नहीं कि वह कम्युनिस्ट हो परंतु एक कम्यूनिस्ट के लिए आवश्यक हे कि वह तर्कशील हो, क्योंकि मार्क्स की विचारधारा ही पदार्थवादी है। पर मुझे यह भी अफसोस के साथ कहना पड़ेगा कि भारत के बहुत से कम्यूनिस्ट तर्कशील नहीं हैं।

अदारा तर्कशीलः राजा जी, उड़ीसा की तर्कशील लहर के बारे में आपसे अत्यंत बहुमूल्य जानकार मिली तथा आपका तर्कशील लहर के प्रति सर्म्पण हमारे लिए प्रेरण स्रोत है।

राजा सुरेशः मेरे साथ समय व्यतीत करने के लिए आपका बहुत धन्यवाद। जय इन्सान।

हिंदी अनुवाद : बलवंत सिंह लेक्चरार

०००

पृष्ठ 12 का शेष..(सूडोसाइंस..)

शब्दों का उपयोग करता है लेकिन उसकी व्याख्या नहीं करता, जैसे-बायोमैग्नेटिजम, कॉस्मिक एनर्जी आदि।

3. प्रचलित विज्ञान की परिधि को लांघने से ही विषय को छुआ जा सकता है।

4. स्यूडोसाइंस से संबंधित आलेख के अंत में संदर्भ-सूची नहीं होती है।

5. गवाही हमारी आत्मा ही देती है' जैसी हामी केवल स्यूडोसाइंस में भरी जाती है।

6. किसी संदर्भी को न देते हुए, 'यह बात प्रयोग के द्वारा साबित हुई है, इसीलिए यह छल नहीं है' का दावा स्यूडोसाइंस में किया जाता है।

7. यह प्रयोग सिर्फ वही किया होता है जो दावा करता है, दूसरों के सामने इसकी पुष्टि नहीं की जाती।

8. स्यूडोसाइंस बार-बार यह शिकायत करता है कि उस पर हमेशा ही आरोप लगाए जाते हैं।

9. किसी मानक विज्ञान संस्था में स्यूडोसाइंस का अध्यापन नहीं होता है।

10. इस विषय के ग्रंथ सौ वर्ष पुराने होते हैं।

11. सत्य से दूर, केवल सत्य जैसी लगने वाली अनेकानेक बातें स्यूडोसाइंस में पढ़ी जा सकती हैं। प्रायः उनका कथित विषय से भी वास्ता नहीं होता।

12. आलेख पर जब प्रश्न उठते हें तो उनका उत्तर देने की बजाए स्यूडोसाइंस वाला प्रश्नकर्ता पर ही हमला करता है।

13. स्यूडोसाइंस में हमेशा यह दावा किया जाता है कि जो बात वर्षो से मौजूद है, उसे झुठलाया कैसे जा सकता है? लेकिन 'वर्षो से प्रचलित' बात को साबित करके दिखाने की जरूरत नहीं समझी जाती।

14. स्यूडोसाइंस कभी लोकप्रिय होता है, कभी नहीं। उसकी भाषा 'श्रद्धा से करो, अनुभव होगा' वाली होती है।

15. स्यूडोसाइंस की अनेक बातों की विज्ञान कल्पना भी नहीं कर सकता।

16. स्यूडोसाइंस अपने विषय से संबंधित न होने वाले तत्त्वों के साक्ष्य का आधार लेता है।

(लेखक की पुस्तक 'अंधविश्वास उन्मूलन विचार' से साभार)

स्वतंत्र चिंतन

कौन-सा मार्ग ?

-कर्नल इंगरसोल

दो रास्ते हैं-प्राकृतिक और परा-प्राकृतिक

6

हजारों वर्षो तक आदमी असंभव में विश्वास करता रहा है और उसके पीछे पड़ा रहा है। रसायन शास्त्र में वह किसी ऐसी वस्तु की खोज में व्यस्त रहा है कि जो दूसरी सामान्य धातुओं को सोने में बदल दें। लार्ड बैकन भी इस बेहूदगी में विश्वास करता था। अनेक शताब्दियों तक हजारों आदमी जस्त और लोहे की प्रकृति को बदलने का प्रयत्न करते रहे कि वह अंत में सोना बन सके। उन्हें चीजों के वास्तविक स्वभाव की कोई कल्पना न थी। वे समझते थे कि चीजें किसी न किसी प्रकार के जादू से पैदा हुई हैं और उसी प्रकार के जादू से बदलकर कोई दूसरी चीजें बनाई जा सकती हैं। वे सभी परा-प्राकृतिक में विश्वास करने वाले थे। इसी प्रकार मशीन-निर्माण में भी मनुष्य असंभव की खोज में लगे रहे। वे लगातार गति में विश्वास करते थे और वे ऐसी मशीन बनाना चाहते थे, जो स्वयं बिना किसी साधन के लगातार चलती रहे। हजारों बुद्धिमान आदमियों ने अपना जीवन ऐसी मशीनों के आविष्कार में व्यर्थ नष्ट कर दिया, जो किसी न किसी आश्चर्यजनक तरीके पर गति को जन्म दे सकें। वे यह नहीं जानते थे कि गति निरंतर विद्यमान रहती है। न यह उत्पन्न ही की जा सकती है और न यह नष्ट ही की जा सकती है। वे यह नहीं जानते थे कि जिस मशीन में लगातार गति रहेगी, वह अपने में एक विश्व होगी अथवा इस विश्व से सर्वथा स्वतंत्र। उसमें जो घर्षण नामक शक्ति रहेगी, वह बिना किसी प्रकार की हानि के धकेलने वाली शक्ति में परिणत हो जाएगी अर्थात् मशीन स्वयं उस मूल-शक्ति की जनक बन जाएगी, जिस शक्ति से वह चलेगी, इन सब बेहूदगियों के बावजूद ऐसे अदमी, जिन्हें उनके साथी पंडित और समझदार समझते रहे शताब्दियों तक लगातार गति के महान सिद्धांत के आवि कार में लगे रहे। हमारे पूर्वजों ने तारागण का अध्ययन किया। वे समझते थे कि उनके अध्ययन से हम जातियों और व्यक्तियों के भाग्य तथा जीवन का पता पा सकेंगे। सूर्य-ग्रहण तथा चंद्र-ग्रहण, पुच्छल तारे, तारागणों के आपसी संबंध, भाग्य अथवा भाग्य के पूर्व-चिन्ह और कारण समझे जाते थे। फलित-ज्योतिष एक विज्ञान माना जाता था और जो इस शास्त्र के ज्ञाता थे, उनकी पूछताछ सेनापति करते थे, कूटनीतिज्ञ करते थे और बड़े-बड़े महाराजा करते थे। इस तथाकथित विज्ञान के अध ययन में जो समय का अपव्यय हुआ, जो प्रतिभा का नाश हुआ, उसकी अतिश्योक्ति हो ही नहीं सकती। जो लोग फलित-ज्योतिष में विश्वास करते थे, वे समझते थे कि वे एक परा-प्राकृतिक संसार में रहते हैं-एक ऐसे संसार में जिसमें कार्य-कारण का आपस में कोई संबंध नहीं, जिसमें सभी घटनाएं जादू के प्रभाव से होती हैं।

अभी उन्नीसवीं शताब्दी की समाप्ति पर भी लाखों आदमी हैं, जो गधों की जन्म-पत्रियां देखकर ही अपनी जीविका चलाते है। मशीन-निर्माताओं का निरंतर-गति का सिद्धांत, रसायन-शास्त्र का पारसमणि की खोज में भटकना तथा तारागण के संबंध में भविष्यवाणियां करना-ये सभी बातें प्रकृति-संबंधी उसी अज्ञान में से पैदा हुई हैं, जिस अज्ञान में धर्मोपदेशकों को एक ऐसा कारण (परमात्मा) की कल्पना करने पर मजबूर किया कि जो स्वयं तो सभी कारणों तथा कार्यो का कारण है, किंतु उसका कोई कारण नहीं। धर्मोपदेशकों को दुराग्रह रहा है कि प्रकृति से परे 'कुछ' है और वह 'कुछ' ही प्रकृति को उत्पन्न करने वाला तथा पालन करने वाला है।इसमें कोई मशीन-निर्माता अब निरंतर-गति में विश्वास करता है, तो वह पागल है, इसी प्रकार यदि कोई रसायन शास्त्रज्ञ एक धातु को दूसरी में बदल देता है, तो वह पागल है, यही हाल ईमानदार ज्योतिषी का है और कुछ वर्षो में यही बात सच्चाई के साथ ईमानदार

धर्मोपदेशकों के बारे में भी कही जा सकेगी।

हमारे अनेक पूर्वज निरंतर तरुण बने रह सकने के स्रोत में विश्वास करते थे और उसकी खोज में लगे रहे। उनका विश्वास था कि एक वृद्ध आदमी झुककर यदि इस स्रोत से पानी पी ले, तो उसके सफेद बाल काले हो जाएं, उसके मुंह की झुर्रियां उड़ जाएं, उसकी धुंधली आंखें चमक उठें और उसका दिल तारुण्य की गर्मी से धड़कने लग जाए।वे परा-प्राकृतिक के विश्वासी थे। उन्हें चमत्कारों में विश्वास था। उन्हें कोई बात इतनी संभव मालूम नहीं देती थी, जितनी कि असंभव बात।

7

बहुत से आदमी तर्क के स्थान पर नामों का प्रयोग करते थे। एक प्रसिद्ध मृत-पुरुषों के शिष्य कहलाने में बड़ा संतोष मिलता है। प्रत्येक दल, प्रत्येक पार्टी के पास महान पुरुषों की एक सूची रहती है और वे जब कभी अपने किसी मत अथवा सिद्धांत के बारे में विवाद करते हैं, तो वे आपस में इन्हीं महापुरुषों के नाम-एक दूसरे पर फेंकते हैं।

लोग बाइबल को इलहाम और ईसा को परमात्मा का पुत्र सिद्ध करने के लिए सैनिकों, कूटनीतिज्ञों और राजाओं को गवाही में पेश करते हैं। इसी प्रकार वे स्वर्ग और नरक के अस्तित्व की भी स्थापना करते हैं। उनके किसी एक सिद्धांत का विरोध कीजिए, तो आपको तुरंत बताया जाएगा कि आईजक न्यूटन दूसरे मत का था और तुमसे पूछा जाएगा कि क्या तुम न्यूटन से भी बढ़कर हो? हमारे अपने देश के पादरी-पुरोहित अपने बेहूदा मतों की स्थापना के लिए वेबस्टर तथा दूसरे सफल राजनीतिज्ञों की सम्मतियां उद्धृत करते हैं, मानो उनकी सम्मतियां ही कोई प्रमाण हों।

ये तथाकथित महापुरुष अनेक बातों में बड़ी गलतियां करते रहे हैं। लार्ड बैकन अपने जीवन के अंतिम दिन तक यह मानता रहा कि सूर्य और तारागण इस छोटी पृथ्वी के चारों ओर घूमते हैं। मॅथ्यू हेल का दृढ़ विश्वास था कि जादू कर सकने वाली स्त्रियां होती हैं। जॉन-वेजली का विश्वास था कि भूकंप पाप का परिणाम है और यदि प्रभु ईसा पर ईमान ले आया तो उससे बचा जा सकता है।

8

महापुरुषों की मूर्खता और पागलपन पर बड़े-बड़े ग्रंथ लिखे जा सकते हैं। कुछ ही वर्ष पहले जो सच्चे महापुरुष थे, उन्हें यातनाएं दी गई, कैद किया गया या जला दिया गया। इस प्रकार धर्म महापुरुषों को अपनी ओर रखने में सफल हुआ। असल में यह बता सकना असंभव है कि महापुरुष वास्तव में क्या सोचते थे। हम केवल यह जानते हैं कि उन्होंने क्या कहा। इन महापुरुषों को अपने परिवारों का पालन-पोषण करना था, उन्हें कारागार से डर लगता था और वे नहीं जानते थे कि उन्हें जलाया जाए। इसलिए यह संभव है कि वे एक तरह से सोचते हों और दूसरी तरह से बात करते हों।

पादरी-पुरोहितों ने इन आदमियों को कहा, 'हमारे मत के साथ एक मत बनो, हमारी ओर से बोलो, अन्यथा हम तुम्हें यातना देकर मार डालेंगे।' तब पादरी-पुरोहितों ने लोगों को संबोधन किया और चिल्लाकर कहा-'जरा सुनो, महापुरुष क्या कहते हैं।'

कुछ वर्षों से वाणी की स्वतंत्रता जैसी चीज ने जन्म लिया है और बहुत से आदमियों ने अपने विचारों को प्रकट किया है। अब धर्मोपदेशक लोग पहले की तरह नामों की दुहाई नहीं देते। जो वास्तव में महान हैं वे उनकी ओर नहीं है, आधुनिक विचार के नेता ईसाई नहीं हैं। अब अविश्वासी और नास्तिक भी बड़े-बड़े नामों की दुहाई दे सकते हैं-ऐसे नाम जो मानसिक विजय के द्योतक हैं। हमबोल्ट, हैल्महोल्टज, हैकल, हक्सले, डारविन, स्पैंसर, टैण्डल तथा अनेक दूसरे महान व्यक्ति विचार के संसार में खोज और आविष्कार का प्रतिनिधित्व करते हैं। ये लोग विचारक थे और हैं तथा इनमें अपने विचारों को प्रकट करने का साहस था और है। वे न तो पादरी-पुरोहितों की गुड्डियां थे, न हैं और न प्रेतों के कांपते हुए पुजारी।

अनेक वर्षों से अमेरिकी कालेजों के अधिकांश सभापति जाति के मानसिक विकास को रोकने के पवित्र कार्य में लगे रहे हैं। वे यहां तक सफल हुए हैं कि उनके शिष्यों से कोई भी न तो बड़ा वेज्ञानिक हुआ है और न है। अपने मत का समर्थन करने के लिए अब पुरान-पंथी लोग जीवितों के नाम नहीं लेते। उनके सभी गवाह कब्रों में हैं। सभी महान ईसाई मर गए हैं।

आज हम तर्क चाहते हैं, नाम नहीं, दलील चाहते हैं, सम्मतियां नहीं। किसी व्यक्ति अथवा धर्म का अंधानुकरण पतन का द्योतक है। तर्क से शासित होने से बढ़कर श्रेष्ठतर कुछ नहीं। सत्य द्वारा पराजित होने का मतलब है विजयी होना। अनुकरण करने वाला आदमी गुलाम है। विचार करने वाला स्वतंत्र है।

हमें याद रखना चाहिए कि अधिकांश मनुष्य अपनी परिस्थिति से शासित रहे हैं। तुर्किस्तान में बहुत से समझदार आदमी मुहम्मद के अनुयायी हैं। वे कुरान के झूले में झूले थे। उन्हें अपनी शक्ल-सूरत की तरह अपनी धार्मिक सम्मतियां भी अपने माता-पिता से मिलीं। धर्म के संबंध में उनके मत का कोई विशेष मूल्य नहीं। अपने देश के ईसाइयों के बारे में भी यही कहा जा सकता है। उनके विश्वास, विचार और खोज के परिणाम न होकर परिस्थिति के परिणाम हैं। सभी मजहब अज्ञान के परिणाम हैं और असभ्यता की अंधेरी रात्रि में उनका बीजारोपण हुआ है।

जब रोम-साम्राज्य का पतन हो गया, जब सारा वैभव जाता रहा, जब व्यापार लगभग रुक गया, जब दुर्बल हाथ अधिकार के दण्ड को संभाल न सके, जब लोक कला और अपने पुराने सामर्थ्य को भूल गए, तब ईसाई आए। उन्होंने मृत्यु-लोक की सभी चीजों की ओर घृणा की दृष्टि से देखकर अपने बंधुओं को परलोक की बात बताई-बादलों के उस पार अनन्त सुख की। यदि विद्या का ह्रास न होता, यदि लोगों को शिक्षा मिली होती, यदि उन्होंने यूनान और रोम के साहित्य को जाना होता, यदि उनका कला की चीजों से परिचय हुआ होता, यदि उन्होंने रोम का इतिहास पढ़ा होता, यदि उन्होंने तमाम शक्तिशाली मृत विचारकों का ज्ञान प्राप्त किया होता, तो ईसाई मिथ्या-विश्वास के बीजों को उगने के लिए कहीं कोई जमीन न मिलती। लेकिन आरंभिक ईसाई कला, संगीत और आनन्द-सबसे घृणा करते थे। उन्होंने मानव-जाति को तिरस्कृत किया। उनका मत था कि यह जीवन केवल दूसरे जीवन की तैयारी में व्यतीत होना चाहिए और शिक्षा आदमी के दिमाग में व्यर्थ के संदेह भर देती है तथा विज्ञान आदमी की आत्मा को परमात्मा से दूर कर देता है 9

दो रास्ते हैं। एक परमात्मा के लिए जीने का है। उसका अनेक बार अनुभव हो चुका है। परिणाम हर बार एक ही हुआ है। बहुत वर्ष पहले इसका अनुभव फिलस्तीन में किया गया। जिन लोगों ने ऐसा किया, उनके परमात्मा ने उनकी रक्षा नहीं की। वे पराजित हुए, प्रताड़ित हुए और देश से निकाल दिए गए। उनका देश उनके हाथ से जाता रहा और वे दुनिया में इधर-उधर छितरा गए। अनेक शताब्दियों तक वे अपने परमात्मा से सहायता की आशा लगाए बैठे रहे। उनका विश्वास था कि वे फिर इक्ट्ठे हो जाएंगे, उनके शहर, मंदिर और वेदिकाएं फिर बन जाएंगी और वे अपने परमात्मा की सहायता से अपने शत्रुओं को फिर जीत लेंगे और संसार पर शासन करेंगे। ज्यों-ज्यों शताब्दियां बीतती गई हैं, यह आशा दुर्बलतर होती गई हैं। अब तो समझदार लोग इसे एक मूर्खतापूर्ण स्वप्न ही समझने लग गए हैं।

परमात्मा के लिए जीने की परीक्षा स्विटजरलैंड में की गई। उसका परिणाम दासता और यातना हुआ। सुधार और उन्नति का प्रत्येक मार्ग बंद कर दिया गया। केवल अधिकारीगण ही अपने विचारों को व्यक्त कर सकते थे। किसी ने भी इस संसार में लोगों को सुखी बनाने का प्रयत्न नहीं किया। निर्दोश मनोरंजन को पाप कहा गया। हंसना मना था। तमाम स्वाभाविक प्रसन्नताओं से दूर-दूर रहना होता था। स्वयं प्रेम तक को पाप कहकर उसकी निंदा की गई। उनका मनोरंजन व्रत रखने और प्रार्थनाएं करने से होता, प्रवचन सुनने से होता, अनन्त-वेदना की चर्चा करने से होता, पुराने-प्रवचन की वंषावलियां रटने से होता और होता कभी अपने किसी साथी को जला डालने से।

परमात्मा के लिए जीने की परीक्षा स्काटलैंड में हुई। लोग कर्कों के गुलाम और दास बन गए। पुजारी छोटे-मोटे अत्याचारी थे। उन्होंने जीवन के स्रोत में ही विष घोल दिया। वे हर परिवार के कामों में दखल देते। हर घर का प्राइवेट जीवन अंतरिक्ष था। उन्होंने भय और मिथ्या-विश्वास के बीज बोए। उनका कहना था कि वे ईश्वर के संदेशवाहक हैं और

उनके अधिकार को अस्वीकार करना नास्तिकता है और जो भी उनकी आज्ञाओं का पालन नहीं करेंगे, उन्हें अनन्त-वेदना सहन करनी होगी। उनके शासन में स्काटलैंड दुख और दर्द का देश बन गया था। सारे लोग गुलाम हो गए थे।

परमात्मा के लिए जीने की परीक्षा नए-इंग्लैंड में हुई। पुराने प्रवचन के अनुसार एक सरकार की स्थापना की गई। जो कानून बने वे अधिकांश में तुच्छ थे, बेहूदा थे। जिन दण्डों की व्यवस्था की गई, वे अंतिम दर्जे तक रक्त-रंजित थे। धार्मिक स्वतंत्रता एक अपराध थी, परमात्मा का अपमान। यदि कोई आदमी किसी अधिकारी से भिन्न मत रखता था, तो उसे यातना दी जाती थी, कोड़े लगाए जाते थे, अंग-भंग कर दिए जाते थे और देश-निकाला दे दिया जाता था। सभी बातों पर पादरी-पुरोहितों का अधिकार था। उनके दिल में न दया थी, न करुणा थी। वे अपने अन्तःस्तल से प्रकृति को घृणा की दृष्टि से देखते थें वे परलोक के सुखों का विश्वास दिलाते थे, किंतु इस लोक में जो सुख हैं, उसे नष्ट करने के लिए हर तरह से प्रयत्नशील थे।

परमात्मा के लिए जीने की परीक्षा अंधकार-युग में की गई। हजारों बेड़ियां रक्त से रंगी गई, असंख्य तलवारें आदमियों की छाती में घोप दी गई। मानव के मांस को चिताओं ने भस्मीभूत कर दिया। जिन्होंने कुछ विचार करना चाहा, उनके घर कारागारों में बने। परमात्मा के नाम पर अत्याचार हुआ, पृथ्वी पर से स्वतंत्रता का लोप हो गया। हर जगह की एक ही कहानी है। परमात्मा के लिए जीवन व्यतीत करने से संसार को रक्त और आग की लपटों से भर दिया।

दूसरा रास्ता है-हम आदमी के लिए जिएं, इस संसार के लिए जिएं। आओ, हम आदमी के मस्तिष्क को विकसित करें और हृदय को विशाल बनाएं। हम पता लगाएं कि किस तरह रहने में सुख मिलता है और उसी तरह रहें। हम अज्ञान, दरिद्रता और अपराधों को नष्ट करने के लिए जो भी कुछ कर सकते हों, करें। हम शरीर की आवश्यकताओं की पूर्ति की भरपूर चेष्टा करें, दिमाग की भूख मिटाने का भरपूर प्रयास करें। हम प्रकृति के रहस्यों का पता लगाएं, ताकि प्रकृति की अदृश्य शक्तियां आदमी की अथक सेवा में लग जाएं। हम समस्त संसार को सुखी घरों से भर दें, देवताओं को अपनी चिंता आप करने दें, हम आदमी के लिए जिएं। हम इस बात को याद रखें कि जिन्होंने प्रकृति के रहस्यों का पता लगाने की चेष्टा की है, उन्होंने अपने मानव-बंधुओं को कभी कोई यंत्रणा नहीं दी। गणित-ज्योतिष के ज्ञाताओं ने तथा रसायन-शास्त्रज्ञों ने आदमियों के लिए न कोई जंजीर बनाई, न कारागार। भूगर्भ-वेत्ताओं ने किसी नई यंत्रणा-पद्धति का आविष्कार नहीं किया। दार्शनिकों ने अपने पड़ौसियों को आग की बलि चढ़ाकर अपने कथन की सच्चाई का प्रमाण नहीं दिया। महान् नास्तिक और चिंतक सदा आदमी के कल्याण के लिए जिए।

सत्य की खोज करना, मानसिक ईमानदारी, दूसरों को सच्चाई के साथ अपनी बात करना अथवा ईमानदाराना शब्दों में अपने दिमाग का सही चित्र उपस्थित करना-यह एक श्रेष्ठ कार्य है। 1

10

दोनों रास्तों में से एक है-तंग मार्ग, जिस पर स्वार्थी लोग अकेले चलते हैं, जिस पर उनके बच्चे और पति-पत्नी भी साथ नहीं चल सकते। मिथ्या-वि वास के रेगिस्तान की यह तंग सड़क है। यदि इस रास्ते पर तुम्हें एक फूल दिखाई दे जाए, तो उसे न उठाना। यह लोभ है। उसके पत्तों एक सांप छिपा है। अपनी आंखें 'नए यरुशलमम' की ओर रखो। स्त्री, बच्चों अथवा मित्र की ओर पीछे मुड़कर न देखो। तुम केवल अपने-आपको बचाने की चिंता करो। भले ही जो लोग तुम्हें प्रेम करते हैं, वे सभी नरक में ही पड़े रहें, तुम स्वर्ग में प्रसन्न रह सकोगे। विश्वास रखो, श्रद्धा रखो और तुम पुरस्कृत होओगे। न दाईं ओर देखो और न बाईं ओर। सीधे नाक की सीध में चले चलो, तो तुम अपनी निकम्मी, शुष्क, स्वार्थी आत्मा की रक्षा कर लोगे। यह वह तंग सड़क है, जो पृथ्वी से ईसाइयों के हृदयहीन स्वर्ग की ओर जाती है। दूसरा रास्ता है-विशाल रास्ता। मुझे चौड़ा-रास्ता दीजिए, जो कम से कम इतना चौड़ा अवश्य हो कि हम सब उस पर मिलकर चल सकें। चौड़ा रास्ता, जहां पक्षी गाते हों, जहां सूर्य चमकता हो और जहां पानी के झरने कल-कल करते हों।

आओ, हम सारे संसार के साथ चौड़े रास्ते

पर चलें, विज्ञान और कला के साथ, संगीत और नाटक के साथ और उस सबके साथ जो प्रसन्न करता है, जो धड़कन पैदा करता है, जो संस्कृत बनाता है और जो शांति प्रदान करता है।

आओ हम पति-पत्नी, बच्चों और मित्रों के साथ इस चौड़ी सड़क पर चलें और उस तमाम आनंद तथा प्रेम के साथ जो जीवन के ऊषा-काल और जीवन को गोधूलि-बेला के विचित्र दिन में हमें प्राप्त हो सकता है।

यह संसार संगतरों का एक महान वृक्ष है, जो खिला है, जिस पर ऐसे फल लगे हैं, जो पके है और पक रहे हैं। प्रत्येक संगतरा अपना जीवन है। हम इसको इतना निचोड़ लें और इसमें जितना भी रस है, निकाल लें, ताकि मृत्यु के समय हम कह सकें-हमने जीवन-रस का पान कर लिया ओर अब उसमें सूखे छिलकों के अतिरिक्त कुछ शेष नहीं रहा। हम चौड़े और प्राकृतिक रास्ते पर चलें। हम आदमी के लिए जिएं।

संसार को मिथ्या-विश्वास के कारण, मजहब के कारण, पशु, पत्थर और परमात्मा की पूजा के कारण जो यंत्रणा भुगतनी पड़ी है, उसका विचार करने से ही आदमी पगला जा सकता है। अज्ञान और भय की लंबी रात्रि की बात सोचो, अतीत के दुख-दर्द की बात सोचो, उन दिनों की जो अब लौटकर नहीं आएंगे।

मैं देखता हूं। मैं देखता हूं। अंधेरी-गुफाओं में गैंडुली मारे हुए सांपों की जो अपने शिकार की प्रतीक्षा कर रहे हैं। मुझे दिखाई देते हैं, उनके खुले हुए जबड़े, उनकी चंचल जबानें, उनकी चमकती हुई आंखें और उनके निर्दयी दांत। मैं देखता हूं किस प्रकार वे नाग-देवता को संतुष्ट करने के लिए माता-पिता द्वारा दिए गए बच्चों को डस-डसकर मार डालते हैं।

मैं फिर देखता हूं। मुझे दिखाई देते हैं पत्थरों के वे मंदिर, जिन पर सोना जड़ा हुआ है। मुझे मानवी रक्त की लाल वेदिकाएं दिखाई देती हैं। मुझे वे पादरी-पुरोहित दिखाई देते हैं, जो लड़कियों की छाती में छुरे घोप देते हैं।

मैं फिर देखता हूं। मुझे दूसरे मंदिर और दूसरी वेदिकाएं दिखाई देती हैं, जहां बच्चों का मांस और रक्त आग की लपटों की भेंट चढ़ाया जाता है। मुझे और दूसरे मंदिर, दूसरे पुरोहित और दूसरी वेदिकाएं दिखाई देती हैं, जहां बैलों तथा भेड़ों के बच्चों का रक्त चूता है।

मैं फिर देखता हूं। मैं दूसरे मंदिर, दूसरे पादरी-पुरोहित और दूसरी वेदिकाएं देखता हूं, जिन पर आदमी की स्वतंत्रता बलिदान होती है। मैं देखता हूं। मैं देखता हूं परमात्मा के बड़े-बड़े गिरजाघर और किसानों की झोपड़ियां। मैं देखता हूं राजाओं और पण्डे-पुरोहितों के ठाट-बाट के कपड़े और ईमानदार आदमियों के चीथड़े।

मैं फिर देखता हूं। परमात्मा के प्रेमी आदमियों के हत्यारे हैं। मैं देखता हूं कि जो श्रेष्ठ हैं, वे कारागारों में पड़े हैं। मुझे दिखाई देते हैं, वे लोग जिन्हें देश-निकाला दे दिया गया है, जो दर-दर भटकते हैं, जिन्हें अछूत बना दिया गया है, जिन्हें शहीद कर दिया गया है, जिन्हें विधवा बना दिया गया है तथा जिन्हें अनाथ कर दिया गया है।

मैं देखता हूं कि पादरी-पुरोहितों ने सारे संसार को पद-दलित कर रखा है, स्वतंत्रता बेड़ियों में जकड़ी पड़ी है, हर सद्गुण एक अपराध बना हुआ है, हर अपराध एक सद्गुण बना हुआ है, बुद्धि से घृणा की जाती है, मूर्खता को पवित्रता का पद दिया जाता है, ढोंग के सिर पर ताज है तथा सम्मान का श्वेत-मस्तक लज्जा से ढका हुआ है।

मैं फिर देखता हूं। मुझे आशा की पूर्व दिशा के मनोहर आकाश पर ऊषा की सूचना देने वाली पहली पीली-किरण दिखाई देती है। मैं देखता हूं, और मुझे राख में से, रक्त में से तथा आंसुओं में से वे वीर बाहर आते दिखाई देते हैं, जो अतीत का बदला लेंगे और भविष्य को आशीर्वाद देंगे। मुझे एक भयानक युद्ध दिखाई देता है और उस भयानक युद्ध में सिंहासन डगमगाते, वेदिकाएं गिरती, जंजीरें टूटती तथा मत-परिवर्तन होते दिखाई देते हैं। ऊंचे से ऊंचे शिखर पर पवित्र प्रकाश पहुंच गया है। अरुणोदय हो गया है।

मैं फिर देखता हूं कि समुद्र-यात्री समुद्रों को पार कर रहे हैं। मैं देखता हूं कि आविष्कारक चतुराई से प्रकृति की शक्तियों को वश में कर रहे हैं। मैं देखता हूं कि बच्चों के लिए स्कूल बन रहे हैं।

शनैःशनैः पादरी-पुरोहितों का स्थान अध्यापक-प्रकृति के व्याख्याता ले रहे हैं। दार्शनिक पैदा हो रहे हैं। विचारक अपने मानसिक धन से संसार को मालामाल कर रहे हैं। वाणी सत्य भाषण से धनी हो रही है।

मैं फिर देखता हूं, किंतु अब भविष्य की ओर। पोप, पादरी-पुरोहित और राजा सब समाप्त हो गए हैं। वेदिकाएं और सिंहासन धूल में मिल गए हैं। पृथ्वी और आकाश के तानाशाह मिट गए हैं। देवता मर गए हैं। मानवता एक नए धर्म को स्वीकार करने जा रही है। यह इस संसार का धर्म है। यह शरीर, दिल और दिमाग का धर्म है-स्वास्थ्य और आनंद का धर्म है। मैं एक शांत संसार देखता हूं, जहां परिश्रम को उसका पूरा पुरस्कार मिलता है, जहां कारागार नहीं है, जहां दरिद्रों को काम देने वाले घर नहीं हैं, जहां पागलखाने नहीं हैं, जहां किसी को फांसी पर नहीं लटकाया जाता, जहां गरीब ईमानदार लड़की को पाप और मृत्यु में से कोई चुनाव नहीं करना पड़ता।

मैं एक संसार देखता हूं, जिसमें भिखमंगा अपना हाथ फैलाए हुए नहीं है, जहां कंजूस अपनी पथरीली आंखों से घूर नहीं सकता, जहां अभाव की दयनीय चीत्कार नहीं है, जहां अपराधी का मुर्झाया हुआ चेहरा नहीं है, जहां झूठ बोलने वाले होंठ नहीं हैं, और नहीं हैं, जहां निर्दय घृणापूर्ण आंखें।

मैं शरीर और दिमाग के रोगों से मुक्त एक नस्ल देखता हूं, सुंदर और सुडौल। और जैसे मैं देखता हूं मुझे जीवन लंबा होता दिखाई देता है, भय नष्ट होता दिखाई देता है, आनंद गहरा होता दिखाई देता है और प्रेम अधिक रंगीन। सारा संसार स्वतंत्र है। यह होकर ही रहेगा। क्रमशः

'सबसे खतरनाक..' फासीवाद की सियासत में

-सचिन जैन

अकेली नहीं होती है भीड़
भीड़ का एक राजा होता है
जो भीड़ से भी ज्यादा खतरनाक होता है
सामने न दिखाई देने वाला उसका राजा,
भीड़ अनियंत्रित नहीं होती है
भीड़ हर पल निर्देशित होती है
सबसे खतरनाक होता है
भीड़ के निर्देशक का दिखाई न देना।

भीड़ के हथियार कारखाने से नहीं आते हैं
भीड़ के हथियार बनाने के कारखाने
हमारे घरों में, हमारी बस्तियों में
हमारे पूजा स्थलों में लगाये जा चुके हैं,
भीड़ उद्देश्य हीन भी नहीं होती है
भीड़ का उद्देश्य होता है -
आजादी के विचार का कत्ल कर देना।

रोटी की विकराल भूख से
अब ज्यादा खतरनाक है
खबर के बाजार, फुटपाथ
और स्कूलों में भरपेट मिलने वाली
नफरत की खुराक,
खतरनाक वो वक्त होता है
जब सल्तनत भीड़ की
सरपरस्त हो जाती है।

कैसे लड़ेंगे जंग उस भीड़ से
जो मजहब की पनाह में पलकर
बड़ी होती है,
सच तो यह है
राजा भी दिखाई देता है
सच तो यह भी है
नियंत्रक भी दिखाई देता है
सबसे खतरनाक होता है
इन्हें देखकर अनदेखा करना।

इन्हें अपने अस्तित्व का
मानक स्वीकार कर लेना
सबसे खतरनाक होता है
भीड़ से सहज हो जाना,
सबसे खतरनाक होता है
भीड़ से बचने के लिए
भीड़ का हिस्सा बन जाना।

अंधविश्वास फैला रहे विज्ञान की कमाई खाने वाले

-संजीव खुदशाह

संयुक्त राष्ट्रसंघ ने वर्ष 2010 में एक रिपोर्ट पेश की थी, जिसमें भारत में 1987 से 2003 तक 2 हजार 556 महिलाओं को डायन या चुड़ैल कह कर मार देने की बात कही गई थी। एक दूसरी रिपोर्ट के मुताबिक भारत में 2011 में 240, 2012 में 119, 2013 में 160 हत्याएं अंधविश्वास के नाम पर की गइ्र। दुखद यह है कि इसे बढ़ाने में वे भी बड़ी भूमिका निभा रहे हैं जो विज्ञान की कमाई खाते है। बता रहे हैं संजीव खुदशाह

इक्कीसवीं सदी में समाज में अंधविश्वास घटने के बजाय बढ़ता जा रहा है। अंधविश्वास के दूसरे दर्जे भी हैं, जिनमें इसमें भूत है, चुड़ैल है और जिन्न आदि हैं। लोग मानते हैं कि यही सब जब किसी इंसान की जिस्म में जगह बनाकर रहने लग जाते हैं तो इसे असर होना, भूत, चुड़ैल आना कहते हैं। दुनिया की को सभ्यता, धर्म-मजहब इस बुरा से बची नहीं है। मुसलिमों में जिन्न का साया या बुरी आत्मा के असरात हों या हिदुओं में चुड़ैल का साया, या फिर ईसाइयों में घोस्ट की डरावनी छाया। हर तबके में यह अजाना डर था। दूसरी ओर, नास्तिक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण वाले लोगों का मानना है कि यह सब की वजह दिमागी फितूर है, जिसकी आड़ में कुछ ढोंगी बाबाओं, ओझाओं और दरगाहों पर रहने वाले लोगों की रोजी चल रही है। इस्लाम के विद्वान इसे कुफ्र या नाजायज़ करार देकर इसकी निंदा करते हैं। इस्लाम में किसी भी तरह के तावीज पहनने, बांधने की सख्त मनाही है। इसके बावजूद कुछ लोग अंधविश्वास की दुकानों के जरिए काला जादू, सिफली इल्म, वशीकरण जादू, तंत्र विद्या आदि के फेर में पड़ जाते हैं। महत्वपूर्ण यह है कि अंधविश्वास फैलाने में विज्ञान की कमाई खाने वाले डॅक्टर, इंजीनियर भी शामिल हैं और नेताओं के लिए तो यह वोट पाने का सबसे आसान तरीका।

जाहिर तौर पर सरकारें चुप हैं और मीडिया ऐसे ढोंगियों के प्रसार का सहयोगी बन चुका है। इसी अनदेखी का ही नतीजा है कि अंधविश्वास फैलाने वालों का बड़ा नेटवर्क इंटरनेट पर छाया हुआ है। लोग डॉक्टर से ज्यादा ऐसे ढोंगी तांत्रिकों पर यकीन करने लगे हैं। इन बहुरूपियों की शिकार ज्यादातर महिलाएं हो रही है और महिलाओं के जरिए पुरुष भी इनके शिकार बन रहे हैं। विड़ंबना तो यह है कि जिस जादू-टोने को विज्ञान मानने से इनकार करता रहा है आज उसी जन्मी तकनीक के सहारे तंत्र-मंत्र का जाल बिछा हुआ है। लोगों की महत्वकांक्षाएं बढ़ी हैं तो फर्जी लोगों का जाल भी बढ़ रहा है। चूंकि हर हाथ में फोन है और इंटरनेट पहुंच बढ़ रही है तो अंधविश्वास का कारोबार भी इसी के जरिए आपके पास तक पहुंच रहा है।

पिछले दिनों कुछ अखबारों में एक अध्यात्मिक समागम का दो सम्पूर्ण पृष्ठ वाला विज्ञापन प्रकाशित हुआ। साथ ही बड़े-बड़े होर्डिगं, फ्लेक्स, बैनर और पोस्टर पूरे रायपुर शहर में लगाए गए। विज्ञापन में या दावा किया गया कि ऐसे तमाम रोग जिसमें चिकित्सा विज्ञान नाकाम हो गया है। उन्हें इस दो दिवसीय समागम में ठीक किया जाएगा। इस विज्ञापन में बहुत सारे लाभार्थियों के फोटो सहित साक्षात्कार थे। इतना ही नहीं, केंद्रीय मंत्री समेत स्थानीय मंत्री एवं सेलिब्रिटी, फिल्म अभिनेता के साथ आशीर्वाद लेते हुए उस बाबा की तस्वीर थी।

दरअसल यह विज्ञापन सिर्फ अंधविश्वास को बढ़ावा देने वाला नहीं है। इस विज्ञापन के जरिये चिकित्सा जगत को चुनौती भी दी जा रही है। लेकिन इस विज्ञापन पर किसी भी डॉक्टर ने आपत्ति दर्ज नहीं कराई और ना ही किसी प्रकार का विरोध किया। डॉक्टरों के संघ ने चुप्पी साध ली। अपवाद में कुछेक डॉक्टर सोशल मीडिया पर इसकी चर्चा करते दिखे। डॉक्टरों की चुप्पी के बारे में कहा

जा रहा है कि उन्होंने विज्ञापन नहीं देखा हो या वे इन बातों से वाक़िफ़ नहीं होंगे। लेकिन यह बात गलत है। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि शहर में आयोजित इस कार्यक्रम में बहुत सारे सरकारी कर्मचारी-अधिकारी, इंजीनियर, डॉक्टर, आई ए एस, मंत्री नेता पहुंचे हुए थे। जाहिर तौर पर उनका मकसद विज्ञापन के अनुरूप ही रहा होगा।

इस संदर्भ में यह बताना जरूरी है कि देश के तमाम इंजीनियर और डॉक्टरों द्वारा ही प्रतिदिन किस प्रकार विज्ञान को चुनौती दी जा रही है।। एक बार रायपुर शहर के एक नामी डॉक्टर के पास जाना हुआ। इस डॉक्टर के पास अपॉयंटमेंट लेने के लिए 15 दिन पहले फोन करना पड़ता है और परामर्श फीस 600 रुपए के साथ दिनभर का इंतजार करना निहायत तौर पर जरूरी है, क्योंकि उनके मरीज़ों की संख्या काफी होती है। इसमें कोई शक नहीं कि वे बहुत ही बेहतर इलाज करते है। लेकिन जब उनके क्लीनिक रूम पर नजर पड़ी तो मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि उनकी टेबल पर व्यवसाय बढ़ाने हेतु तमाम अंधविश्वास की वस्तुएं रखी हुईं थीं। जैसे पानी में डूबा हुआ कछुआ, ताबीज, नींब-मिर्च और डॉक्टर के हाथों में बहुरंगी अंगूठियां। देश में वे अकेले डॉक्टर नहीं हैं जो इस प्रकार विज्ञान पर कम अंधविश्वास पर ज्यादा भरोसा करते है। बल्कि यूं कहें कि ज्यादा संख्या में ऐसे ही डॉकटर आप को मिलेंगे जो कहीं ना कहीं अंधविश्वास और टोने-टोटके का दामन थामे हैं।

इसी प्रकार एक नामी गिरामी आर्कीटेक्ट इंजीनियर के घर के सामने अजीब डिज़ाइन का पत्थर पड़ा हुआ था। मैंने कहा कि इस सुंदर घर में आपने इस बदरंग पत्थर को क्यों रखा है। उन्होंने बताया कि यह क्रिस्टल पत्थर है। इसे घर के सामने रखने से मेरे आय में बढ़ोत्तरी होगी। ऐसा उन्हें उनके एक दोस्त ने बताया जो स्वयं भी आई आई टी में पढ़कर इंजीनियर हैं।। फिर उनके आवास पर तमाम ऐसी अंधविश्वास वाली वस्तुएं अनायास ही दिख गयीं। इस कारण मुझे उनकी शिक्षा पर संदेह होने लगा। जाहिर है कि उन्हे भी अपने हुनर पर कम टोटके पर ज्यादा विश्वास है। राजस्थान भरतपुर के पूर्व सरकारी डॅक्टर ने तो बाक़ायदा एक मरीज को दवा देने के साथ-साथ प्रिस्क्रप्सन में टोने-टोटके करने की सलाह दी, जो सोशल मीडिया में काफी चर्चित भी रहा।

अब सवाल उठता है कि क्या हम ऐसे डॉक्टरों और इंजीनियरों से यह अपेक्षा कर सकते हैं कि वे अंधविश्वास के खिलाफ खड़े हो सकेंगे? उनका प्रतिरोध कर सकेंगे? क्या हम उन मंत्रियों और नेताओं से अपेक्षा कर सकते हैं जो सारी दुनिया में घूमते हैं और उनके उपर देश को अंधविश्वास से मुक्त कराने की जिम्मेवारी है?

बहरहाल आज देश में चुनौती विज्ञापन में दिखने वाला बाबा और अंधविश्वास फैलाने वाले व्यवसायी नहीं हैं । आज विज्ञान के लिए सबसे बड़ी चुनौती है खुद हमारे डॉक्टर, इंजीनियर, वकील, शासकीय कर्मचारी व अधिकारी मंत्री एवं नेता और वैज्ञानिक। अब सवाल उठता है कि समस्या क्या है और उसके समाधान क्या हैं? निश्चित तौर पर हमारी शिक्षा प्रणाली को धर्म से अलग करना होगा और अंधविश्वास पर एक विषय शामिल करना पड़ेगा ताकि अंधविश्वास और विज्ञान का घालमेल ना हो सके। यह विचार करना होगा कि दुनिया के सर्वश्रेष्ठ 100 विश्वविद्यालयों में भारत का एक भी विश्वविद्यालय क्यों नहीं शामिल है। हस्तक्षेप जरूरी है ताकि समाज विज्ञान के सहारे आगे बढ़े।

° ° °

मैडल हिम्मत और मेहनत से मिलते हैं। प्रार्थना करने से नहीं।

-पी.वी. सिंधु
बैडमिंटन खिलाड़ी

दुश्चिंता का रोग

-डा. दिव्या मंगला,

(बहुत बेचैन रहना, घबराए हुए रहना)

चिंता मत करो, कह देने से, खत्म नहीं होती चिंता

न जाने कितने बुद्धिशाली व्यक्ति इस राग के कारण अपनी पूरी क्षमता का इस्तेमाल नहीं कर पाते और अपने-आपको एक तुच्छ से जीवन का भागीदार बना लेते हैं। अनुमान है कि हर 20 में से एक भारतीय दुश्चिंता के रोग से पीड़ित है।

'चिंता चिता समान', यह कथन हमेशा सत्य साबित नहीं होता, क्योंकि अगर किसी को चिंता ही न हो तो वह कोई भी काम पूरा नहीं कर पाएगा। यह चिंता ही है जो छात्र को परीक्षा से पहले पढ़ने के लिए, माता-पिता को लड़की शादी के लिए पैसा जोड़ने व नौकरी के इच्छुक को इंटरव्यू में जाने से पहले तैयारी करने पर मजबूर कर देती है। इसलिए एक तरह से देखें तो चिंता लाभदायक सिध्द हुई, परंतु जब यही चिंता जरूरत से ज्यादा व बेकाबू हो जाए, तब यह दुश्चिंता बन मानसिक रोग का रूप धारण कर लेती है, जिसे दुश्चिंता रोग के नाम से जाना जाता है। चिंता, संकट धुन की तरह शरीर को खा कर शरीर को जिंदा लाश-सा बना देती है, यह कथन दुश्चिंता रोग के लिए बिल्कुल उपयुक्त है। मनोचिकित्सक के पास आनेवाले मरीजों में बहुत से दुश्चिंता रोग से पीड़ित होते हैं।

....

एक व्यक्ति हरीश की कहानी जानिए : हरीश की उम्र 27 वर्ष है, वह एक प्राईवेट कंपनी में चार्टेड एकाउंटैंट है। पिछले दो सालों से वह काफी परेशान है। उसकी कुछ परेशानियां हैं, जैसे चक्कर महसूस करना, घबराट, हाथ-पैरों में पसीना व दिल की धड़कन का बढ़ना। वह कभी-कभी मुंह में सूखापन व पूरे शरीर में कंपकंपी भी महसूस करता है। इसी कारण हरीश अपने एकाउंट्स के काम में ध्यान नहीं लगा पाता। ये परेशानियां पूरा दिन हरीश के साथ रहती हैं। यह जानकर कि कहीं उसको कोई दिल की बीमारी या खून की कमी तो नहीं है, वह अपने निजी डाक्टर से चेकअप कराता है, परंतु उसकी सभी जांचें सामान्य पाई जाती हैं। उसको कुछ विटामिन व एलप्रैक्स की गोलियां दे दी जाती है और डाक्टर से यह सुनकर कि 'ज्यादा टेंशन मत लिया करो' हरीश घर को वापिस हो लेता है। परंतु परेशानी वहीं की वहीं, जब तक एलप्रेक्स की गोली शरीर में रहती है, तब तक आराम, बाद में फिर वही परेशानियां उभर कर उसके सामने आने लगती हैं। कुछ महीनों बाद हरीश को निजी डाक्टर से सुझाव मिलता है कि वह किसी मनोचिकित्सक से मिले। मनोचिकित्सक से पूरी बातचीत करने पर पता चलता है कि दो साल पहले हरीश के पिता को दिल का गंभीर दौरा पड़ा था, जिसके बाद हरीश बहुत सोच-विचार करने लगा और धीरे-धीरे चिंताग्रस्त हो गया। हरीश ने यह भी बताया कि उसे हर समय अपने माता-पिता के खोने का डर लगा रहता है और गहराई में जाने पर ज्ञात हुआ कि हरीश को इस प्रकार के ख्याल भी आने लगे थे जैसे 'उसकी पत्नी उसको छोड़ देगी या फिर वह अच्छा पिता साबित नहीं हो पाएगा' इत्यादि। पिछले दो सालों से हरीश ने दूसरों के यहां आना-जाना भी कम कर दिया था। अच्छा पढ़ा-लिखा व बुद्धिमान होने के बावजूद वह ज्यादातर कार्यों में असफल हो रहा था। हरीश हमेशा अपने लक्षणों को छुपाने की कोशिश करता रहता था, ताकि कोई उसे कमजोर दिल का न समझ ले। हरीश का कुछ खास दवाओं एवं मनोचिकित्सक विधियों द्वारा उपचार किया गया, जिससे वह चिंतामुक्त जीवन जीने

लगा। उसे लगातार कई महीनों तक इलाज की जरूरत पड़ती रही। इलाज के बाद हरीश एक कामयाब व्यक्ति साबित हुआ ....

लक्षण : दुश्चिंता का रोग पुरुषों व स्त्रियों दोनों में पाया जाता है परंतु पुरुषों की अपेक्षा औरतों में यह रोग ज्यादा देखने को मिलता है। यह रोग किसी भी उम्र में हो सकता है। आमतौर पर 20 वर्ष से अधिक उम्र के लोग मनोचिकित्सक के पास इस समस्या के साथ आते हैं। इस रोग से जूझ रहे व्यक्तियों में निम्नलिखित लक्षण पाए जाते हैं :

1. बेचैनी व तनाव अनुभव करना, घबराए हुए रहना, कंपकंपी छूटना, धड़कन का बढ़ना।
2. जल्दी थक जाना, चिड़चिड़ापन व हाथ पैर ठंडे रहना।
3. मांसपेशियों में खिंचाव, सिर दर्द।
4. मुंह में सूखापन, ज्यादा पसीना आना, सांस की गति बढ़ना, बार-बार मितलाई (मिचली) लगना, पतला शौच व बार-बार पेशाब आना।
5. नींद आने में कठिनाई, डरावने सपने, जरा से शोर से ही नींद का बार-बार खुलना।
6. आराम से एक जगह टिक कर न बैठ पाना।
7. गलत विचार दिमाग में आना जैसे कोई नुक्सान हो जाएगा, परिवार का कोई सदस्य बीमार हो जाएगा या फिर भयानक दुर्घटना घट जाएगी।
8. नकारात्मक सोच पैदा होने जैसे, उदाहरण के लिए एक मां का अपने बेटे के स्वास्थ्य के बारे में लगातार चिंता करना कि कहीं उसे चोट न लग जाए या बीमार न हो जाए, जबकि वह आराम से स्कूल में पढ़ रहा होता है। पति को खांसी, हलका बुखार या मामूली जुकाम होने पर पत्नी को यह लगना कि कहीं वह गंभीर बीमारी टाइफाइड या कैंसर का शिकार तो नहीं है, भी दुश्चिंता का ही एक लक्षण है।

1. थोड़ी सी आवाज जैसे टैलीफोन या दरवाजे की घंटी बजने पर हर बार चौंक जाना।
2. अखबार में दुर्घटना से संबंधित घटनाओं को पढ़कर दिमाग पर गहरा नकारात्मक असर महसूस करना।
3. दिमाग में लगातार नकारात्मक विचारों के आने के कारण मानसिक थकान का अनुभव करना।
4. व्यवहार में अधीरता का आना जैसे बैठे-बैठे हाथ मलना, कमरे में इध्र-उधर परेशान हुए घूमना।
5. रात में डरावने व उल्टे-सीधे सपनों का आना।
6. बदहजमी व यौन संबंधी समस्याओं का पैदा होना।
7. कुछ लोग इस रोग में ऐसा भी अनुभव करते हैं जैसे पेट में कोई चीज मथी जा रही हो।

दिए गए सभी लक्षण जरूरी नहीं, एक ही व्यक्ति में मौजूद हों। इस रोग से ग्रस्त हर व्यक्ति के लक्षण दूसरे से भिन्न हो सकते हैं।

रोग के कारण

(आखिर कैसे पैदा होता है चिंता का रोग?)

1. जैविक कारण : दिमाग में मौजूद सैरोटोनिन, नोरएपिनेफरीन आदि रसायनों में आया असंतुलन इस रोग का कारण माना गया है।
2. आनुवांशिक कारण : इस रोग से पीड़ित व्यक्तियों के सगे-संबंधियों में शरीर का तंत्रिका तंत्र ज्यादा संवेदनशील पाया जाता है। इसी कारण उनमें इस रोग के होने की संभावना आम लोगों की तुलना में थोड़ी बढ़ जाती है।
3. मनोवैज्ञानिक कारण : चेतन व अवचेतन मन में हो रहा मानसिक द्वंद्व इस रोग का कारण बन सकता है।

बचपन में लगा मानसिक आघात बाद में इस रोग को जन्म दे सकता है। जब व्यक्ति अपनी हीनता की भावना पर काबू प्राप्त करना चाहे, परंतु सफल न हो पाए, तब भी यह रोग पनप सकता है। जीवन के विभिन्न क्षेत्रों जैसे व्यवसाय, परिवार, सामाजिक, धार्मिक व नैतिक विषयों में पैदा हुआ संघर्ष रोग का कारण बन सकता है।

कुछ व्यक्ति जो त्रुटिपूर्ण ढंग से केवल नकारात्मक पहलुओं पर ध्यान देते हैं और अपनी क्षमता का मूल्यांकन कम आंकते हैं। अकसर चिंता ग्रस्त हो सकते हैं।

कुछ विशेष व्यक्तित्व वाले लोग उदाहरण के लिए अंतर्मुखी व्यक्ति इस समस्या के ज्यादा शिकार होते देखे गए हैं।

हर व्यक्ति स्वतंत्र इच्छा लिए पैदा होता है, परंतु इसके इस्तेमाल के लिए विशेष साहस की जरूरत पड़ती है। जो लोग इस चुनौती में फेल हो जाते हैं, वो अकसर दुश्चिंता का शिकार हो जाते हैं।

दुश्चिंता रोग जैसे लक्षण अन्य शारीरिक बीमारियों जैसे थायराइड की समस्या, एनीमिया आदि में भी पैदा हो सकते हैं। इसलिए रोग की जड़ तक पहुंचने के लिए कई बार रोग की विशेष जांच-पड़ताल भी करवानी पड़ सकती है।

बड़ी-बड़ी हस्तियां जैसे मशहूर उपन्यासकार बर्नाड शॉ, फ्रांस का भाग्य विधाता डीगॉल, अमेरिका का सबसे अमीर व्यक्ति जोन डी.रौकफेलर, आस्ट्रेलिया का मशहूर संगीतकार डेनियल जॉन आदि भी दुश्चिंता का शिकार हुए थे। परंतु इन्होंने इस समस्या पर काबू पा अपना जीवन सफल बनाया।

-साभार

डॉ.दिनेश मिश्र इंग्लैंड में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला में आमंत्रित

अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति के अध्यक्ष डॉ दिनेश मिश्र को लैंकेस्टर यूनिवर्सिटी, यूनाइटेड किंगडम द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला में भारत से आमंत्रित किया गया है, जहां वे डायन प्रताड़ना और मानवाधिकार के मुद्दे पर आयोजित इस कार्यशाला में व्याख्यान देंगे। महिला प्रताड़ना और उनके मानवाधिकार हनन के कारणों में एक प्रमुख कारण अंधविश्वास और डायन के संदेह में प्रताड़ना भी है जो एशिया के देशों, अफ्रीका सहित अनेक देशों में जारी है।

इंगलैंड की लैंकेस्टर यूनिवर्सिटी में 10 और 11 जनवरी को आयोजित इस कार्यशाला में यूरोप, अफ्रीका आस्ट्रेलिया, ब्रिटेन के मानवाधिकर आयोग के अध्यक्ष, विश्वविद्यालयों के प्रतिनिधि, सामाजिक कार्यकर्ता सहित यूनाइटेड नेशंस के मानवाधिकार परिषद पादाधिकारी भाग लेंगे। इसके पूर्व डॉ. दिनेश मिश्र ने 2016 में यूनाइटेड नेशंस द्वारा जिनेवा में डायन के संदेह में महिला प्रताड़ना और मानव अधिकर विषय पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला में भाग लिया और व्याख्यान दिया था। साथ ही 2014 में बेल्जियम में आयोजित संगोष्ठी में व्याख्यान दियाथा। ज्ञात हो डॉ दिनेश मिश्र पिछले 23 वर्षो से जादू टोने के संदेह में महिला प्रताड़ना, डायन (टोनही) प्रताड़ना, उनके मानवाधिकार विभिन्न अंधविश्वासों और सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ लगातार कार्य कर रहे हैं जिसके तहत देश भर में 2000 से अधिक सभाएं कर चुके हैं। स्कूल, कॉलेजों, सामाजिक संगठनों के साथ कार्यशालाओं में 1 लाख से अधिक विद्यार्थियों को प्रशिक्षित कर चुके हैं। छत्तीसगढ़ के अलावा मध्य प्रदेश, आसाम, आंध्रप्रदेश, राजस्थान, बिहार, उत्तरप्रदेश, कर्नाटक, में महिला प्रताड़ना, टोनही प्रताड़ना के खिलाफ जन जागरण तथा प्रदेश में कानून बनाने के लिए किये गए उनके कार्यो के लिए उन्हें 2006 में राज्य अलंकरण पडित रविशंकर शुक्ल सम्मान दिया जा चुका है। वही देश भर में वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास एवं अंधविश्वास निर्मूलन के लिए किए गए कार्यो के लिए 2007 में भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय द्वारा नेशनल एवार्ड प्रदान किया जा चुका है। प्रदेश महिला आयोग द्वारा 2006 में महिला उत्पीड़न के लिए किए गए कार्यो के लिए भी उन्हें सम्मानित किया जा चुका है।

-रिपोर्टः डॉ शैलेश जाधव, सचिव

भारत के प्रख्यात नास्तिक

शिब नरायन रे

–डा. रणजीत

बंगाल के प्रसिद्ध विचारक, शिक्षाविद्, दार्शिनिक 20वीं सदी भारत के साहित्यिक समालोचक व उग्र मानववादी और मार्क्सवादी-क्रांतिकारी तथा मानवेंद्र नाथ रॉय पर कई पुस्तकें लिखने वाले शिबनरायन रे के बारे में एक बार बट्रेंड रसेल न ेटिप्पणी की थी कि उनका दृष्टिकोण दुनिया के किसी भी समकालीन लेखक के दृष्टिकोण से ज्यादा तर्कपूर्ण है।

रे का जन्म 20 जनवरी, 1921 ई. को कोलकाता में पिता, प्रो. उपेन्द्र नाथ विद्याभूषण शास्त्री व मां, कवयित्री राजकुमारी रॉय से हुआ था। उनके पिता ने स्वयं संस्कृत और अंग्रेजी में 50 पुस्तकें लिखी थीं। माँ भी पत्र-पत्रिकाओं में निरंतर लिखा करती थीं। कोई आश्चर्य नहीं कि शिबनरायन ने 20 वर्ष का होने से पहले ही लिखना प्रारम्भ कर दिया था। उन्होंने कोलकाता विश्वविद्यालय से अंग्रेजी भाषा व साहित्य में बी.ए. पास किया और सिद्ध कॉलेज, कोलकाता में प्रवक्ता नियुक्त हो गये, जहां वे 15 सालों तक इस पद पर रहे। इसी बीच उन्होंने गीता रे से शादी कर ली। बाद में वे मेलबर्न विश्विद्यालय में भारतीय अध्ययन विभाग के विभागाध्यक्ष हो गये। उसके बाद वे लंदन विश्वविद्यालय, शिकागो विश्वविद्यालय तथा फ्रांस, जर्मनी, आस्ट्रिया, इटली, नीदरलैंड, डेनमार्क, स्वीट्जरलैंड, हंगरी, फ्रैंकफर्ट तथा स्टैनफर्ड के विश्वविद्यालयों में विज़िटिंग प्रोफेसर रहे। वे विश्वभारती विश्विद्यालय में रवीन्द्र भवन के निदेशक (1981-1983) भी रहे। वे इण्डियन रिनेसाँ इंस्टीट्यूट (1960-69) के कार्यकार सचिव भी रहे। फरवरी 26, 2008 ई. को शांति निकेतन में उनका देहांत हो गया। जैसा कि उनकी इच्छा थी, उनका मृत शरीर छात्रों के अध्ययन के लिए मेडिकल कॉलेज को दे दिया गया।

रे युवा अवस्था में साम्यवाद से प्रभावित हो गये थे। रूस में स्टालिन की साम्यवादी सरकार के अत्याचारों के विरुद्ध होकर रे ने अपने विचारों में परिवर्तन किया और इन्हीं परिवर्तित विचारों को बाद में उग्र मानववाद का नाम दिया गया। इस रेडिकल मानववाद के मूल विचारक ॲम .ॲन. रॉय थे और वे अपने इन विचारों पर शिवनरायन सहित कई कामरेडों से विचार-विमार्श किया करते थे। बाद में एन् 1948 ई. में ॲम.ऍन.रॉय ने अपना मानववादी आंदोलन प्रारम्भ किया तो शिबनरायन उनके साथ थे। उग्र मानववादियों का कहना था कि धर्म और पार्टीबंदी तथा अंधविश्वास और ईश्वरवाद मनुष्य की तर्कबद्ध को गुलाम बनाकर उसकी स्वतंत्र व स्वाभाविक-चिंतन शक्ति को बाधित करते हैं। फिर अपने आचरण में भी गुलाम बन जाता है। अतः उग्र मानववादी मनुष्य को किसी एक धर्म, किसी एक विचारधारा, किसी एक राजनीति, किसी एक ईश्वर व किसी भी विश्वास मात्र से बंधने से रोकना चाहते थे। वे साम्यवाद के विरुद्ध नहीं थे पर आदमी को उसका गुलाम बनते भी नहीं देखना चाहते थे। इस दिशा में शिबनरायन का लेखन विश्व स्तर का माना जाता है।

सन् 1980 ई. में मेलबर्न में रहते हुए शिबनरायन रे ने कोलकाता से बंगला भाषा में एक पत्रिका निकालनी प्रारम्भ की। नाम था 'जिज्ञासा'। पत्रिका शीघ्र ही साहित्य, इतिहास, संस्कृति और दर्शन का मुखपत्र बन गई और बंगाल भर में बुद्धिजीवियों द्वारा पढ़ी जाने लगी। शिबनरायन ने ॲम.ॲन.रॉय के साहित्य को चार पुस्तक खण्डों में प्रकाशित किया है। मृत्यु के समय वे ॲम.ॲन.राय की जीवन लिख रहे थे।

रे ने अपने जीवन के प्रारम्भ में कविताएभी

शेष पृष्ठ 34 पर

सच्चे वैज्ञानिक

गिरोल्मो फ्राकस्टोरो और लुई पाश्चर

आज अधिकतर लोग जानते हैं कि संक्रामक रोग सूक्ष्म जीवों की वजह से होते हैं। लेकिन हमेशा ऐसा नहीं था। किसी समय आम लोग ही नहीं बल्कि डझॅक्टर भी इन रोगों का कारण खराब हवा या प्रदूषण को मानते थे। मलेरिया का तो नाम ही उसका (खराब हवा) इसलिए पड़ा था। सिर्फ मलेरिया ही नहीं बल्कि काली मौत के नाम से प्रसिद्ध प्लेग, हैजा, चेचक आदि तमाम बीमारियां खराब हवा की वजह से मानी जाती थी। यह तो पढे-लिखे लोग मानते थे। अधिकतर लोग तो इसको ईश्वरीय प्रकोप ही समझते थे। बहरहाल ई वरीय प्रकोप की थ्योरी की ही तरह इसका भी कोई वैज्ञानिक आधार नहीं था। फिर 16वीं सदी में इटली में एक डॉक्टर हुए। उनका नाम था गिरोल्मो फ्राकस्टोरो। वे एक डॉक्टर थे, एक कवि भी थे (ऐसा कम ही देखने को मिलता है) साथ ही वे एक गणितज्ञ थे, भूगोल शास्त्री और खगोल शास्त्री भी थे। मतलब वह बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। 19 साल की उम्र में वह विश्वविद्यालय के प्रोफेसर बन चुके थे। अपनी डॉक्टरी की प्रैक्टिस के दौरान 1546 में उन्होंने कहा कि ये महामारियां हवा की खराबी नहीं बल्कि छोटे छोटे कणों की वजह से होती हैं। इन कणों को उन्होंने स्पोर्स का नाम दिया। हालांकि उन्होंने यह स्पष्ट नहीं किया कि ये स्पोर्स असल में सूक्ष्म जीव हैं। लेकिन फिर भी उस समय के हिसाब से यह चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में एक छलांग थी जिसने अगली तीन शताब्दियों तक अपना लोहा मनवाया। भले ही यह थ्योरी काफी हद तक सही थी लेकिन अभी यह पूरी तरह से विकसित नहीं थी।

उन्नीसवीं सदी में भी जबकि पूरे यूरोप में चेचक के टीके लगाए जा रहे थे और कामयाब भी हो रहे थे, किसी को यह पता नहीं था कि ये टीके असल में काम कैसे करते हैं। फिर 19वीं सदी में फ्रांस में एक वैज्ञानिक हुए। लुई पा चर। जब लुई पाश्चर पढ़ाई कर रहे थे तो उन्हें कोई मेधावी छात्र नहीं समझा जाता था। वे एक औसत छात्र माने जाते थे। लेकिन इसी औसत छात्र ने आगे चल कर प्रचलित चिकित्सा विज्ञान की बुनियादें हिला देनी थी। रसायन शास्त्र की कुछ खोजों के अलावा विज्ञान को उनकी सबसे महत्वपूर्ण देन है-रोगों का जीवाणु सिद्धांत यानि Germ theory of Diseases., गिरोल्मो फ्राकस्टोरो के इस सिद्धांत को उन्होंने आगे विकसित करते हुए बताया कि संक्रामक रोग सूक्ष्म जीवों की वजह से होते हैं। इस सिद्धांत के प्रयोग से उन्होंने सिद्ध किया कि खमीर बनाने की प्रक्रिया को धीमा किया जा सकता है। इसी सिद्धांत के द्वारा उन्होंने दूध को संरक्षित करने की तरकीब खोज निकाली। उन्होंने बताया कि दूध को पहले उच्च्य तापमान पर गर्म कर दिया जाए और फिर तेजी से बहुत कम तापमान पर ठंडा कर दिया जाए तो दूध में मौजूद जीवाणु तेजी से मर जाते हैं जिससे दूध लंबे समय तक खराब नहीं होता। उनकी बताई हुई यह तकनीक डेढ़ सदी बाद आज भी दूध को संरक्षित करने के लिए प्रयोग में लाई जाती है। इसके खोजकर्ता लुई पाश्चर के नाम पर इस तकनीक को पाश्चरीकरण कहा जाता है। जर्म थ्योरी की उनकी खोज युगांतरकारी सिद्ध हुई। इसके बाद चिकित्सा विज्ञान ने एक लंबी छलांग लगाई और वस्तुओं पर से घातक जीवाणुओं को खत्म करने के नए नए तरीके खोज निकाला गए। इसी सिद्धांत पर आगे चल कर पहली एंटीबायोटिक पेनिसिलिन की भी खोज हुई और चिकित्सा विज्ञान को रोगों के खिलाफ लड़ाई में एक महत्वपूर्ण अस्त्र प्राप्त हुआ जिसकी मदद से अनेक असाध्य रोगों पर विजय प्राप्त की

गई। इसके अलावा लुई पाश्चर ने एक अन्य घातक रोग एंथ्रेक्स की वैक्सीन का आविष्कार किया। रेबीज एक और घातक रोग है जिसके होने का मतलब है शर्तिया मृत्यु। इस रोग की वैक्सीन बनाने का श्रेय भी हमारे इसी औसत छात्र रहे महान वैज्ञानिक को जाता है। जब इस वैक्सीन के लिए लुई पा चर जानवरों पर प्रयोग कर रहे थे तब कोई मरीज न होने की वजह से उन्होंने सोच लिया था कि वे खुद पर ही इस वैक्सीन का प्रयोग करेंगे। यह जानते हुए भी कि यह बीमारी शर्तिया जानलेवा है और चूक का अर्थ मृत्यु है, मानवता का यह सेवक खुशी खुशी अपनी जान की बाजी लगा देना चाहता था। सौभाग्य से इसकी नौबत नहीं आयी और रेबिड कुत्ते का काटा हुआ एक मरीज उन्हें मिल गया जिसके माता पिता ने वैक्सीन लगाने की अनुमति दे दी। यह प्रयोग सफल रहा और मरीज की जान बच गई। इसके बाद उन्होंने साढ़े तीन सौ मरीजों का सफलतापूर्वक इलाज किया। एकमात्र असफलता उन्हें तब मिली जब उनके पास एक एडवांस्ड स्टेज में बीमार लड़की को लाया गया। उस बच्ची ने लुई पाश्चर के हाथों में दम तोड़ दिया। आंखों में आंसू लिए इस महान वैज्ञानिक ने उसके मा-ंबाप से कहा था, काश मैं आपकी बच्ची को बचा पाता।

1895 में 73 साल की आयु में उनकी मत्यु हुई। अंतिम दिन मत्यु शैया पर उनके आखिरी शब्द थे, मैं और जवान होना चाहता हूँ ताकि मैं बीमारियों के बारे में और अधिक अध्ययन कर सकूं। लुई पाश्चर एक कठिन परिश्रमी व्यक्ति थे। उन्होंने दूसरे वैज्ञानिकों को सलाह दी थी कि जिस व्यक्ति को कठिन परिश्रम करने की आदत पड़ जाए तो वह उसके बिना नहीं जी सकता। कठिन परिश्रम इस दुनिया में हर चीज की नींव है। वैज्ञानिक रिसर्च के लिए ज्यादा सुविधाएं हों इस हेतु वे जीवन पर्यत लगे रहे थे और उन्होंने फ्रांस की सरकार से सुविधाएं लेने में सफलता भी पाई थी। नेपोलियन तृतीय के सामने उन्होंने दलील रखी थी कि बिना प्रयोगशाला के एक वैज्ञानिक ऐसे ही होता है जैसे बिना हथियार के एक सैनिक।

गिरोल्मो फ्राकस्टोरो और लुई पाश्चर ऐसे वैज्ञानिक थे जिन्होंने बीमारियों को लेकर पूरे चिकित्सा विज्ञान की अवधारणा को बदल दिया था। 19वीं सदी में लुई पाश्चर अकेले ऐसे आदमी थे जिन्होंने इंसान की औसत उम्र को बढ़ा दिया था। मानवता इन महान वैज्ञानिकों और इनकी काबिलियत की सदा ऋणी रहेगी।

पृष्ठ 32 का शेष (शिब नरायन रे

लिखी थीं जो कविता-संग्रह के रूप में प्रकाशित हो चुकी हैं। उनके कुल प्रकाशनों की संख्या 50 से अधि क है। प्रमुख प्रकाशन निम्न हैं-

- *प्रेक्षिता (इसका विषय है आधुनिक अंग्रेजी साहित्यका पतन)*
- *मौमाची तंत्र*
- *साहितय चिंता, 1956*
- *कोथार-तोमारमन (कविता)*
- *ॲम.ॲन. रॉय दार्शनिक-क्रांतिकारी, 1959*
- *नायकेर मृत्यु, 1960*
- *प्रवासेर जर्नल*
- *रेडिकालिज़्म*
- *आई हैव सीन बंगाल्स फेस, 1973*
- *गांधी, इडिया ऑझउ द वर्ल्ड*
- *कबिर निर्वासिन ओ अनन्य भावना, 1973*
- *इन क्वेस्ट ऑफ फ्रीडम-ए-स्टडी ऑफ द लाईफ ॲण्ड वर्क्स ऑफ ॲम.ॲन.रॉय*
- *बिटविन रिनेसां ॲण्ड रिवोल्यूशन (लेख)*
- *फ्राम द ब्रोकेन नेस्ट टु विश्व भारती*
- *ए न्यू रिनेसां*
- *स्वदेश, स्वकाल, स्वजन, 1996*
- *सेलेक्टेड वर्क्स ऑफ अम.ॲन.रॉय (4 खण्ड)*
- *बंगाल रिनेसां : 8 द फसर्ट फेज़*
- *द यूनिवर्सिटी ऑफ मैन : द मेसेज ऑफ रोम्या रोब्लां*
- *वियतनाम सीन फ्राम ईस्ट ॲण्ड वेस्ट*
- *इन मैन्स ओन इमेज (सहलेखिका एलेन रॉय)*

बीज मंत्र

-मेघ राज मित्र
मोबा. 9888787440

लगभग एक दशक पहले की बात है। एक अध्यापिका के युवा पुत्र की मृत्यु बिजली का करंट लगने से हो गई थी। किसी तांत्रिक के कुछ मंत्रों के जाप से उस की मृतक शरीर को मिट्टी में दबा दिया गया। घटना के समय हाजिर व्यक्तियों में से बहुतों का दावा था कि मंत्रों के प्रभाव से मिट्टी में दबाया गया नौजवान प्रमात्मा का नाम जपता हुआ ऊठ खड़ा होगा। वह अध्यापिका किसी समय मेरे साथ स्कूल में पढ़ाया करती थी। और मैं भी चाहता था कि उसका पुत्र इस तरह ठीक हो जाए। उसका नौजवान पुत्र वापिस आ जाए परन्तु सब कुछ तो चाहने से नहीं होता। कई बार जमीनी हकीकतें कुछ और होती हैं। बडे दावे किए जाते हैं कि गुरूवानी के कुछ शब्द सुनने अथवा सुनाने से कैंसर के मरीज ठीक हो जाते हैं। गीता में से कुछ श्लोक पढने से टी.बी. सदा के लिए अलोप हो जाती है। कुरान की आयतें भी कईयों की रीड की हड्डी का मनका ठीक देती हैं। बाइबल में से एक कहानी गूंगे को बोलने और लंगडों का चलने लगा देती हैं। हम तर्कशील चाहते हैं कि ऐसा हो जाए। अस्पतालों की जरूरत ही न रहे, डाक्टर दफा हो जाएं, गरीब लोगों के घर महंगे उपचार के कारण बरबाद होने से बच जाएं, मरीजों के दुख दर्द मिट जाएं परन्तु अफसोस ऐसा नहीं हो सकता। बीमारियां किसी कारण से ही शरीर को नुकसान पहुंचाती हैं। कई बार यह कारण शरीर में से किसी पद्रार्थ की कमी होती है और कई बार किसी प्रदार्थ की मात्रा ज्यादा बढ जाती है।

कुछ शब्दों का उच्चारण न तो शारीरिक कमियों को पूरा कर सकता है और न ही किसी शारीरिक लाभ को नष्ट कर सकता है। बेचारे जीवाणुओं के दिमाग भी इतने विकसित नहीं होते हैं कि वह शब्दों के अर्थ ही समझ सकें। बीमारियों को शब्दों से शरीर से बाहर निकालने की कला मेरे तो समझ से बाहर है। परन्तु धामिक शब्दों में एक कला जरूर है कि इस का असर लोगों की जेबों पर जरूर हो जाता है। मैं हजारों शब्द उच्चारण वालों को जानता हूं जो लोगों की जेबों में से शब्दों के उच्चारण से ही पैसे निकलवा रहे हैं। वह लोगों को शब्दों से ठीक होने वाले व्यक्तियों की हजारों उदाहरणें पेश कर देते हैं। उन को पता है कि लोगों ने तो इन बातों की जांच, पडताल करनी ही नहीं है और न ही उन्होनें यह जानने की कोशिश करनी है मरीज जिस बीमारी का दावा करता है क्या उसको कि वास्वव में ही यह बीमारी थी। अथवा जब उस के शब्दों से ठीक होने का दावा किया जाता है तो उस के बाद बीमारी के खत्म होने की पुष्टि डाक्टरों ने की अथवा नहीं या वह बीमारी कुछ समय बाद अपने आप ठीक होने वाली तो नहीं थी। अब भारद्वाज के केस को ले लें। सूरत गुजरात का एक शहर है। इस शहर के पत्रकार भारद्वाज को हड्डियों के कैंसर की बीमारी थी। लगभग साढे तीन वर्ष बेहतरीन अस्पतालों में वह अपना उपचार करवाता रहा। अपने कुछ रिशतेदारों के कहने पर आखिर उस ने अपने उपचार को अलविदा कह दी और सन् 2002 में पंजाब के शहर अमृतसर आ कर गुरबाणी का पाठ एक दो दिन सुना। कहा जाता है कि वह इस से ठीक हो गया। उस के सभी टेस्ट नार्मल हो गए। इस घटना के विवरण तो सभी समाचार पत्रों में छाप दिए गए परन्तु 2006 में उस की मृत्यु जो उसी कैंसर से हई, का समाचार किसी भी समाचार पत्र ने नहीं छापा। आज सैंकडे वैबसाइटों पर वासु भारद्वाज के गुरबानी के पाठ से ठीक होने का मामला तो दर्ज है, परन्तु किसी एक ने भी उस की मौत की पुष्टि नहीं की।

असल में अंधविश्वास फैला देने वाली खबरें तो बड़ी बड़ी सुर्खियां लगा कर छापी जाती हैं परन्तु मिटाने वाले समाचारों को समाचार पत्रों में जगह देने की कंजूसी की जाती है। यह जानबूझ कर किया जाता है या अनजाने में। यह बात कभी भी मेरी समझ में नहीं

आया ?

कहा जाता है कि बीज मंत्रों से बीमारियां ठीक करने की सलाह देने से रोगियों का को नुक्सान नहीं होता। कई बार तो यह सलाह भी दी जाती है कि डॉक्टरी उपचार भी करवाते रहें और बीज मंत्रों का इस्तेमाल भी करते रहें। अगर मरीज ठीक हो गया तो ठीक होने का सेहरा अपने सिर बांध लेना है, अगर मर गया तो घड़ा डॉक्टरों के सिर फोड देना है। उनके तो दोनों हाथों में लड्डू होता है। मरीज ने यह परख तो करनी ही नहीं कि मुझे ठीक बीज मंत्रों ने किया है अथवा डॉक्टरी उपचार ने ? बीज मंत्रों के असर के दावे हजारों मरीजों का उपचार बीच में ही छुड़वा कर उन को मृत्यु के नजदीक ले जाते हैं। इस बात की प्रवाह मेरे प्यारे भारत में किसी को भी नहीं। लीडरों से बात करें तो कहेंगे अगर बीस तीस हजार मर भी जाएंगे तो भी भारत को को फर्क नहीं पड़ता।

मैं यह तो नहीं कह सकता कि शब्दों का मनुष्य पर असर मानसिक भी नहीं होता। मैं ऐसे असर खुद भी सुने और देखे भी हैं। मेरे गांव के एक बजुर्ग ने एक बार मुझे बताया कि एक दुकानदार के घर में कुछ कमरों में रूई भरी पड़ी थी। उस के लड़के की नयी-नयी शादी हुई थी। उस की पुत्रबधु उसके पति से पूछने लगी कि यह रूई क्यों रखी है ? तो उस ने मजाक में कह दिया यह रूई तूने कातनी है। बस यह बात उस के दिमाग पर घर कर गई। वह हर समय यही कहती रही कि मैं इतनी रूईं कैसे कातूंगी ? मायके वालों से अपनी लड़की की यह हालत देखी न गई। और वह उसे अपने गांव ले आए। एक पड़ोसी ने जब इस लड़की की हालत जानी तो वह घर वालों को कहने लगा कि मैं आपकी लड़की को ठीक कर सकता हूं और घर वाले उस को लड़की के पास ले गए। वह लड़की को कहने लगा कि कल मैं तेरे ससुराल गया गया था, वहां तो आप के घर आग लग गई। लडकी पूछने लगी कि रूई भी जल गई है ? उसने कह कि हां रूई भी जल गई है। बस इतना कहने की जरूरत थी कि लड़की ठीक हो गई ।

इस तरह की ही एक घटना हमारी तर्कशील लहर के इतिहास में घट चुकी हैं। बठिंडा के हाजी रतन गुरूद्वारे के साथ वाले घर की बात है कि घर वाला बंदूक खरीद लाया। पत्नी पूछने लगी कि आप बंदूक क्यों लाये हो ? तो वह कहने लगा कि बंदूकें घर में आई बुरी ही होती हैं क्या ? तो इस से कोई मुझे मार देगा या मैं किसी को मार कर जेल चला जाऊंगा। बस इतना कहने पर ही घर में घटनायों का सिलसिला शुरू हो गया। जब भी उसके पति द्वारा बंदूक के बारे में कही हुई बात उस स्त्री के दिमाग में आती तो घर में कहीं न कहीं आग लग जाती। कई बार मिठास से कहे गए शब्द दवा भी बन जाते हैं और कड़वे शब्द डंक भी मार जाते हैं। शब्दों से रोगों का उपचार एक धंधा ही है, इस से ज्यादा कुछ भी नहीं। मिनीसोटा का एक डॉक्टर निलोन अपनी पुस्तक में लिखता है कि 1970 में उस ने पादरी कुलमैंन से ठीक होने के दावे किए हुए पच्चीस व्यक्तियों की लिस्ट ली। एक स्त्री जिस को फेफडों का कैंसर कहा गया था। उस को तो यह बीमारी है ही नहीं थी। एक रीड की हड्डी के मरीज को ठीक होने से बैल्ट उतारने का सुझाव दे दिया गया। दूसरे दिन उस की रीड की हड्डी टूट गई । चार महीने के बाद उस की मौत हो गई ।

बीज मंत्रों से उपचार करने वालों के दावों की पड़ताल करने की जरूरत है। अगर उन के दावे सच्चे हैं तो अस्पताल उन के सपुर्द कर देने चाहिए। अगर वह अपने दावों पर पूरे नहीं उतरते तो उन की जगह जेलों में होनी चाहिए।

अंत में मैं अपने लोगों को यह सलाह दूंगा कि 1935 में भारत में औसत आयु पैंतीस बर्ष थी। बीज मंत्र तो उस समय भी थे। परन्तु अगर आज यह भारत में ही 68 बर्ष हो चुकी है। यह किसी भी बीज मंत्र ने नहीं की अपितु आधुनिक डॉक्टरी उपचारों ने की है। चेचक, टी.बी., पोलियो जैसी बीमारियां अगर आज काबू में आ रही हैं तो यह किसी बीज मंत्र कर के नहीं अपितु नवीनतम् डाक्टरी खोजों से हुई हैं। धरती पर मौजूद कुछ व्यक्ति इतिहास का पहिया पीछे को मोड़ने के लिए प्रयत्न कर रहे हैं। हालांकि वह यह जानते हैं कि अगर उन को पुरातन युग वाली हालतों में जीवन व्यतीत करने के लिए कहा जाए तो वह उसी समय हाथ खड़े कर जाएंगे। परन्तु फिर भी बीते युग उन को अच्छे लगते हैं ? क्यों बीते युग के प्रशंसकों की जेबें हमेशा खुली रहती हैं।

अमेरिका में 700 पादरियों पर लगे यौन शौषण के आरोप

न्यूयॉर्क टाइम्जन्यूज सर्विस

शिकागोः अमेरिका के इलिनोइस प्रांत में करीब 700 पादरियों पर बच्चों के यौन शोषण का आरोप है। यह संख्या इसके पूर्व कैथोलिक चर्च द्वारा बताई गईसंख्या से कहीं ज्यादा है। इतनी अधिक संख्या में कैथोलिक पादरियों पर यौनशोषण के आरोपों का खुलासा अमेरिका के मध्य पश्चिमी राज्य के शीर्ष अभियोजक ने किया है।

इलिनोइस की अटॉर्नी जनरल लीसा मैडगन ने कहा कि चर्च ने ऐसे पदरियों की संख्या 185 बताई थी, लेकिन उनके कार्यालय की जांच में यह संख्या काफी कम पाई गई है। अटॉर्नी जनरल के कार्यालय की ओर से जारी बयान में शोषण के आरोपों से निपटने में चर्च की असमर्थता की आलोचना की गई है। कार्यालय के मुताबिक न सिर्फ आरोपों की जांच अधूरी बल्कि कई मामलों में कानून का पालन तक नहीं किया गया है ।

(अमर उजाला दिः21-12-2018)

फलाहारी बाबा रेप का दोषी करार, उम्रकैद

जयपुर। छत्तीसगढ़ के बिलासपुर की 21 वर्षीय मेडिकल छात्रा के यौन शोषण मामले में बुधवार को अलवर के मधुसूदन आश्रम के संत स्वामी कौशलेंद्र प्रपन्नाचारी उर्फ फलाहारी बाबा को अलवर की कोर्ट ने दोषी करार देते हुए आजीवन कारावास की सजा सुनाई है। साथ ही उन पर एक लाख रुपए का जुर्माना भी लगाया है।

अलवर की अपर जिला एवं सेशन कोर्ट क्रम संख्या एक राजेंद्र शर्मा ने मंगलवार को सुनवाई पूरी करने के बाद फैसला सुरक्षित रख लिया था। कोर्ट ने फलाहारी बाबा को गत 11 जनवरी को 376(2) (च) व 506(ए) ध ााराओं में दोषी माना था। गौरतलब है कि गत 11 सितम्बर 2017 को छात्रा ने महिला थाने में फलाहारी बाबा के खिलाफ यौन शोषण को लेकर मामला दर्ज कराया था, जिसके बाद 20 सितम्बर 2017 को ये मामला अलवर के अरावली थाने में दर्ज किया गया और 23 सितम्बर 2017 को बाबा को गिरफ्तार कर लिया गया था। पीड़िता ने बताया था कि उसका 7 अगस्त 2017 को अलवर के आश्रम में ही यौन शोषण किया गया था। पुलिस ने इस मामले में 40 पन्नों की चार्जशीट पेश की थी।

-अमर उजाला 27-9-18

अंधविश्वास विरोधी कानून के तहत पाखंडी बाबा को मिली 10 साल की सजा

ठाणे- 24 अक्तूबरः मुंबई के ठाणे की एक अदालत ने एक पाखंडी बाबा को एक औरत को गर्भधारण में मदद करने के बहाने उसके और उसके पति को अपने सामने अश्लील हरकत के लिए मजबूर करने के जुर्म में 10 साल की सख्त कैद की सजा सुनाई है। जिला जज पी.पी.यादव ने मंगलवार को दोषी योगेश कुपेकर को महाराष्ट्र मानव बलि व अन्य गैर मानव, शैतानी, तांतरिक प्रथा और काला जादू रोकथाम व उन्मूलन एक्ट 2013 और आई.पी.सी. की धाराएं 376 और 354 के तहत दोषी ठहराया है। अदालत ने उस पर 30 हज़ार रुपये का जुर्माना भी लगाया है। पति-पत्नी ने वर्ष 2016 में ठाणे पुलिस को शिकायत की थी जिस पर पाखंडी बाबा द्वारा पर औरत के साथ बलात्कार करने व उस के साथ अश्लील हरकत करने और उन से 10 हज़ार रूपये ठगने का दोष लगाया गया था।

अंधविश्वास के चलते

तांत्रिक बोला घर में खजाना गड़ा है, गड्ढा खोदा तो निकलने लगी अजीब आवाज़ें..

कलियरः दिल्ली निवासी एक व्यक्ति से घर में नकली तांत्रिक बनकर दो लोगों ने घर में करोड़ों रुपये का खजाना गड़ा होने की बात कही। इसके बाद वहां जो हुआ वह आगे जानिए। युवकों ने खजाना गड़ा होने का झांसा देकर लाखों की ठगी करने के मामले में पुलिस ने दो आरोपियों को गिरफ्तार किया हैं जबकि दो आरोपी पुलिस के हत्थे नहीं चढ़ सके। पुलिस फरार दोनों आरोपियों के बार में जानकारी जुटा रही है। पकड़े गए आरोपी मूल रूप से सहारनपुर के रहने वाले हैं। और वर्तमान में देहरादून में रह रहे थे। कलियर थाने में एसपी देहात ने प्रेसवार्ता कर ठगी की वारदात को खुलासा किया। उन्होंने बताया कि 20 जनवरी, 2018 को संजय पुत्र जयदयाल दुआ निवासी विजय नगर दिल्ली ने घर में करोड़ों का खजाना गड़ा होने के नाम पर लाखों की ठगी की शिकायत कलियर थाने में की थी। शिकायत में बताया कि दिसंबर 2017 में उनके घर में कुछ परेशानी चल रही थी। इस दौरान किसी परिचित ने सहारनपुर में रहने वाले मुकर्रम पुत्र सिंकदर निवासी पठानपुरा झंझेड़ी के बारे में बताया कि वह झाड़-फूंक कर घर की परेशानी दूर कर देंगे। उसने धोखे से नकली अशर्फियां और मोबाइल में एक रिकार्डिंग चालू कर दी। इस पर उन्होंने मकुर्रम से संपर्क किया और उसे अपने घर दिल्ली ल गया। यहां उसने झाड़ फूंक के नाम पर 50 हजार रुपये लिए। इसके बाद चारों दिल्ली पहुंचे और पूजापाठ के बहाने गड्ढा खुदवाकर धोखे से नकली अशर्फियां और मोबाइल में रिकार्डिंग चालू कर रख दी। इसके बाद संजय को रिकार्डिंग सुनाकर घर में ऊपरी हवा होने की बात कही। एसपी ने बताया कि चारों ने संजय को विश्वास में लेकर कलियर में अमेरिकन दुंबों की बलि के नाम पर साढ़े तीन लाख रूपये ले लिए। इसके बाद चारों फिर संजय के घर पहुंचे और जमीन में तीन अलग अलग डिब्बों को घर में गाड़ दिया और बताया कि डिब्बों में 81 कि. गा. 700 ग्राम ख़ज़ाना है। इसे निकालने के नाम पर पूजा-पाठ के लिए फिर से चार लाख 30 हज़ार रूपये ले लिए। इसके बाद उन्होंने बताया कि खजाने में उनका दो करोड़ का हिस्सा है।

नाबालिग से दुष्कर्म में स्वामी गिरफ्तार

जमशेदपुर में भारत सेवाश्रम संघ के सुजीत महाराज को पुलिस ने नाबालिग से दुष्कर्म के आरोप में गिरफ्तार किया है। पुलिस ने बताया कि झारखंड पूर्व सिंहभाम में 15 वर्षीया किशोरी ने 18 दिसंबर को आश्रम के सुजीत महाराज पर दुष्कर्म का आरोप लगाया था। रिश्तेदार का इलाज कराने के लिए जमशेदपुर के एमजीएम अस्पताल आए थे। वहीं उसकी छोटी बहन दोपहर में सोनारी कागलनगर आश्रम गई थी, जिसके बाद छोटे महारज ने दुष्कर्म किया । (अमर उजाला दिः21-12-2018)

इक तितली ने मुझसे पूछा तुमसा गुलों में कौन है
तुम तो बीच भंवर में हो, वहां साहिलों में कौन है
मंदिर-मस्जिद दीन-धर्म की बात खूब वे करता है,
है अगर वो समझदार तो फिर ज़ाहिलों में कौन है।

-मनजीत भोला

जब सीने में जलन हो

खाने के बाद जब आपके सीने में जलन हो तो इसे डाक्टरी भाषा में हार्टबर्न कहते हैं। यह जलन दिल में नहीं होती, बल्कि आहार नली में होती है। दरअसल हमारे पेट में भोजन को पचाने के लिए अम्ल स्राव होता है। यह अम्लीय पाचन रस जब आहार नली में पहुंच जाता है, तो तेजी से जलन व दर्द होता है। ग्रास नली की सतह बेहद कोमल होती है, जो पाचन-रस के अम्लीय स्राव को सह नहीं पाती, इससे नली में बेहद जलन होती है। सीने में जलन होने का कारण हमारे खानपान से ही है। ज्यादातर तैलीय एवं मसालेदार चीजें खाने से सीने में जलन होती है, इसलिए ऐसे खाद्य पदार्थो का सेवन कम से कम करना चाहिए, जिससे जलन हो। हो सकता है यह जलन कभी-कभी होती है या ऐसा भी हो सकता है कि यह जलन लगातार रहती है फिर भी अपने खान-पान पर बराबर ध्यान देना होगा। अपने खान-पान पर नियंत्रण रखें। कुछ बातों का विशेष ध्यान रखें।

खाने में वसा की मात्रा कम रखें और कार्बोहाइड्रेट का मुख्यतः सेवन करें। चॉकलेट, कॉफी, चाय, अल्कोहल आदि का सेवन बिल्कुल कम कर दें। इससे शरीर में एसिड बढ़ता है।

कोल्ड ड्रिंक का प्रयोग जलन कम नहीं करता, बल्कि यह पेट को फुलाने का काम करती है। साइट्रस फल जसे संतरा, मौसमी, टमाटर आदि जलन में नुक्सान पहुंचाते हैं।

दूध भी अम्लीयता को बढ़ावा देता है। दूध में पाये जाने वाले विभिन्न अवयव जैसे कैल्शियम, प्रोटीन, वसा आदि अम्ल को बढ़ाते हैं। अतः ऐसे पदार्थो से यथासंभव प्रहेज रखना ही बेहतर है। इसके अतिरिक्त

हमेशा धीरे-धीरे खाना चाहिए। इससे लार का स्राव होता है, जिससे ज्यादा अम्ल या एसिड नहीं बन पाता। इस तरह से सीने की जलन में आराम मिलता है।

लिवर दरुस्त, सेहत बने तंदरुस्त

लीवर हमारे शरीर के प्रमुख अंगों में से एक है। ज्यादा तेलयुक्त खाने, ज्यादा शराब पीने और अन्य कई वजहों से यह दूषित हो जाता है। कई ऐसे खाद्य पदार्थ हैं जो स्वाभाविक रूप से लिवर को साफ रखते हैं।

हरी सब्जियांः हरी और पत्तेदार सब्जियां लिवर से विषैले तत्त्वों को बाहर निकालने में मददगार होती हैं। इनमें मौजूद क्लोरोफिल लिवर में खतरनाक रसायनों के प्रभावों को कम करता है।

लहसुनः लहसुन में लिवर एंजाइम को सक्रिय करने की क्षमता होती है, जो शरीर से विषाक्त पदार्थो को बाहर निकलवाने में मदद करती है। लहसुन में मौजूद ऐलिसिन और सेलेनियम, लिवर को सफाई करने में मदद करते हैं।

चुकंदर और गाजरः ये दोनों ही फ्लेवोनॉयड और बीटा कैरोटीन से समृद्ध होते हैं। इन्हें खाने से लिवर की कोशिकाओं की मरम्मत होती है और यह ठीक से कार्य करता है।

ब्रोकलीः यह विटामिन और मिनरल से भरपूर होता हैं इसमें ग्लूकोसिनोलेट्स मौजूद होते हैं। ये तत्त्व लिवर में एंजाइम पैदा करते हैं जिनकी मदद से लिवर की गंदगी बाहर निकल जाती है।

सेबः सेब में मौजूद पेक्टिन नाम तत्त्व शरीर को शुद्ध और पाचन तंत्र से विषाक्त पदार्थो को रिलीज़ करने के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण होता है।

एवोकाडोः एवोकाडो में ग्लूटाथोनिन और मोनो सेचुरेटेड फैट मौजूद होते हैं। इन तत्त्वों से लिवर की सफाई के साथ कोशिकाओं और ऊत्तकों को नया बनाने में मदद मिलती है।

खोज खबर

अच्छे शौक पालें, दुरुस्त रहेगा दिमाग

कैंब्रिज विश्वविद्यलाय के अध्ययन में पाया गया है कि उम्र के साथ-साथ दिमाग का आकार भी छोटा होता जाता है, लेकिन कुछ लोगों को स्मरण शक्ति और आई क्यू उम्र बढ़ने के बावजूद अच्छी बनी रहती है। शोधकर्ताओं के अनुसार युवावस्था में दिमाग को ज्यादा इस्तेमाल करन`स`दिमाग लचीला बना रहता है। 'न्यूरोबायोलॉजी ऑफ एजिंग जर्नल' में प्रकाशित इस अध्ययन से जुड़े डेनिस चानके अनुसार, हमारा दिमाग कुछ हार्डवेयर के साथ ही शुरुआत करतार है, लेकिन इसे और अधिक मजबूत बनाया जा सकता है। इसे संज्ञानात्मक रिजर्व कहा जाता है। डॉक्टर चान का कहना है कि 35 से 65 साल के बीच आप जो कुछ करते हैं, उससे 65 से 88 साल की उम्र के 205 लोगों के दिमाग का एमआरआई किया। इसके बाद उनका आईक्यू टेस्ट लिया गया और उनके शौक के बारे में पूछा गया। उनके शौक को बौद्धिक, शारीरिक और सामाजिक गतिविधियों की तन श्रेणियों में बांटा गया। शोध में पाया गया कि जवानी में की गई गतिविधियों से बाद में उनका आई क्यू निर्धारित हुआ। इससे पहले अन्य शोध में पाया गया था कि जो लोग शिक्षा में ज्यादा समय बिताते हैं, चुनौतीपूर्ण काम करते हैं, उन लोगों में बाद में डिमेंशिया का खता भी कम होता है। डॉक्टर चान इस अध्ययन से काफी उत्साहित हैं। उनके अनुसार इससे फर्क नहीं पड़ता कि आप क्या काम करते हैं या कहां रहते हैं। परिजनों बात करना या किताब पढ़ने में कुछ खर्च नहीं होता। यह सब आदतें आपके लिए अच्छी हैं।

ढाई घंटे व्यायाम से कम होती है भूलने की बीमारी

बर्लिन-सप्ताह में ढाई घंटे तक व्यायाम करने से अल्जाइमर का खतरा रोका जा सकता है एक शोध के मुताबिक डीएनए में स्थायी गड़बड़िय होने से अल्जामर का खतरा रहता है। इसलिए यदि हर हफ्ते ढाई घंटे व्यायाम किया जाए, तो बीमारी से छुटकारा मिल सकता है। जर्मनी के यूनिवर्सिटी हस्पताल आफ टूबीनगेन के शोधकर्ताओं ने बताय कि एडीएडी एक दुर्लभ आनुवांशिक बीमारी है, जिसमें कम उम्र में ही भूलना शुरू हो जाता है। जर्नल 'अल्जाइमर एंड डिमेंशिया' में प्रकाशित इस शोध के भीतर याददाश्त और शारीरिक गतिविधियों में महत्वपूर्ण संबंध दिखाया गया है।

-एजेंसी अमर उजाला ✶

पांच ग्राम से अधिक नमक खाने से सेहत को नुक्सान

नई दिल्ली। पब्लिक हेल्थ फाउंडेशन आफ इंडिया के शोध के मुताबिक व्यस्क भारतियों में ज्यादा नमक खाने की आदत है, जो डब्ल्यूएचओ द्वारा निर्धारित मात्रा से ज्यादा है। डब्ल्यूएचओ सिफारिश में एक व्यस्क को दिन में पांच ग्राम से ज्यादा नमक नहीं खाने की सलाह दी गई है। शोध के मुताबिक दिल्ली और हरियाणा में नमक का सेवन प्रतिदिन 9.5 ग्राम और आंध्र प्रदेश में प्रतिदिन 10.4 ग्राम पाया गया, जिसका रक्तचाप पर हानिकारक प्रभाव पड़ता है। इससे कार्डियोवैस्कुलर बीमारियों की आशंका बढ़ती है। शोध में नमक सीमित करने को कहा गया है। *-एजेंसी अमर उजाला* ✶

बच्चों का कोना

खराब ट्यूब लाई से रोशनी

ट्यूब लाई की खराब हो गई हुई पायली (रॉड) से भी आप रोशनी उत्पन्न कर सकते है। इसके लिए आपको चाहिए सिर्फ एक बैलून।

इस तरह से करें

▶यह प्रयोग आपको एकदम अंधेरे कमरे में ही करना होगा, कमरे में जरा सी भी रोशनी नहीं रहनी चाहिए।

▶ बलून फुला कर बांध लें और उसे ऊनी कपड़े या बगैर तेल लग बालों पर रगड़ें। बलून आवेशित हो जाता है। आवेशित बलून ट्यूब लाईट की पायली के पास लाएं। जिस जग आप बलूनलाते हैं, पायली के उस हिस्से से रोशनी निकलने लगती है। (पायली पर बलून या सिंथेटिक कपड़ा रगड़ कर भी रोशनी उत्पन्न कर सकते हैं।)

कुछ चर्चाः

▶ट्यूब लाईट की पायली बनाते समय उसकी भीतरी दीवारों फलोरोसेंट पाउडर लगा दिया जाता है और पायली में से अधिकांश हवा निकाल कर थोड़ी सी पारे की वाष्प भर दी जाती है। पायली के पास आवेशित बलून लाते ही, पारे की वाष्प भी आवेशित हो जाती है। वाष्प के आवेशित कण बलून की ओर आकर्षित होते हैं। जब ये कण फ्लोरोसंट पाउडर (इसमें फॉस्फोरस रहता है) से टकराती हैं तो पाउडर चमक उठता है और पाउडर प्रकाश उत्सर्जित करता है।

मिट्टी में से लौह-कण निकालिए

चुंबक से गतिविधियां करते समय अक्सर दो दिक्कतें आती हैं। पहली, लोहे का बुरादा कहां से लाएं और दूसरी - जब लोहे का बुरादा चुंबक से चिपक जाता है, उसे चुंबक से अलग कैसे किया जाए। इन दिक्कतों को कम करने में शायद यह गतिविधि कुछ मदद कर सकती है। इसके लिए चाहिए एक चुंबक और पोलिथिन बैग।

इस तरह से करेंः

▶ चुंबक को पोलिथिन बैग में रखकर बैग को अपने आंगन की मिट्टी या रेत में घुमाएं। मिट्टी में मौजूद लौह-कण बैग पर चिपक जाएंगे।

▶ अब बैग को एक कागज पर रखकर बैग से चुंबक निकाल लें। लौह-कण कागज पर इकट्ठा हो जायेंगें। इन लौह-कणों के साथ अभी अशुद्धियां भी शामिल हैं।

▶ अब अशुद्धि अलग करेंगे। इकट्ठा किए हुए कणों को कागज पर फैला लें। एक बार फिर चुंबक को बैग में रखकर कागज के ऊपर से घुमाना है। घुश्माते समय ध्यान रखना है कि इस बार चुंबक कागज से थोड़ा दूर ही रहे, बहुत पास न आए। लौह-कण छलांग लगाकर चुंबक के पास चले जाते हैं और अशुद्धियां पीछे छूट जाती हैं। इस बार चुंबक वाली बैग से चिपके कण गाढ़े रंग के होंगे बनिस्बत उनके जो कागज़ पर ही छूट गए हें।

कुछ चर्चाः

पोलिथिन बैग की वजह से लौह-कणों को चुंबक से अलग करना आसान हो जाता है। इससे चुंबक साफ-सुथरा भी रहता है। जो पदार्थ चुंबक द्वारा आकर्षित होते हैं उन्हें चुंबकीय पदार्थ कहते हैं। लोहे के अलावा कोबाल्ट और निकले में भी चुंबकीय गुण रहते हैं।

तर्कशील हलचल

पूण्डरी में तर्कशील सोसायटी हरियाणा की राज्य स्तरीय बैठक सम्पन्न

दिनांक 18 नवंबर, 2018 को तर्कशील सोसायटी हरियाणा की द्विमासिक बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता तर्कशील पथ पत्रिका के संपादक बलवंत सिंह प्राध्यापक ने की। सभी तर्कशील प्रतिनिधियों का आपसी परिचय करवाने के पश्चात् सर्व प्रथम हरबलास भड़ुंगपुर ने अपने विचार रखे। उन्होंने अपने तर्कशील बननेके अनुभव साझा किये तथा बताया कि शुरू-शुरू में डॉ. ए.टी. कोवूर की पुस्तक 'देव और दानव' पढ़ने के पश्चात् उनकी सोच पूरी तरह से बदल गई औरउन्होंने गांव की गोगामाड़ी का ताला अपने आप खुल जाने के अंधविश्वास को चुनौती दे दी। एक तरफ हजारों अंधविश्वासी लोगों की भीड़ और दूसरी तरफ वैज्ञानिक चिंतन वाला एक अकेला योद्धा। अंत में जीत वैज्ञाानिक चिंतन की हुई और गोगा माड़ी का भक्त अपने साथ हजारों अंधविश्वासी अनुयायियों के साथ लाजवाब और शर्मिंदा खड़ा था।

साथी जगत सिंह साकरा ने अपने अनुभव साझाा करते हुए बताया कि उन्होंने कई बार धर्म के ठेकेदार विद्वानों के सामने जब विज्ञान सम्मत सवाल खड़े किए तो वे निरुतर हो कर चले जाते रहे। लक्ष्मी आनंद सजी ने खेतीबाड़ी को तर्कशीलता के साथ जोड़ कर अपनी बात रखी। साथी परविन्द्र सिंह सफीदों ने जोर दे कर कहा कि हमें 'तर्कशील पथ' पत्रिका की सदस्य संख्या बढ़ाने के लिए विभिन्न कंपनियों एवं सम्पन्न लोगों से विज्ञापन एकत्रित करने चाहिएं।

साथी राकेश कुमार ने जादू के विभिन्न ट्रिक दिखाकर उनके रहस्यों के बारे में जानकारी प्रदान की। पूण्डरी इकाई के प्रधान मानसिंह की सपुत्री कनिका ने भी जादू के ट्रिक दिखा कर अपनी जादू की कला का लोहा मनवाया। साथी बलदेव सिंह महरोक ने हरियाणवी रागनी का विशेष प्रस्तुतिकरण करके तर्कशील प्रतिनिधियों से खूब वाहवाही लूटी।

इसके साथ-साथ टहल सिंह गिल, सुभाष तितरम एवं कृष्ण राजौंद ने भी समाज में अंधविश्वास फैलने के कारणों एवं उनके निदान के बारे में अपने-अपने विचार रखे।

प्राध्यापक बलवन्त सिंह ने अपनी बात रखते हुए कहा कि सभ्यता के शुरूआती दौर से ही चालाक एवं धूर्त लोग धर्म का लबादा पहन कर मानवता हितैषी लोगों को पेरशान करते चले आ रहे हैं। यूरोप में भी चर्च के प्रभाव में धार्मिक लोगों ने मानवतावादियों एवं वैज्ञानिकों का कत्लेआम किया है। वर्तमान दौर में भारत में भी तर्कशास्त्रियों पर धर्म की खाल पहने भेड़ियों के हमले बढ़ते चले जा रहे हैं। अब समय की जरूरत है कि वैज्ञानिक चिंतन वाले लोगों एवं मानवता के हितैषियों को एकजुट कहो कर आडम्बर फैलाने वाले लोगों का मुकाबला करना पड़ेगा। इसके लिए तर्कशील एवं विज्ञान सम्मत साहित्य बेहतरीन भूमिका निभा सकता है। अतः हम सब का दायित्व बन जाता है कि 'तर्कशील पथ' पत्रिका का अधिक से अधिक प्रचार प्रसार किया जाए और तर्कशील साहित्य को देश के कोने-कोने तक पहुंचाने की विस्तृत योजना बनाई जाए।

अंत में साथी मान सिंह पूण्डरी ने कार्यक्रम में पहुंचे सभी साथियों का धन्यवाद किया। कार्यक्रम के आयोजन में पूण्डरी के साथी कृष्ण हलवाई, रामफल एवं मानसिंह तथा उनके अन्य साथियों ने अपना विशेष योगदान दिया।

०००

तर्कशील साहित्य वैन द्वारा विद्यार्थियों को किया जागरूक...

10 दिसंबर से पूरे दस दिनों के लिए तर्कशील साहित्य वैन इकाई कालांवाली के सहयोग से हरियाणा के सिरसा जिला में चली।हर रोज 2 से तीन स्कूलों में तर्कशील प्रोग्राम किये जाते रहे। गांव तारुआना से शुरू होकर पक्का शहीदां, कुरंगावाली, ओढ़ां ,नुहियांवाली, कालांवाली, मिठड़ी, जलालआना, सिरसा, फरमाई कलां, भरोखां, किंगरा, जंडवाला, चौटाला, अबूबशहर, गोरीवाला और कालूआना के विभिन्न स्कूलों में तर्कशील साहित्य वैन पहुंची।

इन जगहों पर तर्कशील विचार जादू के ट्रिक्स, मॉडल,वैज्ञानिक प्रयोगों द्वारा विद्यार्थियों को प्राकृतिक, वैज्ञानिक सिद्धांतों, नियमों की जानकारी प्रदान की जाती। इन गतिविधियों के दौरान स्कूलों में अध्यापकों व विद्यर्थियों की रुचि देखने लायक थी। इन प्रयोगों के ईलावा विद्यर्थियों को अन्धविश्वास से निकलने और वैज्ञानिक विचारों से सम्पन्न करने के लिए भूत-प्रेत, जिन्न-चुड़ैल, प्रेत आत्माओं, ओपरी-पराई जैसी अवधारणाओं को मनोवैज्ञान की समझ देकर समझाया गया। चेतन, अवचेतन और अर्धचेतन मन की अवस्थाओं व सपनों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी दी गई। तर्कशीलों द्वारा हल किये गए केसों की रिपोर्टो के माध्यम से ऐसी स्थितियों से निपटने के तरीके बताए गए।

दुनियां में कहीं भी चमत्कार नहीं होता इसका कुप्रचार किया जाता है। समाज में फैलती विभिन्न अफवाहों जैसे महिलाओं की चोटी कटने के पीछे की सचाई, ब्रेन पीडिया का सच, मूर्तियों को दूध पिलाना, बिज्जू की अफवाहें, ट्यूब्वेल का चमत्कारी पानी का रहस्य, भूतों वाली हवेली आदि अनेकों रहस्यों का पर्दाफाश करके विद्यार्थियों को तथ्यों को जानने के लिए वैज्ञानिक पहुंच अपनाने की सीख दी गई।

बहुत सारी जगह इन बातों के करने के बाद विद्यार्थियों द्वारा की गई टिपणियां हमारे लिए और कार्य करने की प्रेरणा बनती गई। एक लड़की बोली ''सर आपने हमें मनोवैज्ञान का पाठ पढ़ा दिया, मेरे मोहल्ले में एक औरत जिसे लोग ओपरी-पराई, कसर होना कहते हैं, अब मैं समझ गई हूँ उसे हिस्टीरिया (मानसिक रोग) है, जिसका पक्का ईलाज मनोचकित्सक, काउंसलर से ही करवाना चाहिए।'' एक अन्य लॉकर से पैसे, सोना गायब होने की केस रिपोर्ट सुनने के बाद लड़की बोली, ''सर, मेरी मम्मी का आधा सोना बन्द अलमारी में से गायब हो गया था, एक तांत्रिक बन्द अलमारी से सोना गायब किसी दैवीय शक्ति का किया कराया कह कर हमें गुमराह करता था ये आज पता चला।''

एक अध्यापक ने हमें कहा, ''आपने हमारा कार्य आसान कर दिया क्योंकि आपने वैज्ञान के बहुत सारे कंसैप्ट क्लियर कर दिए...''

प्रोग्राम समाप्ति पर साहित्य वैन की खिड़कियां खोल दी जाती जिसको कलास वाईज बच्चे पुस्तकों का अवलोकन करते और अध्यापकों के सहयोग से उन्हें खरीदते। हिंदी भाषाई क्षेत्र के लिए वैन में हिंदी साहित्य का विशेष प्रबन्ध किया गया था।जिसमें खासकर प्रोग्रेसिव बाल साहित्य बच्चों के लिए विशेष आकर्षण रहा। अध्यापकों ने भी बड़ी संख्या में साहित्य खरीदा तथा कुछ स्कूल लाइब्रेरियों के लिए भी प्रोग्रेसिव साहित्य लिया गया।

इस वैन के संचालक परमजीत सिंह के साथ अलग-अलग समय के लिए अलग तर्कशील सरगर्म कार्यकर्ता शिड्यूल के अनुसार गये। जिसमें मुख्य रूप से राजिंदर भदौड़ तर्कशील सोसाइटी पंजाब के प्रमुख ने भी दो दिन लगाये, जगदीश सिंघपुरा, शमशेर चोरमार, दर्शन जलालआना, कालूराम भारूखेड़ा, हरचरण सिंह, कुलदीप जलालआना और अजायब जलाआना छः दिनों के लिए वैन के साथ रहे।

रिपोर्ट : अजायब जलालआना
मोः 9416724331

आंखों के सामने कत्ल होता देखने पर.......

बलवंत सिंह, लैक्चरार

वैशाली बी.ए. फाईनल की छात्रा थी। वह पढ़ाई लिखाई में बहुत अच्छी थी। उसके पिता सुरेश ने अपने गांव में खेतीबाड़ी का कार्य छोड़ कर शहर में बिल्डिंग मैटीरियल का बिजनेस शुरू किया था। कुछ ही वर्षों में सुरेश का व्यापार पूरी तरह से स्थापित हो गया था। अतः सुरेश ने गांव वाली जमीन में खेतीबाड़ी की जिम्मेदारी अपने भाई को सौंप दी थी और अपने परिवार को भी अपने पास शहर में बुला लिया था। वैशाली जब शहर में आई r c og 10̊2 की परीक्षा उत्तीर्ण कर चुकी थी। शहर में आ कर उसने शहर के एक प्रतिष्ठित कालेज में बी.ए. प्रथम वर्ष में दाखिला ले लिया था। पिता का कारोबार अच्छा होने के कारण वैशाली के पास जीवन की प्रत्येक सुख-सुविधा मौजूद थी। पिता ने उसे कालेज में आने जाने के लिए नई एक्टिवा ले दी थी, जिससे उसका कालेज में अकेले आना-जाना बहुत आसान हो गया था। शहर का खुलापन वाला माहौल उसे अत्यंत पसंद आ रहा था। इस के बावजूद भी वह काफी संवेदनशील स्वभाव वाली लड़की थी। छोटी-छोटी बात पर भी वह कई बार बहुत जज़्बाती हो जाया करती थी।

अचानक वैशाली के हंसते-खेलते जीवन में भूकम्प सा आ गया । अचानक ही उसे अजीब किस्म के दौरे पड़ने शुरू हो गये। दौरे के समय कभी तो वह काफी लम्बे समय तक बेसुध पड़ी रहती और कभी ऊंची आवाज़ में बोलने लग जाती कि 'मैं सत्यम् हूं', जब यह चौराहे वाले पीपल के नीचे से जा रही थी, तब से यह मेरी पकड़ में आ गई है। अब मैं इसे नहीं छोड़ूंगा।' फिर वह ऊंचे स्वर में शोर मचाने लग जाती और सिर घुमा कर खेलने लग जाती। यदि कोई उससे सवाल-जवाब करने की कोशिश करता तो वह उसे मारने को दौड़ पड़ती।

परेशान हुए उसे घर वाले पहले तो उसे डाक्टरों के पास ले गए। डाक्टरों की दवाई से वह नशे से में निढाल हो कर सोई रहती। जब भी उसकी आंख खुलती तो वह फिर से सिर घुमा कर खेलने लग जाती और उस के अंदर से फिर से कोई 'चीज' बोलने लग जाती। तंग आ कर उसके घर वाल`उसे लेकर कई स्यानों, बाबाओं, तांत्रिकों-मांत्रिकों एवं मुल्ला-मौलवियों के पास गये। कई बाबाओं की अनेकों चौकियों पर जाने के पश्चात् भी और हजारों रूपये की दान-दक्षिणा देने के पश्चात् भी वैशाली की हालत जस की तस ही बनी रही।

अंत में उनके किसी परिचित ने उन्हें मेरा पता देकर रविवार को लगने वाले मनोरोग परामर्श केंद्र में मेरे पास भेज दिया। मैंने वैशाली और उसके पिता को पास बिठा कर उनसे लम्बी बातचीत की, जिससे उसकी समस्या के बारे में प्रारम्भिक जानकारी प्राप्त हो गई। फिर मैंने वैशाली के साथ मनोवैज्ञानिक ढंग से काऊंसलिंग करनी शुरू की तो उसकी मानसिक समस्या के कारण पूर्ण रूप से स्पष्ट हो गये। उसके पश्चात् मैंने तीन-चार बार उसे परामर्श केंद्र में बुला कर मनोवैज्ञानिक सुझााव दिये, जिसके पश्चात् वह बिल्कुल ठीक हो गई। और अब वह प्रसन्नतापूर्वक अपना जीवन व्यतीत कर रही है।

कारणः

वैशाली का परिवार एक सम्पन्न परिवार था। आर्थिक तौर पर सम्पन्न होने के कारण उन्हें किसी भी प्रकार की कोई पेशानी नहीं थी। परिवार वाले वैशाली की प्रत्येक मांग को पूर्ण कर देते थे। पढ़ाई-लिखाई में भी वह काफी तेज थी। उसका सामाजिक दायरा भी बहुत अच्छा था। कालेज में तथा अपने मोहल्ले में उसकी कई सहेलियां थीं, जो कि उसके सुख-दुःख के समय में साथ देती चली आ

रहीं थीं। हर प्रकार से पड़ताल करने पर उसकी मानसिक परेशानी का कोई भी कारण नज़र नहीं आ रहा था। अपनी पड़ताल में एक बात बार-बार सामने आ रही थी कि दौरे के समय वैशाली के सिर पर आ कर जब भी कोई 'चीज' बोलती थी तो प्रायः उसके वही बोल होते थे-'मैं सत्यम् हूं। चौराहे वाले पीपल के नीचे से जाते समय यह मेरी पकड़ में आ गई है....

अब इसी नुक्ते को लेकर मैंने अपनी खोजबीन आगे बढ़ाई। जब इस बात को लेकर मैंने वैशाली के पिता से बातचीत शुरू की तो उसने जो मामला बताया वह काफी हैरतअंगेज था।

उसने बताया कि 'उनके मोहल्ले में एक चौक से गुज़र कर आना पड़ता है। उस चौक पर पीपल का काफी पुराना और बड़ा सा एक वृक्ष है। कुछ समय पूर्व एक दिन जब वैशाली अपनी एक्टिवा पर अपने कालेज से वापिस आ रही थी, तब इसकी आंखों के सामने कार पर सवार कुछ गुण्डों ने किसी व्यक्ति को गोली मार दी थी। स्कूटी पर चलते समय ही इसने यह सारा दृश्य अपनी आंखों से देख लिया था। उस समय यह अत्यंत घबराई हुई घर पर पहुंची थी। उसी रात वैशाली को बुखार चढ़ गया और अगले दिन वह अपने कालेज भी नहीं गई।

सुरेश के साथ बातचीत करने पर वैशाली की मानसिक परेशानी का कारण साफ तौर पर समझ में आगया। गहरे मानसिक आघात के कारण वैशाली को बुखार आना शुरू हो गया था। परिवार वाले उस का बुखार देख कर उसे किसी साधारण डाक्टर से दवाई दिलवाते रहे। परंतु वैशाली की मानसिक व्यथा को न तो डाक्टरों ने समझा और न ही परिवार वालों ने। यदि परिवार वाले वैशाली को साधारण डाक्टर के पास ईलाज के लिए ले जाने की बजाए किसी मनोचिकित्सक के पास ले जाते तो उसकी मानसिक परेशानी का मामला तभी सुझ गया होता।

वास्तव में अत्याधिक संवेदनशील स्वभाव होने के कारण, किसी व्यक्ति का कत्ल होते देख कर वैशाली को गहरा मानसिक आघात लग गया था। इसी मानसिक आघात के चलते ही उसे बुखार रहने लग गया था। डाक्टर उसे बुखार ठीक होने की दवाएं देते रहे परंतु आघात तो उसके मन पर लगा था, जिसके कारण उसे बार-बार बुखार चढ़ने लग गया था। और इसी मानसिक आघात के कारण ही उसे दौरे पड़ने शुरू हो गये थें अंधविश्वासी माहौल होने के कारण जब उस के घरवाले उसे बाबाओं एवं तांत्रिकों के पास ले गये तो उसका अवचेतन मन कथित भूत-प्रेतों की कल्पना करने लग गया। क्योंकि उस व्यक्ति के कत्ल वाली घटना पीपल वाले चौक के आसपास ही घटी थी, अतःउसका भावुक मन कथित भूत-प्रेतों के डर को उस पीपल के साथ जोड़ बैठा था।

मैंने उसे अपने पास मनोरोग परामर्श केंद्र में चार-पांच बार बुला कर मनोवैज्ञानिक ढंग से सार्थक सुझाव दिये तो वह धीरे-धीरे बिल्कुल ठीक होती चली गई और अब वह बिल्कुल प्रसन्नतापूर्वक अपना जीवन व्यतीत कर रही है।

°°°

कविता

दुश्मनी

-अंशुल त्रिपाठी

मेरे रोशनदान पर
रहने वाली चिड़िया
तुम्हारे आंगन से
दाने लेकर आती है

तुम्हारी छत पर
टहलने वाली बिल्ली
मेरे घर का
सारा दूध पी जाती है
बोलो, क्या कर सकते हैं हम!

✶ ✶ ✶

भारतीय सभ्यता के दौर में शिक्षा

उपेंद्र कुमार उन्मुक्त
मोः 7631903120

शिक्षा के सांस्थानिक और सिलेबसी ढांचे में कई परिवर्तनों के वाहक और कारक रहे प्रो. यशपाल को आज लगा कि जो स्थिति है, उसमें महज सुधारात्मक पहल से काम नहीं चलेगा बल्कि शिक्षा को लेकर एक स्वतंत्र आंदोलन की दरकार हैं आज आलम यह है कि शिक्षा के संस्थान कम, दुकान और व्यापार ज्यादा हैं । देशभर में चल रही करीब 500 यूनिवविर्सटी और 31 हजार कॉलेज में से 60 फीसद अवैध हैं, क्योंकि राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रतिबद्धता परिषद नैक की इन्हें मान्यता नहीं है काले धन की तर्ज पर कहना हो तो कहेंगे कि देश भर में काली तालीम का धंधा चल रहा हैं सरकार-स्कूल-कालेजों के खस्ताहाल होते जाने का फायदा निजी संस्थान उठा रहे हैं। और सरस्वती के मंदिरों में लक्षमी के प्रति धर्मपरायणता दिखा रहे हैं।

एक जागरूक जनवादी और वैज्ञानिक तथा शिक्षित समाज का निर्माण दरअल एक ऐसा लक्ष्य है जिसके लिए पहल करना बहुत जरूरी है। आज सरकार के तमाम मिशनों और कमीशनों की फाइल एक तरफ करते हुए प्रो. यशपाल ने अगर शिक्षा के क्षेत्र में क्रांति की बात करी तो उसके पीछे वजह यह है कि जिज्ञासा शोध और आविष्कार का सामाजिक रिश्ता कहीं खो सा गया है और जो सामने आया है, वह है करियर ग्रोथ स्कसैस जैसे बाजारवादी रास्ते और लक्ष्य। लिहाजा इस बदले रास्ते और मंजिल के अनुभव अगर अब सचमुच हमें सालने लगे हैं और हम इनसे वाकई उबरना चाहते हैं तो इसके लिए एक क्रांतिकारी संकल्प की दरकार होगी।

अब सरकार कहती है हमारे पास फंडस नहीं हैं। क्या आज देश में फंडस नहीं हैं? शैक्षिक प्रशासन कहते हैं कि निजी स्कूल उच्च्य गुणवत्ता प्रदान कर रहे हैं, जबकि सरकारी स्कूल निम्नस्तर के हैं। शिक्षा के निजीकरण व्यवसायीकरण एवं सांप्रदायीकरण के चलते व्यक्ति के सामाजिक उत्तरदायी में ह्रास हुआ है। यदि कोई छात्र प्राइवेट कालेज में पढ़कर डॉक्टर बनता है तो उनका प्रथम लक्ष्य मुनाफा कमाना होगा। आज देश में डॉक्टर निर्धन लोगों के किडनी, हृदय, लीवर आदि अंग निकाल कर बेच रहे हैं। आज कोई भी करोड़ों रुपये लगाकर विश्वविद्यालय खोल सकता है तथा जितना ाचाहे उतना शुल्क छात्रों से वसूल सकता है। प्राइवेट ट्यूशन के प्रचलन में शिक्षण कार्य और दायित्व काफी कमजोर होता जा रहा है। प्राइवेट ट्यूशन केवल भारत की समस्या नहीं है बल्कि यह एशिया व अफ्रिका महाद्वीप के कई देशों यथा जापान मॉरीशस, मिस्र, मलेशिया, कम्बोडिया, बांगलादेश ,श्रीलंका, सिंगापुर इत्यादि देशों में एक अर्ध व्यवसाय के रूप में पनप रही है।

विश्व के दो प्रमुख विश्वविद्यालयों, आक्सौर्ड और कैंम्ब्रिज विश्वविद्यालय में भी बाजारवाद हावी होता जा रहा है। व्यवसायिक शिक्षा की तरफ इनका रूझान बढ़ रहा है। पहले छात्र-कॉलेजों और विश्वविद्यालय की विभिन्न सांस्कृतिक कमेटियों में भाग लेकर या कुछ छात्र संघों के जरिए राजनीति में नाम कमाना चाहते थे, लेकिन अब इनका उद्देश्य नौकरी है और अब हर कोई बढ़िया नौकरी करना चाहता है। बड़ी-बड़ी कंपनियों ने उनसे सीधा शिता कायम किया है। अब अमेरिका के विश्वविद्यालयों में भी बाजारवाद पूरी तरह हावी है।

भारत में अंग्रेजों के शासन काल में लार्ड मैकाले जो लेखक और वक्ता था, अंग्रेजी भाषा के प्रसार द्वारा ारत में एक ऐसे वर्ग की स्थापना करना चाहता था, जो शरीर से तो भारतीय हों किंतु

जिसके मस्तिष्क में अंग्रेजी दासता भर जाए, जो अंग्रेजी सभ्यता संस्कृति का अनुसरण करने में गौरवांवित हो तथा भारतीय सभ्यता-संस्कृति से घृणा करे। भारतीय जो अंग्रेजी की शिक्षा पात`थे अपने शरीर और रंग में तो भारतीय होने, परंतु विचारों, रूचि, जैविकता एवं बुध्द में अंग्रेज होते। सच कहा जाय तो भारत में आजादी के पूर्व ही पब्लिक स्कूलों का बोलबाला रहा है। पब्लिक स्कूल वास्तव मे स्कूल नहीं बल्कि शैक्षिक दुकानें हैं। भारत में धनाड्य अभिावकों के बालकों के लिए पब्लिक स्कूल खोले गए। इस स्कूल के संस्थापक एस.आर. दास थे। इस तरह के तमाम स्कूलों में शिक्षा का माध्यम अंगेजी है। मंहगे पब्लिक स्कूल में सहगामी कार्य, जैसे सांस्कृतिक कार्य, शारीरिक कार्य, कला, संगीसत, नृत्य, ड्रामा, फोटोग्राफी, जिल्द बांधना, मिट्टी का समान बनाना, गोली चलाना, तैरना, घुड़स्वारी , बागबानी, वाद-विवाद आदि पर विशेष ध्यान दिया जाता है । ऐसे विद्यालय में बालकों को सारा दिन किसी न किसी कार्य में व्यस्त रखा जाता है। विद्यालय के अंदर ही खेल का मैदान, छात्रावास, तैरने का स्थान, लाइब्रेरी, म्यूजियम, बाग-बगीचा, छोटा-चिड़ियाघर इत्यादि मौजूद होते हैं। इस तरह के वद्यालय से छात्र-शिक्षा प्राप्त कर राजनीति, व्यापार, उद्योग, खेलकूद, सेना, संगीत, फिल्म आदि के क्षेत्र में सफलता प्राप्त करते हैं। दूसरी ओर देश में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा शोषित वर्ग के बच्चों को प्राप्त नहीं हो रही है। देश के प्रसिद्ध शिक्षाविद् गालिब खां के अनुसार शासक वर्ग को गुणवतत्तापूर्ण शिक्षा की आवश्यकता नहीं है। जिस बहुसंख्यक वर्ग को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की आवश्यकता है, वे संगठित नहीं हैं। गुणवत्ता शिक्षा वर्तमान सरकार में संभव नहीं है।

जैसा शासक वर्ग होती है, वैसी शिक्षा नीति होती है। समाज एक दिन में बदलता है। इस बदलने में हम सब की भूमिका बनती है। हमें जनप्रतिरोध आंदोलन को तेज करना होगा। 1917 में रूस में क्रांति हुई। कुछ ही वर्षो में वहां निरक्षरता गायब हो गई। भारत की शिक्षा व्यवस्था कैसी है, इसके संबंध में सुधा शंकर शेष के नाटक 'एक और द्रोणाचार्य' में महाभारत की कथा और आधिुनिक महाविद्यालयों को सामानांतर रखते हुए बहुत अच्छे ढंग से प्रस्तुत किया गया है। द्रोणाचार्य जिस तरह एकलव्य के साथ अन्याय करते हैं, उसी तरह आधुनिक आचार्य-प्रचार्य जनसाधारण वर्ग के छात्रों के हितों की रक्षा करती है और उनके माध्यम से व्यक्तिगत स्वार्थ की पूर्ति करती है।

मार्च 1990 में थाईलैंड के जोमतिएन (जोमटीग) में हुए सर्वशिक्षा (सबके लिए शिक्षा) विश्व सम्मेलन के पश्चात् भारत में भी प्राथमिक शिक्षा के दरवाजे बड़े पैमाने पर बाह्य सहायता के लिए खोल दिए गए। जोमतिएन सम्मेलन में विश्व बैंक और अन्य कर्जदाता एजेंसियों द्वारा सरकार को 2500 करोड़ रूपये ऋण देने का रास्ता खोल दिया गया था।

जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम (1993)का `विश्व बैंक से धन प्राप्त हो रहा है। लोक जुम्बिश जिसे 1992 में शुरू किया गया, को स्वीडिश इंटरनेशनल डेवेलप्मैंट अथॉरिटी से धन प्राप्त होता है। महिला समाख्या कार्यक्रम को सीधे हॉलैंड से धन प्राप्त हो रहा है। जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम सन् 1998 तक भारत के 15 राज्यों के 163 से अधिक जिलों तक फैल चुकी है। जिसमें केरल राज्य भी शामिल है।

यदि लोगों को बहुराष्ट्रीय कंपनियों के उत्पाद खरीदने हैं, तो उन्हें विज्ञापन पढ़ने में समर्थ होना चाहिए। आज भारत में बहुराष्ट्रीय कंपनियों को साक्षर श्रमिक, साक्षर किसान तथा साक्षर उपभोक्ता की जरूरत है। यही कारण है कि विश्व बैंक प्राथमिक शिक्षा के लिए धन प्रदान कर रहा है।

ये रौशनी का सफ़र कौन रोक सकता है
इक आफ़ताब बुझा है तो सौ चिराग़ जले

-इंद्रमोहन मेहता कैफ़ .

धर्म और विज्ञान : दो विपरीत ध्रुव

-**संजय**

विज्ञान और धर्म/मज़हब आंरभ से ही एक दूसरे के विपरीत रहे हैं। जहां धर्म/मज़हब का केंद्र लक्ष्य मनुष्य को समाज और भौतिक प्रगति से विमुख करवा के काल्पनिक ईश्वर/ अल्लाह की भक्ति में लीन करवाना होता है, वही विज्ञान का लक्ष्य मुनष्य के जीवन को अधिक से अधिक सरल बनाना होता है। धर्म/मज़हब विज्ञान द्वारा अविष्कारों/खोजों का भरसक विरोध करता है। उन्होंने वैज्ञानिक अविष्कारों के प्रति लोगो में गलत धारणा भी बना दी। तभी आज भी एक समुदाय टेलीविजन को 'शैतान' कह के अपने घरों में रखने से कतराता है।

जो समाज जितना अधिक धर्मिक/मज़हबी रहा है वह विज्ञान में उतना ही अधिक पीछे रहा है। भारत और मुस्लिम देशों को ही देख लीजिए। इन देशों के लोगों के जीवन में धर्म/मजहब रचा बसा है। ईश्वर/अल्लाह की प्रशंसा में, तथाकथित ब्रह्मज्ञान की ढेरों किताबें लिख मारी पर उन वैज्ञानिक अविष्कारों में फिसड्डी रहे जिससे वास्तव में मनुष्य का जीवन सुखमय होता। **ये धर्म परायण लोग पूरी धरती को ईश्वर/अल्लाह द्वारा निर्मित मानते रहे, उसे प्रसन्न करने के लिए नमाज़/पूजा जैसे टोटके करते रहे, फिर भी सूखे, बाढ़, तूफ़ान आदि प्राकृतिक आपदाओं का शिकार बनते रहे और उनसे बचने का कोई उपाय नहीं खोज पाये। ये अपनी किताबों में छड़ी मार के धरती से पानी निकालते रहे, पर खुद प्यासे मरते रहें, एक हैंडपंप का भी निर्माण नहीं कर पाये। किताबो में रथ और गधे को उड़ाते रहे पर स्वयं पैदल भागते रहें, एक साइकिल तक का निर्माण नहीं कर पाये।** यह भी हास्यास्पद है की विज्ञान का विरोध करने वालों ने ईश्वर और धर्म का प्रचार करने के लिए सबसे ज्यादा विज्ञान के अविष्कारों का प्रयोग किया और कर रहे हैं। वैज्ञानिक उपकरणों द्वारा ही ये धर्म/मज़हब के ठेकदार जनमानस में अपनी पैठ बनाने में सफल रहे ओर आज भी इन्हीं आविष्कारों की मदद से प्रयासरत हैं, और तो और दिन रात भौतिकता से दूर रहने का प्रवचन देने वाले स्वयं भौतिकता को अपने जीवन से अलग नहींकर पाये, यह इनके ठाठ-बाठ से आप देख सकते हैं। भारत और मुस्लिम देश धार्मिक परायण होने के कारण कोई भी ऐसा अविष्कार नहीं कर पाये जो विश्व समुदाय के जीवन को सरल बना सके, जबकि अधिकतर अविष्कार पश्चिमी देशों में ही हुए, जिनका फायदा आज विश्व ले रहा है। इसका कारण था कि पश्चिमी देशों ने जल्द ही अपने को धर्म से अलग कर लिया था।

बेंजामिन फ्रेंकलिन, डेविड ह्यूम, जॉन एडम्ज, थॉमस जेफर्सन (अमेरिका के तीसरे राष्ट्रपति), जेम्स मेडिसन (अमरीका के चौथे राष्ट्रपति), थिओडर रूजवेल्ट (अमरीका के 26वें राष्ट्रपति) जैसे बहुत से राजनीतिज्ञ हुए जिन्होंने देश में धर्म की अपेक्षा विज्ञान को ज्यादा महत्व दिया। इन राजनीतिज्ञों ने पोप की सत्ता को चुनौती दी और विज्ञान को आगे बढ़ाया, जबकि भारत और मुस्लिम देशों में ऐसा न हो पाया, यहाँ धर्म सर्वोपरि रहा और विज्ञान को पीछे धकेल दिया गया।

आज भी देश में अन्धविश्वास इतना हावी है कि बच्चों का विज्ञान की तरफ झुकाव बहुत कम है। पढ़े लिखे भी धर्म के अंधविश्वासों में ऐसे उलझे हैं कि फलित ज्योतिषी, वास्तु-शास्त्र, पूजा, नमाज आदि उनसे दूर ही नहीं होते। पूजा/नमाज के लिए सड़कों पर अतिक्रमण कर लिया जाता है, सरकारी जमीनों पर जिनकी कीमत बहुत उंची होती है, उन पर कब्ज़ा कर धर्म/मज़हब के नाम पर रातो-रात मंदिर/मस्जिद आदि का निर्माण कर दिया जाता है। सरकार कोई कठोर कदम उठाने से हिचकती है क्योंकि इससे उसके वोट पर असर होने का खतरा रहता है। सरकार जिसका काम होता है समाज को आधुनिक शिक्षा देना और अंधविश्वासों से मुक्त करना, वह स्वयं अपने सरकारी उपक्रमों में धार्मिक मज़हबी अंधविश्वासों को लिप्त करती है। इसी सब के चलते देश के अधिकतर लोग आसानी से बाबा/मौलवी आदि के चक्कर में आ के अपना समय, पैसा आदि बर्बाद करते हैं। कुकरमुत्तों की तरह देश में हर गली में बाबा उगे हुए हैं जो जनता को गर्त में धकेल रहे हैं।कैसे होगा देश एक आधुनिक सोच वाला ? यह यक्ष प्रश्न है।

ज़िंदगी की दौड़-भाग

-डा. हरीश मल्होत्रा, ब्रमिंघम

क्या आपको लगता है कि आप अत्यंत व्यस्त हैं? यदि इसका जवाब हां में है तो, आप अकेले ही इस सफर के यात्री नहीं हैं। एक सर्वेक्षण के अनुसार 'सभी तरफ ही लोग व्यस्त हुए लगते हैं।'

वर्ष 2015 में आठ देशों में पूरा समय काम करने वाले लोगों का सर्वेक्षण किया गया। अधिकतर लोगों नेकहा कि उनको घर एवं कार्यस्थल की जिम्मेदारियां निभाने में कठिनाई रहती है। इसके कुछ कारण हैं-जैसे कि घर एवं कार्यस्थल की जिम्मेदारियों में वृद्धि एवं अधिक घण्टों तक कार्य करना। उदाहरण स्वरूप एक सर्वेक्षण के अनुसार भारत में नवयुवक प्रत्येक सप्ताह लगभग 52 घंटे कार्य करते हैं।कार्यरत 1000 से अधिक नवयुवकों पर एक अन्य सर्वेक्षण किया गया और इसमें पाया गया कि इन में से 16 प्रतिशत् नवयुवक प्रतिदिन 12 घंटे कार्य करते हैं।

एक अन्य सर्वेक्षण किया गया जिस में 36 देश सम्मिलित थे। इन में सेएक चौथाई लोगों ने बताया कि उनको अक्सरऐसा लगता है कि खाली समय में भी दौड़-भाग लगी रहती है। यदि बच्चों को एक के बाद एक कार्यदिया जाए तो उन पर भी इस का बुरा प्रभाव पड़ता है।

जब हम थोड़े समय में अधिक कार्य करने की लगातार कोशिश करते हैं, तो हम तनावग्रस्त हो सकते हैं। परंतु क्या ज़िंदगी में संतुलन रख पाना संभव है? ऐसा करने में हमारे विश्वास, फैसले एवं लक्ष्य क्या भूमिका अदा करते हैं? आओ, पहले हम उन कुछ कारणों कोदेखते हैं कि कई लोग अधिक कार्य करने की कोशिश क्यों करते हैंः

1. अपने परिवार को बढ़िया वस्तुएं देने की इच्छा

परमजीत नाम का एक व्यक्ति बताता है-'मैं सप्ताह में सातों दिन काम करता था क्योंकि मैं अपने बच्चों को प्रत्येक उत्तम वस्तु देना चाहता था। मैं उनको वे वस्तुएं देना चाहता था जो मुझ को कभी प्राप्त नहीं हो सकी थी।' नेक इरादे होने के बावजूद भी अभिभावकों को जांच करने की ज़रूरत है कि वे किन वस्तुओं को प्राथमिकता देते हैं। किये गये कुछ अध्ययनों की रिपोर्टें बताती हैं कि धन-दौलत एवं वस्तुओं को अधिक अहमियत देने वाल बच्चे एवं बड़े कम प्रसन्न रहते हैं। ऐसे लोग जीवन से संतुष्ट नहीं होते तथा उन लोगों से कम स्वस्थ होते हैं जो वस्तुओं के पीछे नहीं भागते।

कुछ मां-बाप अपने बच्चों का भविष्य सुंदर बनाने के लिए उनको हद से ज्यादा काम देते हैं। साथ ही वे स्वयं भी हद से ज्यादा काम करते हैं। परिणाम स्वरूप, बच्चों एवं अभिभावकों, दोनों का ही नुकसान होता है।

2. यह मानना कि 'अधिक होना अच्छी बात है':

विज्ञापन बनाने वाले हमें यह विश्वास दिलाने की कोशिश करते हैं कि यदि हम बाज़ार में आई हुई नई वस्तुओं को नहीं खरीदते तो हम स्वयं को आधुनिक सुविधाओं से वंचित रख रहे हैं। एक पत्रिका के अनुसार-बाजार में वस्तुओं की बाढ़ आई हुई है तथा लोगों को लगता है कि उनके पास खरीदने के लिए समय ही नहीं है। उनको यह पता ही नहीं चलता कि वे इतने कम समय में क्या खरीदें, क्या देखें अथवा क्या खायें।

एक अर्थशास्त्री ने 1930 में भविष्यवायणी की थी कि तकनीक में तरक्की होने के कारण श्रमिकों को अधिक खाली समय मिलेगा। परन्तु वह गलत साबित हुआ। एक पत्रिका की लेखिका एलिजाबेथ कोल्बार्ट ने बताया -'काम जल्दी समाप्त करने के बजाए लोगों को नई तकनीक के बारे में सीखने की ज़रूरत थी। इसलिए धन एवं समय की ज़रूरत थी।'

3. दूसरों की उम्मीदों पर खरा उतरने की कोशिशः

कुछ श्रमिक अपने मालिकों को खुश करने के लिए घंटों तक कार्य करते हैं। यदि उनके साथ में कार्य करने वाले अधिक देर तक कार्य नहीं करते, तो उनको दोषी महसूस करवाते हैं जिस कारण उन पर भरी अधिक कार्य करने का दबाव आ सकता है। साथ ही आर्थिक संकट होने के कारण लोग किसी भी समय में काम पर जाने के लिए एवं जितने मर्जी घंटों तक कार्य करने के लिए तैयार हो जाते हैं।

इसी प्रकार, अभिभावक भी शायद अन्य परिवारों की भांति अधिक कार्य करने का दबाव महसूस करते हों। यदि वे उनकी भांति अधिक कार्य नहीं करते, तो शायद उनको लगता है कि वे अपने बच्चों को अनेक वस्तुओं से वंचित रख रहे हैं।

4. रुतबा हासिल करने एवं इच्छाएं पूर्ण करने के पीछे भागनाः

अमेरिका में रहने वाला अमरीक बताता है -मुझे अपना कार्य बहुत पसंद था तथा मैं पूरी तनदेही के साथ अपना काम करता था। मुझे लगता था कि अपने आपको साबित करने की ज़रूरत थी।

इस व्यक्ति की भांति बहुत से लोगों को लगता है कि स्वयं को साबित करने में और दौड़-भाग के जीवन में गहरा संबंध है।'

इसका परिणाम क्या निकलता है? कई लोगों का ख्याल है कि, व्यस्त रहने के कारण समाज में आपको रुतबा हासिल होता है तथा आप जितने भी व्यस्त रहते हें, उतना अधिक ही आप विशेष लगते हैं।

संतुलन बना कर रखना सीखेंः संतुलित जीवन व्यतीत करने से हमारे शरीर एवं मन पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ता है। परंतु काम के घंटे कम कर सकना क्या वास्तव में संभव है? आओ, कुछ सुझावों की ओर नज़र दौड़ाएंः

1. अपने नैतिक मूल्य एवं लक्ष्य की पहचान करेंः

यह बात आम है कि हर कोई चाहता है कि उसके पास धन-दौलत हो। परंतु कितना धन प्रर्याप्त है? सफलता का अनुमान किस प्रकार लगाया जा सकता है? सफलता किस बात पर निर्भर करती है? क्या यह केवल धन-दौलत अथवा वस्तुओं पर निर्भर करती है? इसके विपरीत यदि अधिक समय तक आराम अथवा मनोरंजन किया जाए, तो इससे भी तनाव बढ़ सकता है।

अमरीक, जिसका पहले जिक्र किया गया था, बताता है, 'मैं और मेरी पत्नी नेअपने-अपने जीवन की अत्यंत ध्यानपूर्वक जांच की। फिर हमने अपने-अपने जीवन को सादा करने की कोशिश की। हमने एक चार्ट बनाया, जिस पर हमने अपने वर्तमान हालातों के बारे में तथा अपने नये लक्ष्यों के बारे में लिखा। हमनेअपने पुराने फैसलों एवं परिणामों के बारे में बातचीत की। साथ ही यह भी बात की कि हमें अपने लक्ष्यों को हासिल करने के लिए क्या करने की जरूरत है।'

2. दूसरों की बातों में मत आओः

हमें अपनी आंखों की लालसा पर नियंत्रण रखने की जरूरत है। विज्ञापन देख-देख कर हमारी इच्छाएं बढ़ सकती हैं। इनके कारण एक इन्सान पर अधिक घंटे काम करने का अथवा हद से ज्यादा और मंहगा मनोरंजन करने का दबाव पड़ सकता हैं यह भी सत्य है कि हम सभी विज्ञापनों को नज़रअंदाज नहीं कर सकते, परंतु हम इनको देखना कम कर सकते हैं। साथ ही हम ध्यानपूर्वक चिंतन-मंथन भी करसकते हें कि हमें किन-किन वस्तुओं की वास्तव में जरूरत है।

इसके अलावा, यह भी स्मरण रखना चाहिए कि हमारे दोस्तों का भी हम पर ज़बरदस्त प्रभाव पड़ सकता हैं यदि हमारे दोस्त अनावश्यक वस्तुओं के पीछे भागते हैं अथवा उनके दृष्टिकोण के अनुसार सफलता केवल वस्तुओं के कारण ही मिलती है, तो समझदारी इसी में है कि आज केवल ऐसे दोस्त ही बनाएं जो अन्य बातों को प्रथमिकता देते हों। जैसे कि विद्वानों का कथन है कि बुद्धिमान बन जाता है।

3. हद से ज्यादा काम न करोः

अपने बॉस के साथ अपने काम के बारे में बात करने के साथ-साथ उसे बताओ कि आप किन बातों को प्राथमिकता देते हें। साथ ही अपने कार्य को समाप्त करने के पश्चात् अपने जीवन का आनंद भी उठाओ।

4. अपने परिवार के साथ समय व्यतीत करने को प्राथमिकता दोः

पति-पत्नी को एक दूसरे के साथ एवं मां-बाप को अपने बच्चों के साथ समय व्यतीत करना चाहिए। इस लिए उन परिवारों का अनुकरण न करें जो कि हमेशा ही व्यस्त रहते हों। हो सके तो आराम करने के लिए अलग समय रखो तथा वे कार्य न करो जो कि जरूरी नहीं हों।

जब आपका परिवार इकट्ठा होता है, तो टी.वी., फोन अथवा अन्य चीजों को आपस में अवरोध न बनने दें। दिन में कम से कम एक बार इकट्ठे खाना खाओ। इस समय एक दूसरे के साथ बातचीत करो। जब मां-बाप इस आसान सी सलाह को मानेंगे तो उनके बच्चे अधिक प्रसन्न रहेंगे तथा अपनी पढ़ाई-लिखाई में भी श्रेष्ठ रहेंगे।

5. **तकनीकी एवं समय की कमी**ः क्या स्मार्ट फोन एवं टेबलेट के साथ हम थोड़े समय में अधिक कार्य कर सकते हैं अथवा नहीं ? इस का उत्तर इस बात पर निर्भर करता है कि इम तकनीक को किस प्रकार से प्रयोग में लाते हैं।

कार्यस्थल परः मोबाइल के कारण काम करने वालों के लिए यह चुनाव आसान हो गया है कि वे कहां पर और कब काम करेंगे। परंतु जब मालिक यह अपेक्षा करते हें कि वर्कर दिन रात काम करने के लिए तैयार रहें तो उन पर काम का दबाव बढ़ सकता है।

घर मेंः मोबाइलों के कारण परिवार के सदस्य एक दूसरे के साथ आसानी के साथ बातचीत कर सकते हैं जिसके कारण समय की बचत हो जाती है। परंतु टेक्नॉलोजी परिवार के सदस्यों के साथ बातचीत करने में रुकावट बन सकती है। अध्ययनों से ज्ञात हुआ है कि अभिभावकों के द्वारा टेक्नॉलोजी का अत्याधिक प्रयोग करने के कारण वे अपने बच्चों की ओर ध्यान नहीं देते। इस कारण बच्चे चिढ़चिढ़े अथवा निराश हो जाते हैं।

अंत में स्वयं से प्रश्न करोः 'मैं अपने जीवन में कौनसे परिवर्तन करना चाहता हूं?' यदि आप किसी को खुश करने के लिए अथवा दिखावे में पड़ते हो, अपनी ज़िंदगी एवं परिवार की ज़िंदगी तनावपूर्ण बना रहे हो। यदि आप प्रसन्नतापूर्ण जीवन व्यतीत करना चाहते हैं तो अपने लिए ज़िंदगी जिओ तथा इसको सदगी से परिपूर्ण बनाओ।

हिंदी अनुवादः बलवंत सिंह लेक्चरार

रा.क.सी.सै.स्कूल फतेहपुर पूण्डरी में हरियाणा तर्कशील सोसायटी, कैथल ईकाई की तरफ से तर्कशील कार्यक्रम

दिनांक 4-12-2018 को फतेहपुर पूण्डरी में हरियाणा तर्कशील सोसायटी, कैथल ईकाई की तरफ से राजकीय कन्या सीनियर सेकेंडरी स्कूल में एक तर्कशील कार्यक्रम पेश किया गया। इस कार्यक्रम में अशोक दहिया ने अपनी कला से समां बांध दिया। और स्कूल स्टाफ तथा विद्यार्थियों के सामने तर्कशील विचारधारा को अच्छे ढंग प्रस्तुत किया। स्कूल अध यापकों और महिला विद्यार्थियों को तर्कशील साहित्य के बारे में जानकारी भी दी गई और उन्हें बहुत सारी पुस्तकें पढ़ने के लिए भी दी गई। साथ ही उन्हें तर्कशील पथ पत्रिका पढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया गया। कृष्ण राजौंद ने अपनी और सोसायटी की तरफ से स्कूल की प्रधानाचार्या मैडम, तथा सारे स्टाफ और विद्यार्थियों का धन्यवाद दिया कि उन्होंने अनुशासित ढंग से कार्यक्रम का आनंद लिया और वैज्ञानिक चेतना संबंधी विचार सुने और ग्रहण किए। कृष्ण राजौंद के अलावा मान सिंह पूंडरी, रामफल और विशेष जादूगर अशोक दहिया हिसार ने शिरकत की। मास्टर गुरबाज़ सिंह जी का इस कार्यक्रम को सफलता पूर्वक संपन्न कराने में विशेष योगदान रहा। अंत में कृष्ण राजौंद ने प्रधानाचार्य, स्टाफ का कार्यक्रम को सफल बनाने में सहयोग के लिये हार्दिक धन्यवाद किया।

धर्म या मज़हब

-आर.पी.गांधी
मो॰ 93154 46140

पांच हज़ार वर्ष पूर्व मनुष्य की सभ्यता का जब विकास हो रहा था तो मनुष्य ने आसपास घ रही घटनाओं के बारे सोचना आरम्भ किया जिससे उसका मासिक विकास होने लगा। अपनी अज्ञानता डर व स्वार्था के कारण अदृश्य देवी-देवताओं की कल्पना शुरू की। उदाहरण के लिए बादलों में बिजली का चमकना, बादलों का गर्जना, वर्षा का होना उसे विस्मित कर देता और वह इन जैसी घटनाओं के पीछे किसी अदृश्य शक्ति की कल्पना कर देता और उी अदृश्य शक्ति को देवी-देवता का नाम देकर उसकी पूजा करने लगा। पुरान हिंदू-सभ्यता में जितनी भी प्रकृतिक शक्तियां थीं, उदाहरण के लिए आग, जल, वायु, सूर्य, चंद्रमा, नदी आदि को देवी-देवताओं का नाम देकर उनसे लाभ लेने अथवा प्रकोप से बचने के लिए पूजा-पाठ, चढ़ावा आदि करने लगा। कालांतर में भिन्न-भिन्न स्थानों पर भिन्न-भिन्न लोगों में अपना जीवन व्यतीत करने के लिए कुछ नियम बनाए, जो आगे चलकर धर्म कहलाये। जब मनुष्य ने देखा कि एक राजा लोगों पर शासन करता है और अपना काम चलाने के लिए अपने सहायक मंत्री रखता है तो मानव ने भी उसी लाइन पर सोचते हुए कल्पना की कि एक बड़ी शक्ति है जिसका उसने ईश्वर अथवा भगवान कहा। और देवी-देवताओं को उसके सहायक मानकर उनकी भी पूजा अर्चना की व चढ़ावा चढ़ाया। उसे इससे संतुष्टि मिलती कि उसने देवी-देवता की पूजा कर भगवान को भी खुश कर दिया है। यहां तक कि बीमारियों जैसे चेचक का शीतला मां का नाम दिया गया और प्लेग को मृत्यु देवी का नाम दिया गया। आज भी किसी को यदि, खसरा हो जाए तो उसे माता के नाम से जाना जाता है परंतु चिकित्सा विज्ञान में अब ऐसी बीमारियों के कारण खोज लिए गए हैं और ईलाज भी ढूंढ लिया गया हैं अब तो इन बीमारियों की अग्रिम रोकथाम कर दी जाती है। अतः चिकित्सा विज्ञान की प्रगति से ये रोग देवी के प्रकोप नहीं रहे और न ही उनके अभिशाप।

विश्व में भिन्न-भिन्न समुदाय के लोग इस अदृश्य शक्ति को भिन्न-भिन्न नाम दिए जैसे हिंदुओं ने इसे ईश्वर अथवा भगवान कहा। ईसाइयों ने इसे गॉड अथवा प्रभु कहा। मुसलमानों इसे अल्लाह कहा। इसी प्रकार अन्य नाम भी दिए गए। अलग-अलग नाम देने के साथ ही अलग-अलग समुदायोंने पूजा पद्धति भी अलग-अलग अपनाई। हिंदू ईश्वर की स्तुति करते हैं। तिलक लगाते हैं और जनेऊ धारण करते हैं। मुस्लिम टोपी पहनते हैं, दाढ़ी रखते हैं। रोजे रखते हैं, नवाज़ पढ़ते हैं। सिक्ख लोग केश रखते हैं। कड़ा, कृपाण धारण करते हैं। गुरुद्वारों में अरदास करते हैं। ईसाई लोग क्रास धारण करते हैं और हर रविवार को कुर्सियों बैठकर गॉड की प्रार्थना करते हैं व उसकी स्तुति करते हैं। इस प्रकार अलग-अलग धर्मों की वेश-भूषा, पूजा पद्धति भिन्न-भिन्न हैं सभी धर्मों में एक बात समान मिलती है कि वे अपने धर्म को श्रेष्ठ मानते हैं। वे अन्य धर्म के लोगों को भी अपना धर्म अपनाने के लिए उत्साहित करते हैं। प्रचीन काल में जो ध
र्म-परिवर्तन तलवार के बल पर कराया जाता था, परंतु अब इसका स्वरूप बदल गया हैं अब कुछ धर्म के लोग अपने धर्म का प्रचार करने के लिए प्रलोभन देते हैं। गरीब लोग इन प्रलोभनों से आकर्षित हो जाते हैं और वे आसानी से अपना धर्म परिवर्तन कर

लेते हैं। इसके अतिरिक्त हिंदू धर्म में जाति व्यवस्था के कारण निम्न जाति के लोग उपेक्षा के कारण अन्य धर्म भी अपनाने लगे हैं। इसी उपेक्षा और घृणा के कारण कुछ हिंदुओं ने अपना धर्म त्याग कर बौद्ध धर्म अपना लिया है।

धर्म ने इन्सान को कितना विकसित किया, यह कहना मुश्किल है, मगर धर्मों ने इन्सानों के बीच दूरियां अवश्य पैदा की हैं। ऐसा होने का मुख्य कारण यह है कि प्रत्येक धर्म अपने को दूसरे धर्म से श्रेष्ठ मानता है और दूसरे धर्म को हीन समझता हैं यही विचार घृणा को जन्म देता है और यही घृणा हिंसा को जन्म देती है। इतिहास गवाह है कि धर्म के नाम पर अनेक युद्ध हुए और मानवता का संहार हुआ। भारत में भी 1947 में देश का विभाजन धर्म के नाम पर हुआ और विभाजन के समय धर्म के नाम पर ही लगभग 10 लाख लोगों का कत्ल कर दिया गया। एक धर्म के लोग दूसरे धर्म के लोगों के दुश्मन बन गए। वर्षों साथ-साथ रहने के बावजूद धर्म ने दोनों वर्गो के लोगों को एक दूसरे का दुश्मन बना दिया। स्त्रियों का अपमान हुआ। बच्चे भी हिंसा का शिकार हो गये। मानवता तार-तार हो गई। यह सब धर्म के नाम पर हुआ। इसी प्रकार इंग्लैंड में मल्लिका मेरी के समय में संघर्ष हुआ और हिंसा के कारण अनेक लोग मारे गए। विश्व के अन्य भोगों में भी धर्म के नाम पर समय-समय पर टकराव होता रहतो है जिससे मानव जीवन का बहुत नुकसान हुआ है। अतः धर्म से कोई लाभ हो या न हो, लेकिन हानियां अनेक हुई हैं, जिनकी क्षतिपूर्ति नहीं हो सकती। अतः इस लिहाज से धर्म कोई बहुत अच्छी चीज नहीं है। किसी विशेष धर्म के बिना भी मनुष्य एक अच्छा जीवन जी सकता है। आज यदि आवश्यकता हैतो मानव धर्म अपनाने की है जिमें सभी मानव समान हों व जिसमें विश्व-कल्याण की बात की जाती है। हम मानवता धर्म अपना कर ही विश्व-कल्याण और विश्व-शांति की बातकर सकते हैं। इस मानव धर्म में हम सबकी भलाई है।

हराम-तंत्र

--डॉ. रणजीत

यह प्रिन्स्पल बड़ा हरामी है
एक सज्जन ने कहा
ठीक फरमाया आपने
दूसरे बोले
पर यह भी तो सोचिये
आजकल टीचर्स कितने हरामखोर हो गये हैं
ऐसे अध्यापकों को अनुशासन में रखने के लिए,
एक हरामी प्रिन्स्पल निहायत जरूरी है।

मैं सोचने लगाः बात में काफी सच्चाई है
तो ऐसे हरामी प्रिन्सपल को अनुशासन में कौन रक्खेगा
किसी हरामी डाइरेक्टर या वाइस चांस्लर के सिवा ?
और उनको बस में कौन करेगा,
किसी हरामी शिक्षामंत्री या मुख्यमंत्री के सिवा ?
इसलिए पूरे देश के हरामियों को बस में रखने के लिए
एक हरामी प्रधानमंत्री निहायत जरूरी है।

ओह! तो इसी तर्क पर फल-फूल रहा है
मेरे देश में हरामखोरों का यह हराम-तंत्र
जिसमें हलाल हो रहे हैं बिचारे
हलालखोर।

ऐसा समय कब आयेगा ?
जब कोई भला आदमी भी
इन दुष्टों को बस में रख पायेगा।

लेखकों/पाठकों के लिए :

1. रचना की मूल प्रति ही भेजें, फोटो प्रति स्वीकार्य नहीं होगी।
2. अस्वीकृत रचना की वापसी हेतू पांच रूपये का डाक टिकट लगाकर लिफाफा संलग्न करें।
3. रचना बायीं तरफ हाशिया छोड़कर अशुद्धियों रहित साफ-साफ लिखी या टाईप होनी चाहिए
4. रचना सोसायटी के उद्देश्यों के अनुरूप होनी चाहिए।
5. पत्रिका में छपी रचनाओं पर प्रतिक्रिया साधारण पोस्ट कार्ड से भी भेजी जा सकती है।
6. लेख, कहानी, कविता तथा रचनाओं पर प्रतिक्रिया ईमेल tarksheeleditor @gmail.com अथवा वट्सएप नं: 9416036203 भी भेजी जा सकती है।
7. पत्र व्यवहार करते समय लिफाफे पर पूरे पैसों के टिकट लगाकर ही प्रेषित करें। बैरंग पत्र हो जाने की स्थिति में स्वीकार नहीं किया जाएगा।
8. अनुवादित रचना के साथ मूल लेखक का अनापत्ति पत्र भी संलग्न करें।
9. पत्रिका में छपी किसी भी रचना पर लेखक को मानदेय का प्रावधान नहीं है क्योंकि यह पत्रिका पूर्णतःअव्यवसायिक/ अवैतानिक संपादक एवं संपादक मंडल द्वारा अन्धविश्वासों, पाखण्डों, रूढ़ियों के विरूद्ध जागृति लाने हेतु जनहित में प्रकाशित की जाती है।

आणे आला बखात.

-रामधारी खटकड़

बेरुजगारी भूखमरी दिन-दिन बढती जाती है

भाईचारा खत्म होया, इब ना कोय प्यारा साथी है

एकता की बात चलै तो, हमको नहीं सुहाती है

कौण हिफाजत करै वतन की,बाड खेत को खाती है

पूंजीपति की चाल कसुत्ती , चौगिरदे तै घेरया सै

पढाई रहग्यी धन आले की, निर्धन की पढाई ना

इलाज होवै ना उस माणस का, जिसपै धेला-पाई ना

कल्याणकारी राज ना छोड्या, शर्म कति आई ना

सरकार भूलग्यी जिम्मेदारी, उसनै रीत निभाई ना
मुनाफे का इब चक्कर चाल्या, सब लोगां नै बेरा सै

किते-किते गोदाम सडैं, किते भूखे बच्चे रोते हैं

टूक मिलै ना पेट भराई, सुबक-सुबक कै सोते हैं

मांस रया ना उनके तन पै, अस्थिपंजर ढोते हैं

कर्मा का फल बतलावणियें, बीज बिघन का बोते हैं

मेहनत का कति फल मिलता ना, जाल कसुत्ता गेरया सै
सदा रहै ना कोय सिस्टम, ईब जमाना बदलैगा

अन्याय ना रोज चलै, इब जुल्म कमाना बदलैगा

संकट कारण सोच बदल ज्या, ढंग पुराना बदलैगा

खून चूसती जौंकां का यो, खेल रचाना बदलैगा

रामधारी नै क्रांति का, घनघोर दिखाई देरया सै

तर्कशील सोसायटी हरियाणा की अपील :

हरियाणा के असंध में शीघ्र ही 'तर्कशील केंद्र' के रूप में एक भवन निर्माण की योजना प्रस्तावित है। जिसके लिए सोसायटी के कार्यकर्ता मेहर सिंह विर्क ने असंध जिला करनाल में एक भूखण्ड प्रदान किया है। अतः सभी साथियों से अपील की जाती है कि इस योजना हेतु बढ़-चढ़ कर आर्थिक सहयोग करें।

-राज्य कार्यकारिणी

सजदा, सलाम ! कृष्ण बरगाड़ी

6 अक्तूबर 1957 - 20 जनवरी 2002

कृष्ण बरगाड़ी तर्कशील लहर के मरहूम नायक हैं, जिन्होंने पंजाब के काले दौर में वैज्ञानिक चेतना के काफिले को दृड़ता एवं निडरता के साथ नेतृत्व दिया। अपने थोड़े से जीवन में उन्होंने ऐसे उदाहरण प्रस्तुत किए कि वे तर्कशील लहर का आधार बने। ज्ञान-विज्ञान का दीपक जलाया तथा भ्रम-अंधविश्वास में फंसे लोगों को रोशनी दिखाई। अपने कार्य के प्रति लग्न, प्रतिब्धता एवं आदर्श के प्रति समर्पण की भावना वे भरे थे। उन्होंने अपने निजी जीवन को तर्कशील लहर के लिए न्योछावर कर दिया, तथा अपने कार्य के प्रति निष्ठा से दिखाया कि व्यक्ति अपने समुह एवं लहर के साथ जुड़ कर ही बड़ा बनता है।

उन्होंने अपने जीवन के कीमती 17 साल तर्कशील लहर को दिए, एवं तर्कशीलता लहर को अपने जीवन से अंगीकार कर लिया था। जब कभी मुशिकल समय आया वे पर्वत की तरह अडिग खड़े रहे। आज जब फासीवादी शक्तियां लिखने, बोलने की आजादी पर निधड़क भाव से हमलावर है, धर्म और अंधविश्वास को सत्ता के सहयोग से नागरिकों पर थोपा जा रहा है, वैज्ञानिक चिंतन के फैलाव को संकुचित करने के प्रयास जारी हैं, ऐसे समय में कृष्ण बरगाड़ी को याद करते हुए न चुनौतियों को मात देने के लिए अडिग रहना समय की जरूरत है।

कृष्ण बरगाड़ी स्मृति समारोह : 2019

तर्कशील लहर पंजाब के मरहूम नायक कृष्ण बरगाड़ी के 17वें स्मृति दिवस को समर्पित कृष्ण बरगाड़ी समृति समारोह 17 फरवरी 2019 को आयोजित होगा। इस बार कृष्ण बरगाड़ी स्मृति पुरस्कार तर्कशील सोसायटी हरियाणा के पूर्व प्रधान एवं तर्कशील पथ हिन्दी के सह सम्पादक प्राध्यापक बलवंत सिंह को दिया जाएगा।

प्रथम सैशन : सम्मान समारोह

दूसरा सैशन : देश के प्रमुख वैज्ञानिक, उर्दू के प्रमुख शायर प्रो. गौहर रज़ा मुख्य वक्ता होंगे

चर्चा का विषय : मीडिया एवं साम्प्रदायिकता

समय : प्रात 11 बजे

स्थान : तर्कशील भवन, मुख्य कार्यालय बरनाला (पंजाब)

तर्कशील लहर से जुड़े सभी कार्यकर्तायों, स्नेहियों एवं प्रशंसकों को इस समारोह में शामिल होने का खुला आमंत्रण दिया जाता है।

कृष्ण बरगाड़ी स्मृति समारोह : 2019

14, 15, 16 जनवरी 2019 को माघी मेला मुक्तसर (पंजाब) में 16वां तीन दिवसीय नाट्य उत्सव का आयोजन डेरा भाई मस्तान रोड़ पर होगा। उस में नौजवान कहानीकार गुरमीत कड़ियालवी का सम्मान किया जायेगा। तीन दिन नाटक, जादू शो, गीत-संगीत, पुस्तक-पोस्टर प्रदर्शनी को दौर लगातार चलता रहेगा। वैज्ञानिक चेतना एवं किताबों की संस्कृति विकसित करने के लिए सभी जन को खुल्ला एवं स्नेही आमंत्रण है।

निवेदक : तर्कशील सोसायटी पंजाब, जोन मुक्तसर-फाजिल्का

सम्पर्क : मा. कुलजीत (98719 25566), बूटा सिंह वाकफ (95010 24469)

फरवरी 2019 Reg. No. HARHIN/2014/60580 वर्ष 6 अंक 1

तर्कशील साहित्य वाहन का पांच सालों का सफर

देश के प्रसिद्ध नाटककार एवं चिंतक डा. शम्मशूल इस्लाम के लुधियाना आगमन पर प्रो. जगमोहन सिंह एवं तर्कशील सोसायटी पंजाब राज्यकार्यकारिणी साहित्य वाहन के साथ

If undelivered please return to :

Tarksheel

Tarksheel Bhawan, Tarksheel Chowk,
Sanghera By Pass, BARNALA-148101
Post Box No. 55

Ph. 01679-241466, Cell. 98769 53561
Web : www.tarksheel.org
e-mail : tarkshiloffice@gmail.com

BOOK POST
(Printed Matter)

To ....

....

....

आर. पी. गांधी, प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी, संपादक मकान न. 50, लक्ष्मी नगर, जिला यमुना नगर - 135001 (हरियाणा) द्वारा रमणीक प्रिटरज, नजदीक लक्ष्मी सिनेमा, जिला यमुनानगर - 135001 (हरियाणा) से मुद्रित करके तर्कशील सोसायटी पंजाब व हरियाणा के माध्यम से वितरण हेतु जारी किया।